ॐ

संस्कार-संगीत

पं० गदाधरप्रसाद 'इष्ट'

सन् १६३६ ई०

भारतीय महर्षियों ने मनुष्य के लिये जन्म से लेकर मृत्यु पर्य्यंत कुछ संस्कारों की व्यवस्था की है। उनकी यह व्यवस्था मनुष्य-जीवन को कर्म के विशद-पथ पर आरूढ़ करती है। हमारे जीवन-का मुख्य लक्ष्य और परमउद्देश्य एकमात्र कर्म ही है। जब इसी लक्ष्य और उद्देश्य की प्राप्ति में कर्म मानव-समाज का [illegible] बँटाने में समर्थ होता है, तो कर्म की उत्कृष्टता और उप-[illegible]ता स्वयं सिद्ध हो जाती है।

[illegible]त यह बात मानी जाचुकी है कि संस्कारों द्वारा ही मनुष्य [illegible] होकर समाज का एक उपयोगी अंग हो सकता है, तो फिर उनकी ओर से हमारी उपेक्षा हमें पतन की ओर ही अग्रसर करेगी। आर्य्य जगत् में संस्कारों का कहाँतक ह्रास हो चुका है, वह इसी से प्रकट हो जाता है, कि आज दिन आर्य्य (हिन्दू) कहलानेवाले लोगों में से अधिकांश समस्त संस्कारों के नाम तक नहीं जानते। [illegible]दो-चार संस्कार जो उलटी-सीधी रीति से होते भी हैं, उनकी [illegible]प्रक्रिया और विधि इतनी दोष-पूर्ण होती है कि यदि उन्हें

हम-संस्कार न भी कहें, तो कोई विशेष हानि या आपत्ति नहीं हो सकती।

भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत में संस्कारों के समय गायन आदि की परिपाटी प्राचीन समय से चली आती है। जहाँ बच्चे का जन्म हुआ, महिला-मंडल अपने उपलब्ध बाजों को ले जो कुछ थोड़े बहुत गीत उन्हें याद हैं—गाने लगा। यह गीत न तो संगीत-कला के अनुसार होते हैं और न उस अवसर के विषय से संबंधित। फल यह होता है कि संस्कार का जो प्रभाव संस्कृत मनुष्य पर पड़ना चाहिये था, वैसा नहीं पड़ता। और उस कृत संस्कार की गणना केवल एक विशेष चहल-पहल के अतिरिक्त और किसी कोटि में नहीं की जा सकती।

संस्कारों की शुद्ध विधि आर्य्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वतीजी ने स्वयं अपने कर-कमलों से लेख-बद्ध कर प्रकाशित की है। आज उस आर्ष-संस्कार-विधि का आर्य्य-संसार में कितना आदर और सत्कार है, यह उसके प्रचार से ही विदित है। संस्कारों का विधिवत् संपन्न हो जाना तो महर्षि की अनुकम्पा से सहल हो गया, परंतु उन संस्कारों के उत्सवों में गाये जाने वाले गीतों का सर्वथा अभाव रहा। इस कमी की पूर्ति का उद्योग अद्यावधि किसी आर्य्य पुरुष ने करने का उद्योग तक न किया। यों तो संस्कारों के समय भजनीक आते हैं, नाना प्रकार के भजन भी सुनाते और गाते हैं, स्त्रियाँ भी अवकाश के समय अपना राग अलग अलापती हैं, किंतु मैं दृढ़तापूर्वक क

सकने का साहस करता हूँ कि उन गानों में गीत प्रायः संस्कारों से संबंध रखने वाले नहीं होते। क्या यह कमी हमारे लिये लज्जास्पद नहीं कही जा सकती ?

इस हानिकारक कमी को दूर करने का मैंने तथा मेरे मित्र पंडित गदाधरप्रसादजी वैद्य ने कई साल पूर्व विचार किया था। उस समय से आज पर्यंत जहाँ तक संभव होसका, इस विषय को संपन्न करने का उद्योग किया गया। फ़रवरी सन् १६३५ ई० में 'आर्य्य मित्र' में इस आशय का एक विज्ञापन भी दिया था कि संस्कारों से संबंध रखनेवाले नवीन गीत यदि किसी महाशय के पास हों, या जो स्वयं रचना करने का कष्ट उठा सकते हों, वे कृपा करके ग्रंथमाला में भेज दें; किंतु यह प्रार्थना किसी ने भी स्वीकृत न की। अंत में पंडितजी को ही स्वयं इस गुरुतर कार्य्य को अपने क्रियाशील कंधों पर लेना पड़ा और जहाँतक संभव हुआ, प्रत्येक संस्कार संबंधी गीतों और रागों की रचना आरंभ कर दी। इस उद्योग में कहाँतक सफलता प्राप्त हुई है, इसका निर्णय आर्य्य जगत् ही करेगा। लेखक ने इस "संस्कार-संगीत" नामी पुस्तक में भजन संग्रह न करके स्वयं नवीन भजनों की रचना की है। गीतों और रागों की रचना में अपने स्त्री-समाज की रुचि और अभ्यस्थ गायन-विधि का भी ध्यान रक्खा गया है। जिस प्रकार की ध्वनि और भाषा में आजकल की स्त्रियाँ अपने भावों को प्रकट करती हैं, इस पुस्तक में भी उसी शैली और वैसी ही भाषा का समावेश किया गया है। सबसे

अधिक इस बात की ओर ध्यान दिया गया है कि प्रत्येक भजन तथा पद्य संस्कार से संबंधित और उपदेश-पूर्ण हों। इस पुस्तक में किन-किन विषयों का समावेश किया गया है, वह इसकी अन्यत्र प्रकाशित विस्तृत विषय-सूची ही से प्रकट हो सकता है। आशा है आप महानुभाव संस्कारों के समय इस पुस्तक के गीतों को अपना-कर अपने संस्कारों को अधिक भावपूर्ण बनाने का उद्योग करेंगे।

यहाँ पर मैं अपने प्रकाशक और लेखक महाशयों से कुछ निवेदन करके इस निवेदन को यहीं समाप्त कर दूँगा। वह यह कि कोई महाशय इस पुस्तक से कोई भजन या गीत संग्रह करके प्रकाशित करने का उद्योग न करें। हाँ, यदि यह पुस्तक उन्हें लाभदायक और समाज के लिये हितकर प्रतीत होती हो, तो वे जितनी चाहें उतनी प्रतियाँ आर्य्य आदर्श ग्रंथमाला लखनऊ से मँगा लें।

मेरे मित्र ने इस संस्कार-संगीत पुस्तक प्रकाशित कराने के पूर्व भी आर्य्य समाज के मुख्य ग्रंथ सत्यार्थ-प्रकाश का रामायण के ढंग पर अनुवाद करके आर्य्य संसार में पर्याप्त ख्याति प्राप्त करली है। उस पुस्तक का आदर आर्य्य जगत् ने इतना अच्छा किया कि उसके लगातार चार संस्करण प्रकाशित होकर हाथों-हाथ समाप्त हो गये। विदेशों में भी उस पुस्तक की बहुत-सी प्रतियाँ भेजी गई हैं। यह पुस्तक भी उन्हीं प्रतिष्ठित लेखक की लिखी हुई है। आशा है कि आप महानुभाव वैसाही इसका भी आदर करेंगे।

रामलाल अग्निहोत्री,
अध्यापक कान्यकुब्ज कालेज, लखनऊ।

विषय सूची

—:❀:—

३—सीमन्तोन्नयन-संस्कार

४—जातकर्म-संस्कार

५—नामकरण-संस्कार

६—निष्क्रमण-संस्कार

७—अन्नप्राशन-संस्कार

८—मुंडन-संस्कार

९—कर्ण वेध-संस्कार

१०—उपनयन-संस्कार

११—वेदारम्भ-संस्कार

१२—समावर्तन-संस्कार

१३—विवाह-संस्कार

शिष्टाचार

ज्योनार, मंगल, गारी

(स्त्रियों के गाने में)

गृहस्थाश्रम के कुछ उपदेश

१४—वानप्रस्थ-संस्कार

१५—संन्यास-संस्कार

१६—अन्त्येष्टि-संस्कार

इस संस्कार की विशेष व्यवस्था नहीं लिखी है, पाठकगण संस्कार विधि तथा संस्कार चन्द्रिका में देख लें।

शुद्धि सूचना—पृष्ठ ४४ फुटनोट में 'दुज़्द' के स्थान में 'पुज़्द' और पृष्ठ ६२ हेडिंग में 'विष्टर' के स्थान में 'इष्टर' छप गया है। पाठक ठीक कर लेवें।

❀ ओ३म् ❀

संस्कार-संगीत

ईश्वर प्रार्थना

सोरठा

निराकार अविकार, सोइ अनन्त अज ब्रह्म वर।
सकल जगत् कर्त्तार, सर्व शक्तिमन न्याय कर॥
अन्त न पावत कोइ, विद्या-बुधि प्रभु आपकी।
वेद प्रकट किय सोइ, चलहिं जासु पथ सकल जन॥
विघ्नक कर्म सु कार्य, वेद विरोधी यज्ञ के।
दुष्ट स्वभाव अनार्य, करहु समूल विनाश सो॥
करिये कबहू नाहिं, अपने से हमको पृथक्।
भक्त तुम्हार कहाहिं, कोइ न आवहि दोष ढिग॥
काहू को नहिं कोय, तुम से भिन्न उपासना।
अस सुबुद्धि मम होय, करहिं न किञ्चित कबहु हम॥
तुव आज्ञा अनुकूल, चलि न सकत सब भाँति हम।
छमहु 'इष्ट' की भूल, अधमोद्धारक नाथ तुम॥

'विश्वानिदेव' से 'अग्नेनय' तक संस्कार विधि लिखित-प्रार्थना मंत्रों का भाव ।

(१)

हे शुभ गुण सविता देव जगत् उपकारी ।
सुख दीजै मोकहँ नाथ दुःख दो टारी ।। हे शुभ०
तुम सुख निधान जगदीश जगत् हितकारी ।
सब हरहु हमारे नाथ दुःख अति भारी ।।
हम काम किये प्रभु बनि के निपट अनारी । हे शुभ०
जग जो कल्यान स्वभाव कर्म गुनकारी ।।
दीजै प्रभु मोकँह दान होय सुःख सारी ।
हो तुमही सबविधि सब प्रकार गुनकारी ।। हे शुभ०

हे हिरण्यगर्भ जगदीश जगत् उपजायो ।
धारण करि अपने माँहि सुःख प्रकटायो ।।
करिके प्रभुवेगि प्रकाश देहु तम टारी । हे शुभ०
तुमही सब जग के स्वामी एक कहाये ।।
हो तुमही सबके पूर्व जनन मन भाये ।
देखहु सब जन के दुःख भूमि खं धारी ।। हे शुभ०
हम स्तुति नित प्रति करत सुःख के हेता ।
अब 'इष्ट' ग्रहण करि करिहों योग निकेता ।।
निशि वासर हम सब भक्ति करहिं हितकारी । हे शुभ०

जो आतम औ बल देत सबन हर्षाई ।।

ता प्रभु को सब कोइ भजत प्रेम मन लाई।
है शासन सत्य स्वरूप जगत् विस्तारी ।। हे शुभ०
गहि प्रभु की छाया वेगि अमर पद लेवे।
जो होवे ईश्वर विमुख मृत्यु दुख लेवे ।।
निज जन को देवे ज्ञान 'इष्ट' दुखहारी। हे शुभ०
ऐसे प्रभु की हम भक्ति करहिं मन वानी ।।
वह करता जन पर दया न हों अज्ञानी।
अब तो हे दीनानाथ हमारी बारी ।। हे शुभ०

जो जड़ चेतन जग-स्वामी एक कहाये।
अपनी शक्ती सों नाथ द्विपद उपजाये ।।
रचि सकल चतुष्पद करी न तनिक अवारी। हे शुभ०
ऐसे प्रभु को हम भजत सुःख के काजा ।।
जो है भूमी आकाश मध्य का राजा।
जेहिने सत रज तम वीच जगत् विस्तारी ।। हे शुभ०

जा प्रभु ने पृथिवी सूरज चन्द्र रचाया।
दुख रहित मोक्ष को हमरे हेत बनाया ।।
रचि जन हित सृष्टी वेगि यहाँ सुखकारी। हे शुभ०
ऐसे प्रभु को हम धारि हिये के माहीं ।।
करिहैं तप योग समाधी ध्यान सराहीं।
मिलि ताकहँ भोगैं हम आनन्द सम्हारी ।। हे शुभ०
नहिं तुम बिन कोऊ और जगत् का स्वामी।

हो सर्वेश्वर भगवान् सु अन्तर्यामी ॥
जो शरण तुम्हारी जात होत सुख भारी । हे शुभ०
सोई हैं हमरे बन्धु सुख के दाता ॥
रचि सकल जगत अरु सकल पदारथ ज्ञाता ।
ताते हम सब नित भजैं जगत् हितकारी ॥ हे शुभ०

तुम हो प्रभु ज्ञान-स्वरूप प्रकाशक स्वामी ।
हे सुखदाता जगदीश सबल निष्कामी ॥
शुभ मारग मोहिं बताय देहु सुखकारी । हे शुभ०
अति उत्तम जो हैं कर्म जगत् के माहीं ॥
करिए प्रभु मोपर कृपा मोहिं मिलि जाहीं ।
तजि सदा दुष्ट पथ करहिं भक्ति हितकारी ॥ हे शुभ०

(२)

प्रभु तुम पतित पावन नाथ ॥
जन्म लीन्हो आइ जग में कोउ न आयो साथ ॥ प्रभु०
पितु मातु बन्धू भ्रातृ सारे गये छांड़ि अनाथ ॥ प्रभु०
हम जात डूबे मोह नँद में पकड़ि लीजौ हाथ ॥ प्रभु०
यह काम क्रोधादिक प्रबल रिपु हैं हमारे साथ ॥ प्रभु०
हे "इष्ट" प्रभु रक्षा करहु मम, होहि उज्ज्वल माथ ॥ प्रभु०

(३)

पिता तुम ही नाथ हमारे दुख दुर्गुण मेटनहारे ॥
यह पृथ्वी और नभ तारे सूर्य्य चन्द्र जगत् उजियारे ।
सब तुम्हरेहि एक सहारे तुमहीं सब जग को धारे ॥ पिता०

हम निर्बल निर्धन सारे प्रभु तुम ही हो रखवारे।
पड़ी धर्म नाव मझधारे करो ताको शीघ्र किनारे॥ पिता०
पितु मातु बन्धु सुत दारा है करत न कोउ सहारा।
जब आवे विपत्ति अपारा हम आये शरण तुम्हारे॥ पिता०
हमने बन्धू सब अजमाये हित जानि यहाँ पर आये।
सब स्वारथ रत हो पाये करि स्वारथ घरहिं सिधारे॥ पिता०
अब "इष्ट" विनय सुनि लीजै प्रभु सब कहँ बुद्धी दीजै।
मोंकहँ बलशाली कीजै क्षण क्षण मम दुःख उबारे॥ पिता०

स्वस्तिवाचन के कुछ मंत्रों का भाव

(४)

हे ज्ञानरूप ईश्वर परकाश के करैया।
स्तुति करूँ तुम्हारी प्रभु दुःख के हरैया॥ हे ज्ञान०
धारन किये जगत् को हो पूर्व से प्रभू तुम।
यज्ञादि शिल्प विद्या की विधि तुम्हीं बतैया॥ हे ज्ञान०
ऋतुओं में पूज्य तुम ही रत्नों के देने वाले।
दीजै सुबुद्धि हमको अज्ञान से बचैया॥ हे ज्ञान०
जैसे पिता सदा ही प्रिय पुत्र के लिये ही।
आनन्द मोदकारी सब वस्तु को देवैया॥ हे ज्ञान०
वैसेहि नाथ हमको यक आसरा तुम्हारा।
तुम तो जगत् पिता हो सर्वत्र सुध लेवैया॥ हे ज्ञान०
हमको पढ़ावें विद्या उपदेश जो हैं देते।
सद्गुरु वही हमारे कल्यान के करैया॥ हे ज्ञान०

ऐश्वर्यरूप भगवन सुख दीजिये हमैं नित।
विद्युत बनै न हमको प्रभु नाश की करैया ॥ हे ज्ञान०
हाँ मेघ दें समय पर पानी प्रमोदकारी।
द्यौ लोक और वसुधा बनि जाँयँ सुख देवैया ॥ हे ज्ञान०
है "इष्ट" कर्म जो कुछ कर्तव्य यह हमारा।
करते सदा रहेंगे जन टेक के रखैया ॥ हे ज्ञान०

(५)

जगदीश्वर तुम्हारा सहारा हमैं ॥
बुध जन का दो संग निरन्तर, यज्ञादिक शुभ कर्म धर्मवर।
शुभ उपदेश धरैं उर अन्तर, मिलिहै मोक्ष किनारा हमैं ॥
वैश्वानर अग्नी उपजाई, मनुजन के नित कारज आई।
है सब के बिच माँहि समाई, मिलै यज्ञ के द्वारा हमैं ॥
मेधावी विद्वान जगत् के, उपदेशक आचारी नीके।
पुष्ट होंहि वह अपने जीके, दे उपदेश सुधारा हमैं ॥
रुद्र सरूप रुलावत दुष्टन, "इष्ट" जनन को करते पालन।
लेत स्वाद सब विनही आनन, क्यों फिर आज विसारा हमैं ॥

(६)

हे जगत्पति परमेश प्रभु कल्याण हो मेरे लिये।
भोगी बना धन वायु विद्युत का जो हैं तूने दिये ॥
प्राणादि सारे वायु हमको होवें सुखदाई सदा।
शुभ मार्ग में आजन्म हम सानन्द बिचरैं सर्वदा ॥
जेहि भाँति सूरज चन्द्र यह महि खंड नित विचरन करैं।

सोई नियम सब भाँति सों हमहूँ हृदय के बिच धरैं ॥
जो दुख न देवै काहु को अरु ज्ञान से सम्पन्न हो।
हों "इष्ट" ऐसे बन्धु अब करके कृपा भगवान् दो ॥

याज्ञिक मनस्वी सत्यवादी धर्म भोगी मुक्त हों।
संगति रहे तिनसे हमारी जौन जीवनमुक्त हों ॥
दें मोहिं विद्या वे कि जिससे कीर्ति यश बाढ़ै सदा।
कल्याणकारी जो पदारथ नाथ दीजै सर्वदा ॥

(७)

हे प्रभो सुख शान्ती की हर समय वर्षा करौ।
कल्याण हो जेहि भाँति से सोई विधी उर में धरौ ॥
माता सदृश यह भूमि है सब वस्तु को उपजावती।
पशु पच्छि सारे ही विचरते है जगत को पालती ॥

अरु मेघ दें पानी हमें अपने समय पर नेम से।
सिख दीजिये आदित्य ब्रह्मचारी रहें हम क्षेम से ॥
जब कर्मकारी व्यक्तियों के होहिं द्रष्टा अति भले।
नहिं पाप तनिकौ होय तिनमँह काहु को नाहीं खलें ॥

विद्वान् हो ज्ञानी बनैं अरु मुक्ति साधन उर धरैं।
वे "इष्ट" प्राप्ती हेत सारे नित सुकर्मन को करैं ॥
अरु चलहिं हम सब प्रेम करके देश हित उर में धरैं।
होवैं न काहू के विरोधी नेह सब ही सों करैं ॥

(८)

शरण तुम्हारी में आचुके हैं बढ़ाओ शक्ती हमारे स्वामी।

अन्नादि जेते पदार्थ सारे कल्याणकारी हि हों स्वामी ॥
हे नाथ वायु समान होवे पराक्रमी इस जगत् के भीतर ।
औ यज्ञ कर्मों के अर्थ हमको समृद्धिशाली बनाओ स्वामी ॥
हों दुग्धवाली सदा हि गौएँ निरोग बछड़ा हो साथ उनके ।
न होय व्याधी औ रोग कोई कृपा तुम्हारी से मेरे स्वामी ॥
औ दुष्ट गुणयुक्त अत्याचारी न होय राजा कभी हमारा ।
औ चोर, हिंसक गऊ के पालक कभी न होवें हमारे स्वामी ॥
गऊ की रक्षा सदा ही होवे उपाय ऐसा सभी करें हम ।
औ "इष्ट" होवें सभी हमारे विचार ऐसे बनाओ स्वामी ॥

शान्ती प्रकरण के कुछ मन्त्रों का भाव

(१)

हे प्रभो विद्युत औ अग्नी देवें सुख हमको सदा ।
वस्तु जो हैं ग्रहण करने योग्य दीजै सर्वदा ॥ हे प्रभो०
और होवें शान्तिकारी जल औ विद्युत जगत् में ।
औषधी विद्युत सहित सुखदाई हमको हों सदा ॥ हे प्रभो०
ऐश्वर्य सुख शान्ती बढ़े हम खुश रहें सब काल में ।
युद्ध विद्या में निपुण हों भय न हो हमको कदा ॥ हे प्रभो०
और होवें सत्यवादी हम बनें परमार्थी ।
सत्संग औ उपदेश देनेवाले होवें सुःखदा ॥ हे प्रभो०
अब कर्म हम ऐसा करैं जेहि यश मिलै संसार में ।
होवे न कबहूँ "इष्ट" ऐसा कर्म प्राणिन दुःखदा ॥ हे प्रभो०

स्त्रियों के गाने में

(१०)

प्रभु हमको सदा सुख होय विनती तेरी सो विनती तेरी करूँ ॥
चाँद सुरज सुखदाई सदा हों अन्न से शान्ती होय ॥ विनती तेरी०
यज्ञ करम से शान्ती पावैं, भ्रान्ति जावे खोय ॥ विनती तेरी०
जो स्थावर वस्तु जगत की सुखदाई मोहिं होय ॥ विनती तेरी०
दशहूं दिशायें आनन्द भोगें नदियों में शान्ती होय ॥ विनती तेरी०
"इष्ट" हमारो पूरा करहु प्रभु, होवे हिये विच जोय ॥ विनती तेरी०

स्त्रियों के गाने में

(११)

प्रभु कीजै हमारे ऊपर दया सुख होवै ॥
प्रातकाल की शोभा निराली, कैसी सुन्दर अटल प्रणाली ।
परकाश हित है सूरज सवै ॥ सुख होवै ॥ प्रभु कीजै० ॥
इन्द्र सदा ही वर्षा करत हैं, किर्णों से सुन्दर जलको भरत हैं ।
सागर को वह खारी बनावै ॥ सुख होवे ॥ प्रभु कीजै० ॥
रक्षा करहु दुख होवे न कबहूँ, सपने न भूलैं तुमको कबहूँ ।
बल दीजै "इष्ट" यश गावैं ॥ सुख होवै ॥ प्रभु कीजै० ॥

(१२)

विद्वान् सारे सुःख देनेवाले हों मेरे लिये ।
विद्या औ शिक्षा होय हमको सत्य वाणी के लिये ॥ विद्वान्०
और बुद्धी में हमारी नित्य आवें सद् विचार ।
ज्ञान से सम्पन्न हम हों आत्म रक्षा के लिये ॥ विद्वान्०

भूमि पर जेते पदारथ हैं उपजते नेम से।
सुःखदाई हों‌य हमको धर्म उन्नति के लिये ॥ विद्वान्०
जन्तु जल हों सुःखदाई हों सवारी अश्व की।
व्यवहार होवै सत्य का संसार में मेरे लिये ॥ विद्वान्०
गौऐं सदा सुख देंय हमको दूध घी अरु अन्न से।
माता पितादिक सकल जन हों सुःख देने के लिये ॥ विद्वान्०
शुभ कर्म में ही नित हमारा मन सदा लगता रहे।
हम लगैं कटिबद्ध होकर "इष्ट" प्राप्ती के लिये ॥ विद्वान्०

(१३)

हमारो सुधि लीजै दीनानाथ।
निशि-वासर अरु सोवत-जागत, तुमही हो मम साथ ॥ हमारी०
तुमहिं त्यागि हम कासों कहिबो, निज हृदय की बात ॥ हमारी०
मम दुख-सुख सब जानत हो प्रभु, तुम ही हो पितु-मात ॥ हमारी०
पिता सदा सुत को रखवारो, यह जग बीच लखात ॥ हमारी०
टेरत-टेरत बार भई है "इष्ट" हृदय अकुलात ॥ हमारी०
जो जन की सुधि लेहु न तौ कोउ, कहिहै दीनानाथ ॥ हमारी०

(१४)

अनन्त स्वरूप और अजन्मा अनादी।
तू है न्याय कारी प्रभू सत्य वादी ॥
तुम्हारी हि यक आस भक्तों को केवल।
भरोसे तुम्हारे ही भेरी बजादी ॥

किसी की नहीं शक्ति सन्मुख जो आवे।
पताका तेरे नाम की जब गड़ा दी॥
दिया है क़िला तूने मज़बूत सुन्दर।
निराली छटा यह जगत को दिखादी॥
जो आसन जमा बैठता इस क़िले में।
औ तेरे हि मिलने कि जब लौ लगादी॥
हैं जितने ही फाटक व खिड़की क़िलाके।
नहीं कोई आवे मनादी करादी॥
अकेले में अपनी जो इच्छा जताई।
दया कर उसे तूने पूरी करादी॥
फ़क़त तेरे दर्शन के खातिर समाधी।
लगा कर के बैठा जो मुक्ती बतादी॥
तुम्ही एक आनन्द भंडार स्वामी।
मिलै "इष्ट" फल अपनी बिनती जतादी॥

संस्कार-गणना

(१५)

दोहा—संस्कार बिन जगत् में, बनत नहीं कोउ काम।
तातें सब मिल के करहु, संस्कार सुखधाम॥
संस्कार के किये से, बुधि-बल बढ़त महान्।
रोग नशत नर के सबै, अरु पावें बहु मान॥
संस्कार उत्तम भये, करत कर्म सुखदान।
यश कीरति जग में लहैं, सभा मध्य सनमान॥

करौ संस्कार सुखदाई यह वैदिक रीति सुहाई ॥

पहिले 'गर्भाधान' करीजे बहुरि 'पुंसवन' में चित दीजै ।
पुनि तीसर 'सीमन्तहिं' करिये, तब गर्भदोष नशि जाई ॥ करौ०
चौथे 'जाति-कर्म' चित धरिये, बालन हृदय शूरता भरिये ।
पंचम 'नाम-करन' को करिये, पुनि 'अन्न-प्राश' चितलाई ॥ करौ०
सप्तम करहु 'निष्क्रमण' नीके, बाल निकारि हरहु भय जीके ।
अष्टम 'चौलकर्म' को करिये, जो अति परम सुहाई ॥ करौ०
'करन-बेध' को नवम विचारहु, दशम 'उपनयन' को चितधारहु ।
करहु सो 'वेदारम्भ' एकादश, जहँ पढ़हु बेद मन लाई ॥ करौ०
द्वादश 'समावर्त' है भाई, और त्रयोदश 'व्याह' लखाई ।
'वानप्रस्थ' चतुर्दश जानहु, तब तो बनी बनि जाई ॥ करौ०
अरु 'संन्यास' पंचदश मानहु, षोड़स 'अंतेष्टी' पहिचानहु ।
इन कहँ "इष्ट" कर्म परिमानहु, करहु सो प्रेम दृढ़ाई ॥ करौ०

॥ ओ३म् ॥

१—गर्भाधान-संस्कार

ऋतुकाल का समय

दोहा—दिवस तीसवें कष्ट बिन, मासिक-धर्म जो होय।
लाल रक्त निर्गन्धयुत, रज त्यागत तिय जोय॥
रहत गर्भ ताके सदा, रोग-रहित वरणीय।
ठीक न मासिक-धर्म जेहि, सो रोगिनि है तीय॥

स्त्रियों के गाने में

(१६)

ताते सम्हारो ऋतुकाल औ जाओ बलवान लला।
चारि दिवस की रीति सम्हारो सीखो काम-कला॥ ताते सम्हारो०
तुम, बिन नियम उपजाये बहु लल्ली-लला।
वीर पुरुष यक जाओ जो होवे सारे देश भला॥ ताते सम्हारो०
अंजनि जायो यक वीर बिलोकौ हनुमान लला।
गयो अकेलो धरि धीर औ आयो सारी लंक जला॥ ताते सम्हारो०
तैसे ही जायो कुन्ती पूत जो सीख्यो बहु युद्ध कला।
लैके धनुष अर्जुन वीर अकेलो पाताल चला॥ ताते सम्हारो०
जाइ के जीत्यो सारा देश उलोपी संग ब्याहे लला।
एसोहि उपजावो यक वीर जो होवे जग 'इष्ट' भला॥ ताते सम्हारो०

स्त्रियों के गाने में

(१७)

सैंया से करिके प्रीति स्वकुल उजियारी बनो ॥

सासु-ससुर की सेवा करना, ननदों से रखना रीति ॥ स्वकुल उजि०
करि शृङ्गार पहिनि आभूषन, करना पती संग प्रीति ॥ स्वकुल उजि०
नारि पुरुष दोउ यक चित हुइहैं, जानहिं रति की नीति ॥ स्वकुल उजि०
दोहुन विचार के समसुत उपजैं, हुइहै जगविच कीर्ति ॥ स्वकुल उजि०
वस्त्र स्वदेशी पहिनो पिन्हावो, जासों होवे जीति ॥ स्वकुल उजि०
कामकाज नहिं कीजै आलस, करिऔ न कछु अनरीति ॥ स्वकुल उजि०
अपने सुतसम दुसरेन जानौ, मनिऔ बड़ेन की नीति ॥ स्वकुल उजि०
"इष्ट" हमारो धर्म है वैदिक, ताकी मनिहैं रीति ॥ स्वकुल उजि०

स्त्रियों के गाने में सोहागराति

(१८)

राति सोहाग की आई हो, देखौ राति सोहाग की आई हो।
चारिदिवस एकान्त में रहिके, पुनि स्नान सुहाई हो ॥
सूरज दर्शन करिके बहिनो, निज पति नेह लगाई हो।
वेद मंत्र पढ़ि होम करहु सब, यह औधान[1] सुहाई हो ॥
पाछिल राति हृदय आनन्द करि, सीध अंग अधिकाई हो।
जो इच्छा हो पुत्र जनन की, तौ तिथि लेहु गनाई हो ॥
रज के देखत राति गिनहु तुम, षोड़ष राति बताई हो।
इन रातिन माँ गर्भ रहति है, वैदिक रीति लखाई हो ॥

१—गर्भाधान।

इन महँ जो दिन युगुमै कहावत, होहिं पुत्र बलदाई हो।
अयुगमै¹ मैं जग कन्या जन्मै, जो है परम सुहाई हो॥
वीरज अधिक होय जेहि पति के, उपजै सुत तेहि आई हो।
रज के अधिक होन के कारन, कन्या जन्मत आई हो॥
रज वीरज दौ जब सम हुइहैं, पूत नपुंसक जाई हो।
सोलह बरस को नारि सयानी, वर चौबीस लखाई हो॥
याते न्यूनै³ मैं गर्भ जो धारै, ठहरै कोखि न भाई हो।
जो कहुँ पुत्र जन्म हुइ जाई, जियन सँदेह लखाई हो॥
जीवन पुत्र होय जो कतहूँ, दुर्बल रोगि सदाई हो।
राति सोहाग विधी को जानहु, जो है "इष्ट" बताई हो॥ देखो०

स्त्रियों के गाने में

(१६)

हमारी विनती सुनौ धरि काना, जासों होवै बली सन्ताना। हमारी०
रज के देखत त्याग करहु तुम, छोड़ों तेल लगाना॥ हमारी०
चिन्ता भय को त्यागन कीजै, दिन में सोय न जाना। हमारी०
तिन दिवसन में नख-नहिं काटो, हलका भोजन पाना॥ हमारी०
याते उत्पति रोग बहुत हों, वैद्यक माँहि बखाना। हमारी०
इन दिवसन में दूध भात को, एकबार निशि खाना॥ हमारी०
माटी बासन में तुम खावो, रहो एकांत अजाना। हमारी०

१—जोड़ा जैसे ६, ८, १०, १२, १४, १६, उत्तरोत्तर श्रेष्ठ।
२—विषम फुटकर जैसे ५, ७, ९, ११, १३, १५।
३—कम (थोड़ी अवस्था में)।

गर्भ रहे पर मन में राखौ, पुत्र होय बलवाना ॥ हमारी०
चावल मूँग उरद अरु गूलर, मधु घृत मिश्री पाना ॥ हमारी०
मासिकधर्म में कबहूँ न न्हाओ, नाहीं तेल लगाना ॥ हमारी०
ना तुम हँसना ना तुम रोना, ना नाखून कटाना ॥ हमारी०
गर्भ शूल की औषधि खावो, नहिं गुण पानी पढ़ाना ॥ हमारी०
'इष्ट' पुत्र जाओ सब कोई, बली होय जग जाना ॥ हमारी०

स्त्रियों के गाने में

(२०)

नीकी नीकी बताईं हमैं बतियाँ ॥

स्वामी दयानन्द आये जगत में, द उपदेश बताय दईं बतियाँ । नीकी०
संस्कार सब भूलि गये थे, फिरि के सिखाईं मोहिं रितियाँ ॥ नीकी०
आर्य्य समाज थापना कर दई, जाइके बैठैं जहाँ सब जतियाँ ॥ नीकी०
मूर्ती पूजा श्राद्ध छोड़ाया, पंडा पुजारिन धड़कै छतियाँ ॥ नीकी०
"इष्ट" देखि सब सोचन लागे, होय अनिष्ट करैं बहु घतियाँ ॥ नीकी०

(२१)

बहिनों जो सन्तती तुम अपनी गुणज्ञ चाहो ।
ऋतुकाल को सुधारो वैदिक प्रथा चलाओ ॥ बहिनो जो०
आहार पर है निर्भर सन्तान श्रेष्ठ होना ।
व्यवहार भी हो अच्छा सद्भाव को बनाओ ॥ बहिनो जो०
बल-बुद्धि जिससे बाढ़ै सोई यतन करो तुम ।
अर्जुन सरीखे योधा उत्पन्न कर दिखाओ ॥ बहिनो जो०

उत्पन्न कर लिये जो बालक बहुत से तुमने।
पर देश जाति सेवा हित है कोई न आयो ॥ बहिनो जो०
माता पराये बस में पड़ दुःख भोगती है।
तुम रात दिन निराले फ़ैशन बहुत बनाओ ॥ बहिनो जो०
जब तक न ध्यान दोगी बिगड़ी प्रथा के ऊपर।
तब तक सुधार होवे कैसे हमें बताओ ॥ बहिनो जो०
लै "इष्ट" का सहारा सब बल बिचार करके।
कल्यान हो जगत् का बलबीर पुत्र जाओ ॥ बहिनो जो०

(२२)

दोहा—स्वाभाविक ऋतुकाल की, षोड़श रात्रि बखान।
प्रथम चारि निन्दित महा, जानहिं चतुर सुजान ॥
रज के देखत ही त्रिया, तजै सकल गृह काज।
बास करै सबसे अलग, एक बस्त्र को साज ॥
इन दिवसन में नारि के, बने पुत्र को रूप।
जिमि फोटू को कैमरा, खचै लखे अनुरूप ॥

ऋतुकाल चार दिन के यह नेम जान लेना।
जो कुछ बचन कहे हैं सुश्रुत प्रमान लेना ॥ ऋतुकाल० ॥
इन चार दिन के अन्दर स्नान जो करोगी।
होवे प्रदर तुम्हारे हिय बीच धार लेना ॥ ऋतुकाल० ॥
अरु तेल को लगाया कुष्ठी जनोगी बालक।
रोने से ढेढ़ी आँखें हो जायँ जान लेना ॥ ऋतुकाल० ॥

दिन में जो सोगई तुम हो पुत्र सोनेवाला।
नयनों में सुर्मा डाला सुत चक्षु हीन लेना ॥ ऋतुकाल० ॥
वहु बात जो करोगी बकवादी लाल होगा।
कंघी करी जो तुमने सुत गंजा जान लेना ॥ ऋतुकाल० ॥
यहि भाँति जो वताया त्यागन करो सदा तुम।
यदि "इष्ट" योग्य संतति जो चाहती हो लेना ॥ ऋतुकाल० ॥

(२३)

नहिं गर्भ होय हितकारी, इन नारिन संग करौ ना।
भोजन अधिक किया हो जिसने, भूखी प्यासी रही मन अपने।
अरु भयभीत हो नारी। नहिं गर्भ होय हितकारी ॥ इन नारिन०
जो न चहै मैथुन को करना, चहै दूसरे जन को वरना।
हो शोक माहिं जो नारी। नहिं गर्भ होय हितकारी ॥ इन नारिन०
अधिक क्रोध में तेहि क्षण होवे, वृद्धावस्था वारी होवे।
हो अति छोटी सुकुमारी। नहिं गर्भ होय हितकारी ॥ इन नारिन०
दीर्घ रोगिनी विकार वाली, नियमरहित रति चाहनवाली।
तजहु सकल यह नारी। नहिं गर्भ होय हितकारी ॥ इन नारिन०
ऐसी अवस्था गर्भ रहेना, रहे तो उत्तम पूत बनेना।
हो दुर्गुणि व्यभिचारी। नहिं गर्भ होय हितकारी ॥ इन नारिन०
"इष्ट" आपनो हित उर धारहु, तो सुश्रुत की बात बिचारहु।
करहु न काम अनारी। नहिं गर्भ होय हितकारी ॥ इन नारिन०

ओ३म्

२—पुन्सवन संस्कार

यह एक आवश्यक संस्कार है, इसी को चौक या चौमासा कहते हैं। गर्भवती की गोद भरी जाती है और गीत वाद्यादि होते हैं। स्वामी दयानन्दजी ने संस्कार विधि में बड़े ही सरलता से इस संस्कार की विधि लिखी है, जो प्रत्येक कर सकता है। संस्कारों को अवश्य करना चाहिए। अब तो माताएँ भी पढ़ी लिखी होती हैं दोनों स्त्री-पुरुष मिलकर संस्कार करलें अथवा किसी पंडित को बुला लें और संस्कार विधि के अनुसार संस्कार करालें। क्या ही अच्छे मंत्र हैं, पहिले सामान्य प्रकरण की समस्त विधि होने के पश्चात् २ विशेष आज्याहुती हैं जिनका भाव हम पाठकों के सामने गाने में उपस्थित करते हैं जिससे मंत्रों का महत्व कितना है उसका दिग्दर्शन हो जायगा।

स्त्रियों के गाने में

(२४)

हे देवी तेरो गर्भ हो वीर्य्यवान, सो देवी तेरो।
जैसे वाण रहत तरकश बिच, वैसेहि गर्भाधान। सो देवी०
अच्छे प्रकार गर्भ यह ठहरे, दस महिना परिमान॥ सो देवी०
अच्छो भाँति तेरो बालक उपजे, होवे चतुर सुजान। सो देवी०
जिमि देवन बिच दिव्य गुण अग्नी, पूजिय ईश प्रमान॥ सो देवी०

तिमि ईश्वर फल देत सबन को, देहु नारि अनजान। सो देवी०
यह नारी की सन्तति को प्रभु, दीजे सुःख महान॥ सो देवी०
मरण आदि बन्धन जो जग में, वेगि छोड़ावहु जान। सो देवी०
राजा श्रेष्ठ देश को जो कोउ, हो अनुकूल महान्॥ सो देवी०
पुत्रन हित जेहि नारि न रोवें, "इष्ट" विनय सुनु कान। सो देवी०
ताते यह प्रभु आश हमारी, दीजे शुभ वरदान॥ सो देवी०

एकान्त में पति पत्नी के हृदय पर हाथ रखकर जो मंत्र बोलता है उसका भाव इस प्रकार है:—

(२५)

हे प्रिये! शुभ केशवाली गर्भ जो तेरे अहै।
हो हृदय के बीच सुस्थित सन्तती सुख को लहै॥
तेहि जाननेवाले हमीं सब भाँति अपने को गनैं।
है हमारा "इष्ट" प्रभु हम पुत्र दुख में ना सनैं॥

पुनः पति पेट पर हाथ रखकर २ मंत्रों को बोलकर ईश्वर-स्तुति करे, उनका भावार्थ इस प्रकार है:—

(२६)

स्वप्रकाश सरूप भगवन् सूर्य्य शशि उपजाइकै।
करहु धारण सकल विधि से पूर्ण जगत् बनाइकै॥
इस जगत की उत्पत्ति में प्रभु आपही पति एक हो।
सुख हेत बिनती करहिं निशदिन यह हमरी टेक हो॥

यह प्रकृति और पदार्थ जेते प्रथम कारण मय किये।
हे सूक्ष्मदर्शी नाथ उनको विकृत रूप बना दिये॥
अरु वारि पृथ्वी सूर्य आदिक जगत् में निर्मित किये।
थे गर्भ बिच धारन किये निज शक्ति सों उपजा दिये॥

जग मनुज औ देवत्व केरे भाव दर्शाये प्रभो।
अरु दिव्य गुण धारण किये तुम न्यायकारी हो विभो॥
सब वस्तु में व्यापक प्रभो रक्षक तुम्हीं सब ठौर हो।
हिय "इष्ट" धारि विनय करूँ निज भक्त को आनन्द दो॥

पश्चात् गर्भाशय (पेट) पर हाथ धरकर पति मंत्र को बोलता है उसका भाव इस प्रकार है

(२७)

गर्भस्थ बालक नित्य तेरी भावना सुन्दर बने।
हो उच्च पद के योग्य तू अरु वेदवक्ता जग गने॥
खग वृन्द सम तुम होहु सुन्दर पंख युत बलवान भी।
शान्ति हो मस्तिष्क में औ शक्ति भी हो ज्ञान भी॥

ज्ञान कर्म उपासना तब संग तीनों को भयो।
तुम ईश को जानहु सदा गुरु मंत्र में है जो कह्यो॥
हों ज्ञान साधन चक्षु वाणी साम गान प्रवीन हो।
नित सत्य को धारन करहु तुम वेद पाठासीन हो॥

अरु वेद ही सब अंग के अवयव सदा तेरे रहें।
हो यज्ञ में श्रद्धा तुम्हारी तुमहि याज्ञिक सब कहें॥

निज ज्ञान सों तुम मोक्ष पावहु धर्म के पथ पर चलो।
हो "इष्ट" तुम्हरो वेद पथ कबहूँ न निज प्रण से टलो॥

गर्भरक्षा के लिये उपदेश

(२८)

यह सुनिये भारत नारी, विनती यक आज हमारी॥
खान पान को नेम सम्हारो, विषय वासना मत चित धारो।
अरु क्रोध को देहु बिसारी, बनि जाऔ तुम ब्रह्मचारी॥ यह०
अधिक शयन अरु अधिक बोलना, कड़आ खट्टा तीखा खाना।
और न खावहु खारी, बनि जावो सूक्ष्माहारी॥ यह०
रेचक हड़ आदिक ना खावो, लोभ क्रोध को मन ना लावो।
तजहु दोष दुखकारी, अरु त्यागहु संग अनारी॥ यह०
ब्रह्मी गिलोय सोंठ को लावो, साथ दूध के ताको खावो।
मात्रा सम सुखकारी, मग चलिये नयन उघारी॥ यह०
अधिक न चढ़ना और उतरना, मल वेगों को नाहिं रोकना।
करहु न श्रम कोइ भारी, निज राखहु गर्भ सम्हारी॥ यह०
गर्म चीज़ को तुम मति खाओ और न कबहूँ बोझ उठाओ।
करहु न ऊँट सवारी, जेहि हिले न नाभि तुम्हारी॥ यह०
और भयंकर शब्द सुनहु ना, गर्भ नाश औषधि खावो ना।
धरहु हिये व्रत भारो, बनि जावो सकल सुनारी॥ यह०
पुरुष संग सब विधि तजि दीजै, गर्भ रहें तक कबहुँ न कीजै।
होय गर्भ बलकारी, जग उपजै सुत सदाचारी॥ यह०

जौलौं दूध पियत है बालक, तब तक संग पुत्र को घालक।
तजहु भोग दुखकारी, हो पुत्र "इष्ट" हितकारी॥ यह०

(२६)

जो चाहती हो संतान अच्छी तो गर्भ अपने को लो सम्हारी।
बनैगा वैसे स्वभाव काही कि जैसी आदत बनी तुम्हारी॥
अधिक लड़ाई करी जो तुमने तो रोग मिर्गी अवश्य होगा।
जो नंगी सोईं औ व्यर्थ घूमी तो पागल सन्तति बनेगी प्यारी॥
अगर किया तुमने गर्भ में संग तो कामी निर्लज्ज पूत होगा।
किया सदा शोक औ डरीं तुम जो बुद्धि अपनी को दी बिसारी॥
अगर किया तुमने क्रोध ज्यादा तो होगा चुगलो चबाव वाला।
बनैगा क्रोधी अधिक वह बालक रहेगा हरदम बना दुखारी॥
पिऔगी मदिरा जो तुम गरभ में तो चित्तव्याकुल जनौगी बालक।
सदाहि तृष्णा बनी रहेगी रहेगा कबहूँ न वह सुखारी॥
जो माँस आदिक अभक्ष खाया तो मेह रोगी ही पूत होगा।
औ पथरी आदिक भी रोग होंगे तमोगुनी से बचो सम्हारी॥
औ खाया मीठा जो तुमने ज्यादा तो गूँगा स्थूल अंग वाला।
जनौगी बालक जगत् में ऐसा करैगा सेवा न वह तुम्हारी॥
अधिक जो खाया है खट्टा तुमने तो नेत्र रोगी अवश्य होगा।
हो रक्त पित्त औ त्वचाका रोगी कहा है ऋषियों[1] ने यह विचारी॥
इसी से ऋषियों के वाक्य सुन्दर बना के गाने तुम्हें सुनाये।
सदैव आनन्द "इष्ट" होगा रहेगा परिवार सब सुखारी॥

१—चरक संहिता अध्याय ८ के सूत्र २६ से पुंसवन का प्रकरण है और ४६ तक विशेष रूप से व्याख्या है—

गर्भावस्था में ६ मास दूध पीने की विधि

(३०)

पहिले महिना बिन औषधि डारि यथा रुचि दूध पिये वह नारी।
दुसरे मँह औषधि डारि भले विधि जौन मधूगँण¹ हैं हितकारी॥
तिसरे मँह दूध पिये घृत डारि मिलाय मधू² जो महा सुखकारी।
लखि मास चतुर्थहि मक्खन डारि पिये सोइ दूध महा बलकारी॥

पँचयें मँह केवल घी को मिलाइ जो दूध पिये सोइ नारि सयानी।
छठयें में मधूगण औषधि डारि पकाइ के दूध पिये सुखदानी॥

१—मधुगण औषधि चरक संहिता विमान स्थान अध्याय ८ सूत्र १६० के अनुसार संस्कार चंद्रिका, पृष्ठ २७२ में लिखी है, देखलेना और छुहारा, किशमिश, मुलहटी, सौंफ़ और शतावर प्रत्येक तीन २ माशे आध सेर दूध में औटाकर पाँच तोला कूज़े की मिश्री डालकर पीना अच्छा है (यह प्रयोग अच्छा प्रतीत होता है) यह भी संस्कार-चंद्रिका में एक मित्र की अनुमति से लेखक ने लिखा है और सातवें मास में गर्भिणी के वात पित्त कफ़ हृदय में दाह उत्पन्न करके कभी-कभी खाज को कर देते हैं, इसी अवस्था में त्वचा कटने लगती है तो उस समय बट वृक्ष के कोपल जटा का क्वाथ और मधूगण युक्त सिद्ध किया हुआ मक्खन समय-समय पर खिलावे। चन्दन और कमल को पीसकर मालिश करे अथवा खश, धाय का फूल, सरसों, मुलहटी का काढ़ा कर तिल्ली के तेल में पकाकर तेल बनाले उसको लगाया करे और लाल मिर्च का सर्वथा त्यागन करे। लाल मिर्च के सेवन से स्त्रियों को विशेषतया अर्श (बवासीर) हो जाता है—

२—मधु (शहद) से घृत आधा हो।

सतयें में मिलो घृत पान करै कहैं "इष्ट" यहै मन में हित जानी।
अठयें माँ यवागू[1] पिये घृत डारि नवें अनुवासन[2] कीजिये जानी ॥

(३१)

जो चाहती हो बली हो बालक तो गर्भ रक्षा पै ध्यान लाओ
बताया वेदों में पुंसवन है ये संस्कार अपने घर कराओ ॥
मँगा सुगन्धित व पुष्ट वस्तू हवन कराओ बुला के पंडित।
हो वायु शुद्धी व गर्भ पुष्टी बढ़ावे पौरुष अनन्द पाओ ॥

१—यवागू की विधि जो आठवें मास में है वह इस प्रकार से है कि जौ को भिगोकर कूटकर भूसी निकाल दलिया बना कर सेवन करावे।

२—अनुवासन जो नवें मास का विधान इस प्रकार है कि मधुगण आदि से सिद्ध किया हुआ तेल का फीहा योनि में रखे, इसलिये कि गर्भाशय चिकना रहे। बच्चा जनने में अधिक कष्ट न हो। वहुतेरी स्त्रियाँ इस कष्ट में मर जाती हैं या बच्चे से हाथ धो बैठती हैं—

३—सुगन्धित साभिग्री—इस प्रकार बना लेना चाहिये। बाज़ार से कुटी-पिसी लेने में कीड़े पड़ी हुई मिलती है।

बुरादा चन्दन सफ़ेद ऽ=, अगर ऽ—, तगर ऽ—, सुगन्ध बाला ऽ=, बालछड़ ऽ।, कपूर कचरी ऽ—, नागरमोथा ऽ।, गूगल ऽ।, गरीगोला ऽ।, छोहारा ऽ।, किसमिस ऽ=, मखाना ऽ=, बादाम ऽ—, जायफल ऽ—, जौ ऽ—, चावल ऽ=, तिल ऽ≡; शकर ऽ॥, घी ऽ।, "केवल सामिग्री में मिलाने के लिये।" उपरोक्त सूखी वस्तुओं को कूटकर और मेवा बारीक काटकर सब एक में मिश्रित कर हवन करे।

यदि कुछ न मिल सके तो पूड़ियों को मीस कर घी, शकर मिला कर हवन करने के लिये हवि बना लेवे।

जो देश में है प्रथा भयानक कि रोग में भी न देवें औषध।
यह मूर्खता है निदान करके अवश्य हल्की दवा खिलाओ॥
मरोड़े आना व आँव पड़ना ये गर्भ को होय हानिकारक।
जो गर्भिणी के न दस्त आवें तो दुग्ध संग औषधी खिलाओ॥
न बाँधो धोती कसी तनिक भी अधिक परिश्रम करो न हरगिज।
न आलसी ह्वै फ़िकर करो तुम सुपुस्तकों में ही मन लगाओ॥
जो जी मिचलता हो दर्द छाती इलाज इसका सदा कराओ।
जो वीर्य वर्धक व शक्तिदायक हों "इष्ट" वेही दवा खिलाओ॥

गर्भ में पुत्र पुत्री की पहिचान स्त्रियों के गाने में

(३२)

हुइ है अवशि तुम्हारे गरभ बिच बालक।
दहिनी कोखि विच पिंडा गोल हो दाहिन अंग निहारे॥ गरभ बिच०
पहिले दाहिन छाती में ही निकसे दूध तुम्हारे॥ गरभ बिच०
दहिनी आँखी बड़ी देखैं हैं रुचि सों केस सम्हारे॥ गरभ बिच०
बाईं ओर में लम्बा पिंडा हो ताके सुता विचारे॥ गरभ बिच०
बाम अंग में प्रीती अधिक हो बायें से दूध निकारे॥ गरभ बिच०
ईश कृपा सुन्दर हो बालक कबहूँ न केहु संग हारे॥ गरभ बिच०
बुद्धिवान् विद्यायुत होवे चलिहै "इष्ट" निहारे॥ गरभ बिच०

ओ३म्

३—सीमन्तोन्नयन संस्कार

यह संस्कार वास्तव में बड़ा ही उपयोगी है। यह छठे या आठवें मास में होता है। इसी को सतमासा भी कहते हैं। इस मास से बच्चे का मस्तिष्क बनता है। कोई भी ऐसा कार्य न करे जिससे गर्भस्थ बच्चे को कष्ट हो, क्योंकि शिर में पाँच संधियाँ हैं उन्हीं को सीमन्त कहते हैं, उन्हीं के उन्नति के साधन इस संस्कार से प्रारम्भ होते हैं।

पहिले सामान्य प्रकरण की विधि करके, चावल, मूँग और तिल तीनों समान भाग लेकर बिना नमक की खिचड़ी पकाई जाती है और उसमें विशेष घी मिलाया जाता है। और उसकी सात आहुति दी जाती हैं। उन मन्त्रों का भाव इस प्रकार है।

सन्तानवाली हे वधू उस ईश का चिन्तन करो।
जाकी कृपा सों मिलहिं औषधि तेहि निरन्तर उर धरो॥
रसयुक्त औषधि "इष्ट" जीवन शक्तिदात्री नित करे।
वह शक्ति दाता है विधाता जगत् को धारन करे॥

धारण करे सब जगत को अरु प्राणि धन का ईश है।
सब देखता व्यापार बिन व्यापक सोई जगदीश है॥
ताते सकल जन नित्त प्रति ही ईश के गुण गाइकै।
अरु प्रीति हेत हवन करौ शाकल्य घृत को लाइकै॥

गर्भवती भार्य्या के प्रति पती का वाक्य

(३४)

हे भामिनी सौभाग्यशीला बात यक मेरी सुनो।
हम उचित कार्य्यों में बोलावें जो कहैं उसको गुनो॥
है मुख्य सुत को जनन तुम्हरो कार्य्य एक प्रसिद्ध है।
सो ताहि निन्दा रहित करिये "इष्ट" तुम्हरो सिद्ध है॥

उपजाइये यक बीर बालक जेहि प्रशंसा जग करै।
बहु बुद्धिवारो होय जग में देश की बिपदा हरै॥
हे शोभने सद्गुण सुशीला बुद्धि उत्तम है तेरी।
संचय करहु धन को सदा हो यज्ञ में साधक मेरी॥

(३५)

प्रभो गर्भ में पुत्र के शक्ति दीजै।
कि हो बुद्धि सात्विक कृपा ऐसी कीजै॥
दो माता को शान्ती बनै धर्म बालक।
औ दस मास बीते जनै वीर बालक॥

है धारण किये गर्भ को जौन नारी।
करै चाह सुत की रहै नित सुखारी॥
धरे जैसे भूमी सकल वस्तु उर में।
दे प्रकटाय पाकर समय सोई ऋतु में॥

उसी भाँति दस मास बीते समय पर।
जनै "इष्ट" बालक महावीर सुन्दर॥

जो होवे महा ज्ञानी विद्वान बालक।
चलै वेद मारग बनै कुल सुधारक॥

स्त्रियों के गाने में

खिचड़ी की आहुत देकर स्त्री अपने मुख को खिचड़ी के घी में देखती है और पुरुष जूड़ा बाँधता है यह सब एकान्त में होता है।

(३६)

खिचड़ी को होम रचायो गरभ नीको पायो।
बितायो महिना सात अरी॥ खिचड़ी०
दीन्ही आहुति सात पती की मानी बात।
बहु प्रेम लखात अरी॥ खिचड़ी०
खिचड़ी के घी माँ देखो गात सो मुखड़ा लखात।
त हिय माँ सिहात अरी॥ खिचड़ी०
पती ने काढ़ी माँग बढ़ायो सोहाग।
बाँध्यो जूड़ा हाथ अरी॥ खिचड़ी०
आवै समय नीको सुख होवे अति जीको।
वेदी पै बैठे दोनो साथ अरी॥ खिचड़ी०
"इष्ट" अपनो विचारि समय अनुहारि।
करहु शुभ बात अरी॥ खिचड़ी०

स्त्रियों के गाने में

(३७)

दुइ हिय वाली भई अब जच्चा सो मन को विचार करौ॥

जो मन इच्छित वस्तु न खैहौ हुइहै कुबड़ा लाल।
लँगड़ा अन्धा मूरख जनिहौ बौना बालक हाल॥
हमारी एक बात सुनौ॥ दुइ हिय वाली भई०

अच्छे-अच्छे भूषन वसन धरहु तन उत्सुक बालक होय।
जैसेहि चित्र लखहु निशिवासर तैसोहि बालक होय॥
हमारी एक बात सुनौ॥ दुइ हिय वाली भई०

सर्प आदि देखन जिय चाहत हिंसक जन्महु पूत।
माँस खान की इच्छा जो रखिहौ हुइहै धूर्त कपूत॥
हमारी एक बात सुनौ॥ दुइ हिय वाली भई०

पतिसंग सोवन इच्छा करहु ना हुइहै गरभ केरि हानि।
अरु व्यभिचारी जनौगो "इष्ट" बालक रोगी अनारी निदान॥
हमारी एक बात सुनौ॥ दुइ हिय वाली भई०

स्त्रियों के गाने में

(३८)

सखि तेरे गरभ बिच लाल बुद्धी, वारो सुबुद्धी वारो बने॥
ताके हित हो अच्छी भावना, मन के बीच ठने॥ सुबुद्धी०
ज्ञान बढ़ै बल आयू बाढ़ै, होवैं भ्रात घने॥ सुबुद्धी०
अच्छे प्रकार रहो निशिवासर, जौ लगि पुत्र जने॥ सुबुद्धी०
"इष्ट" प्रीति सो रक्षा गरभ की, कीजै तो लाल बने॥ सुबुद्धी०
ईश कृपा कब बालक जन्मे, रहिऔ दिवस गने॥ सुबुद्धी०

स्त्रियों के गानें में

(३६)

स्वामी दयानँद आई विधी बतराई भयो देश भलाई रे। रनियाँ
भूले परे थे सब स्वामी आये थे जब सीधी सी राह बाताईरे। र०
ईश्वर को भूली बैठीं देविन पर फिरैं ऐठीं साथी न कोई लखाईरे। र०
जीते भुलाई सेवा मरे खिलावें सेवा नेउति के बामन जेंवाईरे। र०
सेवा का फल जीते देतेही पानी पीते मरे न कोउ कहिं पाईरे। र०
सासू को देवी मानो पती को देउता जानो इन्ही की पूजा करवाईरे। र०
सबकी बनौ प्यारी "इष्ट" अपना निहारी क.म करहु चितलाईरे। र०

स्त्रियों के गाने में

(४०)

सखि जन्महु री एक लाल जो देसवा को दुख टारै रे॥
जैसे दिया बिन घर सूनो लागै त पानी बिन तालाब हो।
वैसेहि तिरिया रे सुत बिन जानहु खाली गोद निहारे रे॥
महला अटारी सब सूनी लागैं सूनी लगै चौबारी हो।
ललना के बिन सब कछु सूनो लागै मिलि सब बात बिचारैं रे॥
राम लखन ऐसो यक वीर जाओ जो सीता को लावे छोड़ाई हो।
तुम्हरी सीत-जा पर घर डारी होय सुत वेगि सुधारै रे॥
मानि लेहु स्वामी दयानँद बात जो रीति लखाई हो।
"इष्ट" अपनो यही एक जानहु, जाये हमारे न हारैं रे॥

कुछ उपयोगी बातें

उत्तम सन्तान वर और वधू के आहार पर निर्भर है पति-पत्नी शरीर आत्मा की पुष्टि के निमित्त बल और बुद्धि-वर्धक औषधि सेवन करें। औषधि संस्कार विधि लिखित—

आँबाहल्दी २ तो०, हल्दी १ तो०, सफ़ेद चन्दन १ तो०, कपूर कचरी १ तो०, कुष्ट १ तो०, जटामासी १ तो०, शिलाजीत ३ मा०, शुद्ध कपूर ३ मा०, नागर मोथा १ तो०। इन सबको कूट पीस गाय के दूध में पका गूलर के पत्र में दही जमा देवे, पश्चात मथानी से मथकर घी निकाल लेवे फिर उसमें केसर ६ रत्ती, जायफल ३ मा०, इलायची ६ मा०, जावित्री ६ मा०, लता कस्तूरी ६ मा०। (इसको बन भिंडी भी कहते हैं यही खाने की जगह कस्तूरी के नाम से ली जाती है बड़ी पौष्टिक है) इसका सेवन करे और गर्भाधान के दिवस यही घी खिचड़ी के साथ खावे विशेष देखना हो, तो संस्कार विधि में देख लेना।

ब्राम्ही ऽ–, शंख पुष्पी ऽ=, सहदेवी ऽ। लेकर स्वरस या काढ़ा बनाकर मिश्री ऽ॥ में शर्बत बना लो यह भी गर्भस्त बालक के लिये उपयोगी है अथवा सुखद कामिनी पाक आदर्श औषधालय, मक़बूल-गंज, लखनऊ से मँगाकर दूसरे मास गर्भ में सेवन कराओ अवश्य ही पुत्र होगा, परीक्षित है उपरोक्त शर्बत बच्चों को दिया जा सका है।

उपरोक्त औषधि घी बना कर अथवा पाक या शर्बत बना कर थोड़ी मात्रा में गर्भ की अवस्था में भी खाई जा सकती है।

❀ ओ३म् ❀

४—जातकर्म संस्कार

यह जातकर्म संस्कार बच्चा पैदा होते ही उसी समय होता है। यह संस्कार अब बहुत कम होता है। इसके न होने का एकमात्र कारण हिन्दुओं की छूत है। इस छूत से सैकड़ों बच्चे प्रति वर्ष नष्ट हो जाते हैं। दूसरे देश और जातियों के बच्चा पैदा होते ही हर्ष माना जाता और इनके यहाँ हर्ष के साथ सूतक लग जाता है। किसी के यहाँ एक छोटा बच्चा भी जच्चा और बच्चा को नहीं छू सकता, एक अलग स्थान उसी में १० दिवस रहना, बाहर की शुद्धवायु बच्चा और जच्चा को मिलना कठिन हो जाती है। जन समुदाय बच्चा के पैदा होने पर सहस्रों रुपया व्यय करता है, पर जच्चा और बच्चा को नवीन वस्त्र नहीं देता। परिणाम यह होता है कि वह अदृश्य कीटाणु, जो उन पुराने कपड़ों में हो जाते हैं, वे उस कोमल बच्चे के लगकर जमोघादि नाना रोग उत्पन्न कर देते हैं और बहुतेरे काल के गाल में चले जाते हैं। इसी प्रकार नाल के काटने में देरी होने पर बच्चे रोगी हो जाते हैं। इसीलिये यह संस्कार था कि बच्चे की नाल में चार अँगुल छोड़ एक तागा बाँधकर तेज़ अस्तुरा या क़ैंची से काट देवे। और बच्चा और जच्चा को गर्म पानी से नहलाकर यज्ञवेदी पर बैठाकर

यज्ञ तथा जात-कर्म संस्कार की सम्पूर्ण विधि करना चाहिये। छूत-छात को मिटा देना चाहिये ! हाँ, सफाई अवश्य रक्खो। बच्चा और जच्चा के नीचे बिछानेवाली चद्दर नित्य धुलाते रहो, और प्रसूतिगृह में १० दिवस तक सरसों और भात में शक्कर और धूप मिलाकर संस्कारविधि लिखित मंत्रों से दोनों समय प्रातः और सायं आहुति देते रहो ! और ठंढक न पहुँचने के निमित्त निर्धूम अग्नी हर समय रखना चाहिये क्योंकि १० दिन तक दूध या पानी जो जच्चा को दिया जावे वह गर्म करके दिया जावे, परंतु कोई दुर्गंध की वस्तु आग पर नहीं छोड़ना चाहिये न छूत मानना चाहिये।

स्त्रियों के गाने में

(४१)

सखि तेरो लाला उमरि बड़ी पावे, उमरि बड़ी पावे।
रहे निरोग सदा जीवन भर, ना कछु रोग सतावे ॥ सखी तेरो०
कहना माने मात पिता को, कीर्ति राम सम पावे ॥ सखी तेरो०
वेद धरम की रच्छा करै नित, पाखँड दूरि हटावे ॥ सखी तेरो०
जग उपकार करै निशिवासर, प्रभु में ध्यान लगावे ॥ सखी तेरो०
देश भक्त ह्वै जग-रच्छा हित, सारो समय बितावे ॥ सखी तेरो०
विद्या पढ़ि ब्रह्मचारी बनै यह, विधिसों गृहस्थ निभावे ॥ सखी तेरो०
सुत उपजाइ बनीहू बनिके, फिरि संन्यास सिधावे ॥ सखी तेरो०
देश धरम निज "इष्ट" विलोकै, करिके परम सुख पावे ॥ सखी तेरो०

स्त्रियों के गाने में

(४२)

सखि जन्म्यो तुम्हारे है पूत सो मंगल गाइय हो ॥
जुग-जुग जीवहि लाल निरखि सुख पाइय हो ॥ सखि०
हम त लैके ललन कहँ गोद खेलाइय हो ॥ सखि०
तुम खावहु सोंठि बनाइ मजीठ मिलाइय हो ॥ सखि०
जासों हुइ जाइ खून सफाइ वैद्य बतलाइय हो ॥ सखि०
सखि, कबहूँ न दीजौ अफीम जो बल नशि जाइय हो ॥ सखि०
घुट्टी[1] लीजौ बनाइ जो नित्य पिलाइय हो ॥ सखि०
सखि, करिऔ न पति संग जौंलगि दूध पिलाइय हो ॥ सखि०
दूध को बल घटि जैहै औ रज बिरथा जाइय हो ॥ सखि०
तुम बालक वीर बनावौ "इष्ट" अपनाइय हो ॥ सखि०

स्त्रियों के गाने में

(४३)

जेहि घर जन्मे ललनवाँ त ओहि घर धनि धनि हो।
रामा, धनि धनि कुल परिवार त धनि धनि सब जन हो ॥
रामा, अमवा की बिजुरी से उपजै रे अमवा रेंडवा से रेंडवा जन्मै हो।
देवी की कोखिया से जन्मैं रे देउता जो देवुवा के काम आवें हो ॥
रामा, होनहार बिरवा के चिकने पतौआ जो देखत भले लागै हो।
रामा, तैसे ही तुम्हरे पुतवा हुइहैं सुन्दर लच्छन पागे हो ॥

१—हमारी बनाई गृह-सुधार पुस्तक में घुट्टी बनाना लिखा है, देख लेना।

रामा, सब मिलि लाल का दोहैं असीस ललन मुख चूमहिं हो।
रामा, गोदी खेलाइ हिय लीजो लगाइकै छाती जुड़ावहि हो॥
रामा, आयु बढ़ै पूत युग युग जीवौ जननी के बनिहौ दुलारे हो।
रामा, जल्दी से बढ़िऔ हुइओ सयाने चलिओ 'इष्ट' गुण धारे हो॥

(४४)

सब विधि गावो मंगलाचार इस उत्सव में आनेवाले॥
धनि धनि ईश्वर सर्वाधार तुम हो सुःखों के भण्डार।
तेरी महिमा बड़ी अपार सबको सुमति दिलाने वाले॥ सब विधि
जिनके जन्मा है सुकुमार वैदिक रीति से हो संस्कार।
कराया वैदिक धर्म प्रचार धर्म की धूम मचानेवाले॥ सब विधि
आये भाइ बन्धु महिमान पंडित उपदेशक विद्वान।
करते भजन प्रेम सों गान प्रिय उपदेश सुनानेवाले॥ सब विधि
गावो ईश्वर का धन्यवाद जासों मन को मिटै विषाद।
चाखो ईश्वर का परसाद प्रभु हैं दुःख मिटाने वाले॥ सब विधि
किरपा कीजो दीनदयाल होवे चिरंजीव यह लाल।
रक्खे सदा धर्म का ख्याल जो जग आर्य बनानेवाले॥ सब विधि
होवे तेजस्वी तपधारी ईश्वर करै बने उपकारी।
गुरु हित करै रहे ब्रह्मचारी उत्तम शिक्षा पाने वाले॥ सब विधि
रक्खो ईश्वर पर विश्वास पूरी करैं वही सब आस।
नहिं हम देंय किसी को त्रास डंका वेद बजानेवाले॥ सब विधि०

(४५)

महीना दस उदर में जो जरायू साथ रहता है।
बढ़ै जिस भाँति सों बालक जरायू साथ बढ़ता है॥ महीना दस

प्रभू केवल तुम्हारी ही कृपा से जो बने सब अँग।
तुम्हारी ही दया से वह जरायू संग आता है॥ महीना दस

सदा ही गर्भ को दुख देनेवाली वस्तु ना निकले।
न पीड़ा हो किसी विधि की यह बालक जो उपजता है॥ महीना दस

सदा रच्छा प्रभू करते मुसीबत जौन आती है।
गरभ के कष्ट से बालक प्रभू किरपा उबरता है॥ महीना दस

जगत् का यक पिता वह है उसीके सब भरोसे हैं।
उसी की वेद आज्ञा पर मनुज कोई जो चलता है॥ महीना दस

वह पाता 'इष्ट' फल चारों धरम अर्थ काम औ मुक्ती।
अहरनिशि प्रार्थना करना प्रभू की जिसको भाता है॥ महीना दस

(४६)

प्रसूता पूत जाया है बधाई है बधाई है।
कटाया नाल ललना का दिया मधु घृत चटाई है॥ प्रसूता

लिखो ओंकार जिह्वा पर सलाका स्वर्ण की लाकर।
कहो वेदोसि कानों में जो संज्ञा वेद पाई है॥ प्रसूता

जरायू साफ़ करके ही निल्हाओ गर्म पानी से।
लिटाओ शुद्ध वस्त्रों पर विधी ऋषि ने बताई है॥ प्रसूता

पिलादो बालघुट्टी को कि रेचन पेट से मल हो।
सफाई 'इष्ट' हो विधि सों यही सारी बड़ाई है॥ प्रसूता

(४७)

सखि जन्म्यो तुम्हारे पूत उत्सव नीको सो उत्सव नीको भयो॥

इष्ट मित्र सब आँगन आये, पूत हेत बहु लाये बधाये।
जाको जितनो बूत, उत्सव नीको भयो ॥ सखि०
गावनवारी सोहर गावें, सब जन मिल के ईश मनावें।
ललना होवें सपूत, उत्सव नीको भयो ॥ सखि०
हों बुधिवारे ललना तुम्हारे, चाल चलन तुम रहहु निहारे।
होने न पावें कपूत, उत्सव नीको भयो ॥ सखि०
हुइ अदीन जिये यह बालक, दुःखी दीन को होवे पालक।
छोड़े छूत को भूत, उत्सव नीको भयो ॥ सखि०
"इष्ट" मित्र सब ध्यान करैं नित, करि उपकार चहैं सारे हित।
होय संग ना धूर्त, उत्सव नीको भयो ॥ सखि०

स्त्रियों के गाने में

(४८)

ललन कहँ मधुघृत दीजै चटाइ।

घृत मधु के गुन लेहु विचारी, चाटे से मल नशि जाइ। ललन कहँ
बुद्धी बढ़ै सोइ यतन करहु नित, शुभगुन लीजौ सिखाइ ॥ ललन कहँ
सोने सलाका लैके बहिनो, सातहि बार चटाइ ॥ ललन कहँ
ईश विनय करि सात मन्त्र पढ़ि, कीजै विधी सुखदाइ ॥ ललन कहँ
निशि माँ सोवे दिन में जागे, ताकी स्मृति बढ़ि जाइ ॥ ललन कहँ
सूर्य्य चन्द्र सम शक्ती बढ़न हित, नित्य-नेम सिखलाइ ॥ ललन कहँ
ईश्वर के गुन गावो सदा तुम, पुत्र हेत चित लाइ ॥ ललन कहँ
"इष्ट" सहारे बुद्धी बाढ़ै, विनती करिये बनाइ ॥ ललन कहँ

(४९)

यह ईश्वर की कृपा से ही सदा बुधिवान् हो बालक।
सदा रक्षा करै हित सों बनै यह दीन जन पालक॥ यह ईश्वर
बढ़ाती आयु अग्नी है जो जाने इसकी महिमा को।
बिगाड़े जो इसे कोई वह होवे आयु को घालक॥ यह ईश्वर
हरै दुख को वही ईश्वर जनम जिसने दिया तुमको।
करो स्तुति सदा उसकी वही है प्रार्थना लायक॥ यह ईश्वर
अन्न से जीव रक्षा हो वही आयु बढ़ाता है।
उसी को भोगना विधि से न होवे रोग कोइ बाधक॥ यह ईश्वर
सदा भगवान् को ही "इष्ट" जाने सब जगह पर है।
वही रक्षा करै सबकी वही है मोक्ष का साधक॥ यह ईश्वर

स्त्रियों के गाने में

(५०)

घर जन्मी है आजु लली रे लली।
लाला भये जच्चा मेवा खाई, लल्ली भये पर दाल गली रे गली॥
लाला भये दाई पावे रुपैया, लल्ली भये पै अठन्नी चली रे चली॥
लाला भये यक महिना लगै तेल, लल्ली भये पखवारा भली रे भली॥
"इष्ट" हृदय तनि न्याय विचारहु कोखिया से हों दोनोंलाला लली।
लल्ली से दोउ घर हों उजियारे लाला बहुत होवें ढोंगी छली रे छली॥
ताते अनादर करहु न कबहूँ लाला से है हमें लल्ली भली रे भली।

स्त्रियों के गाने में

(५१)

जच्चा लाल को रखिऔ सुधारि सो प्रेम निहारि औ नीतिसिखैऔ हो।
जच्चा नेम से दूध पिऐऔ औ नित्य सोवैंऔ औ ठीक जगैऔ हो॥
जच्चा नीको हरीरा बनैऔ मजीठ मिलैऔ औ रुचि सों खवैऔ हो।
जच्चा जूता न सुलुगैऔ गंडा न बँधवैऔ कबहूँ न सोखा बोलैऔ हो॥
जच्चा लाल मिरच मति खैऔ परहेज से रहिऔ पती संग बचैऔ हो।
जच्चा अपनो नेम सुधरिऔ सुचाल निहरिऔ औ ज्ञान विचरिऔ हो॥
जच्चा तुतली न बोली सिखैऔ न कबहूँ चिड़ैऔ न बहुत रोवैऔ हो।
जच्चा खूब पढ़ैऔ और "इष्ट" बतैऔ सुभाव सुधरिऔ हो॥

स्त्रियों के गाने में

(५२)

दीजौ भीख निहार दुआरे कोउ आवे।
भीख देती तुम जानि भलाई द्वारे पे साधू निहार॥ दुआरे०
मुसलमान बहु भेष बनाये फिरते हैं द्वारहि द्वार॥ दुआरे०
तुम्हरी भीख से गोमांस खैहैं करती न तनिक विचार॥ दुआरे०
कलेम लगाइ जोगी लै आवहिं देतो हो नन्दी निहार॥ दुआरे०

१—यह जो नादिया देखने में आते हैं जिनको यह जोगी लोग लेकर भीख माँगने आते हैं, उनके शरीर में जहाँ तहाँ खाल विशेष लगी लटकती है, यह बनाई जाती है—एक पैदा हुए बच्चेके एक छोटे*

गाँजा चिलमवाले जो साधू भीख माँगि सब करते बहार ।। दुआरे०
गाजी मियाँ के गीत सुनावें और बतावहिं जारति मदार ।। दुआरे०
"इष्ट" भीख इनहिं कबहूँ न दीजे ग्राम से दीजै निकार ।। दुआरे०

स्त्रियों के गाने में

(५३)

देहिं असीस सुखी होय बालक ।
जिन रोगन को मनती हौ बाधा, ते हैं तुम्हारे पुत्र के घालक । दे०
तिन रोगन को राक्षिस कहत हैं, नहिं देखात होत यह बाधक । दे०
पूतना और जमोघा कहत जिन्हैं, होवें लाल तुम्हारे के नाशक । दे०
मन्त्र यन्त्र से कुछ ना हुइहै, कीजै दवाई वैद्य हो लायक । दे०
सौरिगृह में आहुति दीजै, संस्कारविधि मन्त्र विधायक । दे०
आयु वृद्धी होवे लाल की, पावै "इष्ट" बनै वह लायक । दे०

(५४)

ऋषी दयानन्द आके हमको जो सीधो रस्ता बता गया है ।
जो ढोंग के जाल में फँसे थे बताके युक्ती छुड़ा गया है ।। ऋषी०

---

*बच्चे की गले की खाल लेकर शरीर के किसी स्थान पर चीरकर लगा देते हैं और सीं देते हैं, कभी टाँग काटकर किसी जगह जोड़ देते हैं, कभी-कभी दोनों बच्चे मर जाते हैं, एक तो मर ही जाता है। यह किसका काम है, कौन बनाता है, कहाँ बनते हैं, यह जानना हो तो 'पाँच टाँग की गौ' नाम के ट्रैक्ट में पढ़कर जान लीजिये, अधिकांश यह मुसलमान होते हैं ।

किसी को चलती न जालसाज़ी न कोई फंदे में लासका है।
सभी परस्पर हैं मेल करते जो संघ शक्ती सुझा गया है ॥ ऋषी०
जो वेद मत के रहे विरोधी हमी को दुश्मन क़रार देते।
सिखा के शुद्धी का प्रेम मन्तर सहस्त्रों हम में मिला गया है ॥ ऋषी०
चलैंगे ऋषि के विचार पर हम तो ' इष्ट" जल्दी मिलै हमारा।
औ पास कोई भी दुख न आवे वह मुक्ति मारग दिखा गया है ॥ ऋषी०

❀ ओ३म् ❀

५—नामकरण संस्कार

(५५)

जनम के ग्यारवें दिन नाम रखना अति भलाई है।
यही विधि नाम रखने की ऋषीवर ने बताई है॥ जनम के०
जन्मतिथि जन्म के नक्षत्र के देवतों की आहुति दे।
स्वष्टिकृत आहुती दीजै लिखी विधि जौन पाई है॥ जनम के०
जो सुविधा हो न उस दिन तो करो शत एक दिन में तुम।
जो इसमें भी न कर सकना वरष दिन विधि लखाई है॥ जनम के०
मँगाकर गाय का गोबर लिपाओ यज्ञशाला को।
बुलाकर प्रोहित अपने को यज्ञ-वेदी रचाई है॥ जनम के०
सजाओ यज्ञ-वेदी को धरो भर के कलश सुन्दर।
जलाओ घृत का दीपक तुम क्रिया जो यज्ञ भाई है॥ जनम के०
बुलाया जच्चा बच्चा को बिठाया यज्ञ वेदी पर।
पती की गोद दे बालक यही महिमा जताई है॥ जनम के०
मुदित हो देहिं सब आशिष चिरंजीव "इष्ट" हो बालक।
बनै तेजस्वि वर्चस्वी आयु सौ वर्ष पाई है॥ जनम के०

(५६)

आजु पितु सुन्दर नाम धरै।
पंडित आयो कुण्ड खुदायो रुचि सों होम करै।
द्वै अरु चारि घोष अक्षर गुनि यर हू बीच परै॥ आजु पितु०

कन्या के हित अयुगम अक्षर तीन अरु पाँच सरै।
ब्राह्मण नाम धर शर्मायुत वैश्यहु गुप्त परै॥ आजु पितु०
बल हित क्षत्री वर्महि पेखै जो उठि युद्ध करै।
नदी वृक्ष नक्षत्र औ पर्वत पक्षिहि साँप डरै॥ आजु पितु०
भीषण नाम धरै ना सुत को या विधि नियम करै।
पुत्र आयु हित "इष्ट" मनावहिं हिय बिच प्रेम भरै॥ आजु पितु०
तिथि नक्षत्र देवताहुति दै स्वष्टी होम करै।
पुनि व्याहृति आहुति को देकर वैदिक कर्म करै॥ आजु पितु०

(५७)

हमारा नाम था आरज बुजुर्गों ने बताया है।
बुरे सत्संग में पड़के उसे हमने भुलाया है॥ हमारा०
मुसीबत जिस समय आती जगत् विपरीत होता है।
जो रहता उस समय साथी सगा वह ही कहाया॥ हमारा०
हमारा नाम हिन्दू[1] रख पुकारा है हमें जिसने।
मुसलमाँ बनके खुद आये हमें काफ़िर बताया है॥ हमारा०
हमी को मानते थे श्रेष्ठ सब इंसान दुनिया के।
हमारे ही बुजुर्गों ने इसे आकर बसाया है॥ हमारा०

१—यह हिन्दू नाम किसी संस्कृत ग्रंथ में नहीं आया। मुसलमानों के समय से हमारा नाम हिन्दू केवल ग़यासुल्लुग़ात में—हिन्दू दर महाविरये फ़ारसियान बमाने पुज़्द (चोर), रहज़न लुटेरा) ग़ुलाम भी आयद।

इसी को देश आर्य्यावर्त कहते पूर्व जन अपने।
मगर हम भूल बठे थे ऋषी ने आ जताया है॥ हमारा०
बनें हम श्रेष्ठ सर्वोपरि दिखा शुभ नाम को अपने।
करें हम "इष्ट" को पूरा कि जिसने नाम पाया है॥ हमारा०

तिथी देवता

(५८)

'ब्राह्मण' परिवा 'त्वष्ट' द्वितीया 'विष्णु' तृततीया जानो।
चातुर्थी 'यम' 'सोम' पंचिमी षष्ठि 'कुमार' बखानो॥
सप्तमि 'मुनि' 'वसु' आठ नवमि 'शिव' दशमी 'धर्म' प्रमानो।
'रुद्र' एकादशि द्वादशि 'वायु' तेरसि 'काम' लखानो॥
'अनन्त' चौदस 'पितृ' पूर्णिमा तिथी देव अनुमानो।
'विश्वदेव' अमावस में लखि "इष्ट" जगत सुख मानो॥

नक्षत्र देवता

(५९)

अश्वनि केर देवता 'अश्वनी', भरणी का 'यम' जानो।
कृतिका 'अग्नी' रोहिणि 'प्रजापति', मृगशिर 'सोम' बखानो॥
आद्रा 'रुद्र' पुनर्वसु 'आदिति', पुष्य 'बृहस्पति' मानो।
अश्लेषा को 'सर्प' देवता, मघा 'पित्र' पहिचानो॥
पूर्वा फाल्गुनि को 'भग' देउता, हस्त 'सवित्र' बताई।
उत्तरा फाल्गुनि को है 'अर्यमन', चित्रा 'त्वष्ट्र' लखाई॥

२—आर्यों का बसाया हुआ है इसीसे इसको आर्यावर्त कहते हैं।

स्वाँति देवता 'वायु' जानो, जेष्ठा 'इन्द्र' जताई।
देव विशाखा 'इन्द्राग्नी' है, श्रवण 'विष्णु' सुखदाई॥
अनुराधा को 'मित्र' देउता, मूल 'निऋति' बुधमाने।
पूर्वाषाढ़ केर 'अप' देउता, शतभिष 'वरुण' बखाने॥
उत्तराषाढ़ का 'विश्वेदेवा', "वसू" धनिष्ठा मानो।
है 'अजपात' देवता निश्चय, पूर्व भाद्र पद जानो॥
'अहिर्बुधन्य' देवता जानो, उतर भाद्रपद केरो।
रेवति 'पूषन' गनो देवता, "इष्ट" ईश को चेरो॥
शक्ति बढ़ावन जीवन दाता, गृह नक्षत्र को हेरो।
हे प्रभुशक्ति बढ़ावहु निज जन, दास कहावे तेरो॥

(६०)

स्वामी दयानन्द विधि तुम्हरी हम जानी।
हिन्दू नाम लुटेरा डाकू त्यागि दीन यह जानी।
नामहिं देत मिटाइ मनुज को जो है अवगुन खानी॥ स्वामी०
रोहनि रेवति चम्पा तुलसी गंगा जमुना जानी।
कोकिल हंसा सर्पिनि नामनि चांडाली अनुमानी॥ स्वामी०
दासी किंकरी भीषण नामनि तजब सकल यह जानी।
इन नामन सों व्याह करत जो वह हो दुःख निसानी॥ स्वामी०
नाम से लोग बढ़त हैं जग में जो है बहु गुणखानी।
ताते नाम धरब अति सुन्दर "इष्ट" हृदय गुन मानी॥ स्वामी०

(६१)

स्त्रियों के गाने में

सखी तेरो लाला सुमति उर धारै सखी तेरो लाला।
कुमति कुचाल अविद्या नाशे वैदिक धर्म प्रचारे॥ सखी तेरो०
विद्या पढ़ै यश कीर्ति बढ़ावै बिगड़ो देश सुधारे। सखी तेरो०
गुरुकुल बसि कुल वीर कहावै काम क्रोध मद मारे॥ सखी तेरो०
जो चाहे जगदेश भलाई धर्म की ओर निहारे। सखी तेरो०
होंहि सुफल सब कारज याके "इष्ट" मनोरथ सारे॥ सखी तेरो०

(६२)

स्त्रियों के गाने में

छाई-छाई सखि तेरे द्वार, छाई; परम छवि छाई॥
कैसी घड़ी यह आई, घड़ी यह आई; प्रकट्यो सुत सुकुमार। छाई०
शोभा न वरनी जाई, न वरनी जाई; कोउ नहिं अनुहार॥ छाई०
चिन्ता सकल बिसराई, सकल बिसराई; हर्षित हो परिवार। छाई०
बालक प्रेम उरलाई, प्रेम उरलाईचू; मैं मुख बारहिंबार॥ छाई०
सुन्दर है नाम सुहावन, है नाम सुहावन; हो गुण को अधिकार। छाई०
अपनाहि "इष्ट" निहारे, सा इष्ट निहारे; राखै चित सुविचार॥ छाई०

(६३)

स्त्रियों के गाने में

जच्चा सुकुमारी लाल तेरो जीवै।
शुभ दिन जन्म भयो बालक को, है नक्षत्र सुखकारी॥ लाल तेरो०

सब मिलि देत बधाई लाल को, होवे उमर हजारी ।। लाल तेरो०
सब लच्चण सम्पन्न दुलारा, होवे कुल अनुहारी ।। लाल तेरो०
धरे नाम शुभ जानि कुँअर को, पिता नाम अनुहारी ।। लाल तेरो०
उत्तम शिच्चा देना लाल को, जिससे हो गुणधारी ।। लाल तेरो०
अपने पिता का हो कुल दीपक, सुख पावै महतारी ।। लाल तेरो०
मात पिता अरु "इष्ट" गुरु कों होवे आज्ञा कारी ।। लाल तेरो०

(६४)

सब गावहु मंगल गान, आज घर शांती भई ।।
घर पुतवायो आँगन लिपायो, कुँड खोदायो दरम्यान ।। आज०
हवन विधी विधिसों सब कीन्ही, भयो वेद को गान ।। आज०
स्वस्ति शांती पाठ भयो है, सुन्दर स्वर सों गान ।। आज०
नाम धर्‌यो बालक को सुन्दर, दीन्हो है बहुदान ।। आज०
ईश्वर स्तुति करत सकल जन, आशिष देत महान ।। आज०
जीवित रहै बरस सौ बालक, पड़े न उलटी बान ।। आज०
"इष्ट" हमारो यही इक सजनी, बाढ़ैं सुत बिच ज्ञान ।। आज०

(६५)

बहिनो करना सुधार, बिगड़ी दशा है तुम्हारी ।।
फूहड़ गीत कबहुँ न गावो, लीजौ बड़ों को निहार ।। बिगड़ी०
देवी देवता सारे पूजे पूजे मियाँ औ मदार ।। बिगड़ी०
सास ननद से तुम्हरी न बनती, करती पड़ोसिन से प्यार ।। बिगड़ी०
सीना पिरोना तुम ना जानो, करती हो बैठी बहार ।। बिगड़ी०
लाज करौ तुम घरवालेन की, मेलों में देती हो मुखड़ा उघार ।। बि०
"इष्ट" पती की सेवा न करतीं, करतीं उपास हजार ।। बिगड़ी०

(६६)

बढ़ाओ नाम अपने को चलन अच्छा बना करके।
जो उन्नति वंश की होवे करौ विधि सों कृपा करके ॥ बढ़ाओ०
कमाओ काम कर पहिले कमी कुछ भी न रह जाये।
खवाओ खाओ प्रीती सों धरो कुछ धन बचा करके ॥ बढ़ाओ०
औ रक्खो गाड़ के धन को चहै गहना बनालो तुम।
बनाओ घर बड़ी रुचि सों रहैं महिमान आ करके ॥ बढ़ाओ०
करो फिर नाम की ख्याती धरम पूर्वक जो हो तुमसे।
सदा ही धर्म कार्यों में लगाओ धन कृपा करके ॥ बढ़ाओ०
जगत् में नाम के खातिर यतन करते सभी जन हैं।
उसी का नाम होता "इष्ट" जो रहता दया करके ॥ बढ़ाओ०

(६७)

नाम होवै तुम्हारो नगरिया माँ। कोई टोकै न तुमको डगरिया माँ ॥
हरगिज़ कुचाल कोई तुम में न एक भी हो।
जो मार्ग था पिता का हितकर वही है तुम को ॥
फँसि जैऔ न कबहूँ पतुरिया माँ ॥ नाम होवै०
बुद्धी खराब होगी कबहूँ नशा न पीना।
धन जायगा तुम्हारा दुश्वार होगा जीना ॥
जुआ खेलिऔ न कबहूँ दिवरिया माँ ॥ नाम होवै०
विद्या पढ़ो सदाही पढ़ि नेक काम करना।
प्यारे धरम के ख़ातिर मरने से नाहिं डरना ॥
रखिलीजौ जी जान हथेरिया माँ ॥ नाम होवै०
जिस "इष्ट" नाम के हित इन्सान मरता जीता।
उस नाम की बड़ाई करता बयान गीता ॥
तेहि राखहु हिये की कोठरिया माँ ॥ नाम होवै०

(६८)

ईश्वर कृपा से सूरज सुख के लिये सदा हो।
आनन्द रात दिन हो सम्मुख न आपदा हो ॥ ईश्वर कृपा०

यह रात दिन महीना ऋतुएँ बसन्त आदिक।
दें फूल फल सदा सब यह ईश की कृपा हो ॥ ईश्वर कृपा०

करि वर्ष-वर्ष वृद्धी बालकपना बिताओ।
होकर युवा सम्हालो गृह धर्म को निबाहो ॥ ईश्वर कृपा०

जग में सुनाम महिमा तुम याद करते रहना।
निज नाम को जगत् में उपकार कर बढ़ाओ ॥ ईश्वर कृपा०

पितु मातु चाहते हैं तेजस्वि होय बालक।
करके दिखादो पूरा तब "इष्ट" का भला हो ॥ ईश्वर कृपा०

(६९)

यह उत्सव नाम रखने का सुखद हो जाय बालक को।
सभी आसीस देते प्रेम सों हैं आय बालक को ॥ यह उत्सव०

यह उत्सव का समय आया मनोहर गीत सुन-सुन कर।
महक उठती हवन की है सुखद कर जाय बालक को ॥ यह उत्सव०

महाशयगण यहाँ आये बड़े ही कष्ट को सह कर।
बढ़ाई शोभा उत्सव की रखाकर नाम बालक को ॥ यह उत्सव०

सदा बालक रहे अच्छा न कोई रोग आवे ढिंग।
बने यह चाँद निज कुल का यही आशीस बालक को ॥ यह०

प्रतापी तेज बलधारी निपुण हो वेद विद्या में।
करै यह दीन जन पालन जो सँग मिलि जाय बालक को ॥ यह०

गुरू उपदेशदाता अरु पुरोहित "इष्ट" हित चाहें।
धरम मर्य्याद पर चलना सिखादें आय बालक को ॥ यह उत्सव०

❀ ओ३म् ❀

६—निष्क्रमण संस्कार

पति के पत्नी के प्रति आदर के शब्द

(७०)

हे प्रिये तेरे हृदय में ईश का विश्वास है।
जानता हूँ हिय तुम्हारे द्वेष का नहिं वास है॥
और हे शुभ केशवाली भाव सारे उदार हों।
जो करै कर्तव्य बालक सर्वविधि उपकार हों॥
देवि, तेरे भाग्य सुन्दर पूत पायो होनहार।
ईश से विनती हमारी इसके होंवैं शुभ विचार॥
हो दीर्घजीवी लाल तेरा आत्म-बल की वृद्धि हो।
पावे सदा निज "इष्ट" को आधीन हरयक सिद्धि हो॥

(७१)

निकालो गेह से बालक छठे महिना बताया है।
करो निष्क्रमण को विधि से ऋषी ने जो जताया है॥ निकालो०
कराओ भ्रमण बालक को जहाँ की शुद्ध वायू हो।
कराओ सूर्य्य के दर्शन कि जिससे तेज पाया है॥ निकालो०
जिये सौ वर्ष तक बालक दीनता त्याग करके ही।
करै नित ईश की विनती जगत् जिसने बनाया है॥ निकालो०
बनाया चाँद सूरज को हुआ परकाश है जिससे।
करो तुम भक्ति उस प्रभुकी ओ३म् सद् नाम गाया है॥ निकालो०

हवन की रीति शुभकारी करो तुम चित लगा करके।
धरम के मार्ग पर चलना हिं वेदों ने बताया है॥ निकालो०
बड़े हो, देश देशों में भ्रमण करना भली विधियों।
भुलाओ "इष्ट" ना कबहूँ समझ में जौन आया है॥ निकालो०

बालक के लिये स्थान निर्माण का विधान

(७२)

दिन रात सुख पावे यह बालक ईश से है वन्दना।
अरु हो निवास स्थान अच्छा तनिक भी दुर्गन्ध ना॥
गृह होहिं ऐसे सुघर जँह चहुँ दिशि से वायू आवई।
अँधकार युक्त न हो भवन रवि रश्मि नित प्रति पावई॥
सिंह व्याघ्र अरु स्वान आदिक मूष मच्छर औ पतंग।
यहि भाँति को निर्मित भवन हो कर सकैं कोऊ न तंग॥
होवे जलाशय गेह में अरु शौच का स्थान हो।
भोजन बनाने के लिये उपयुक्त एक मकान हो॥
जिस ग्राम में बालक रहै तहँ वैद्य नेह विधान हों।
हों सभा मन्दिर भवन बहु उपज खाद्य प्रधान हों॥
सोने की शय्या वस्त्र हों सुन्दर बिछावन के लिये।
हल्के नरम अरु हों सुगन्धित पंट ओढ़ावन के लिये॥
बालक निरोग रहे सदा खेलै हँसे अति चाव से।
विद्या पढ़ै पंडित बनै भागै अविद्या भाव से॥
नित धर्म पूर्वक धन कमावे होय सम्पतिवान सो।
निज "इष्ट" को जाने विचारै सो सदा बुधिवान हो॥

स्त्रियों के गाने में

(७३)

सखि खेलत आँगन लाल मातु मुख चूमेहु हो।
आज निकसे दुआरे को लाल सकल जन पूछेहु हो ॥ सखि०
लाला भृगु पति मनिऔ सीख मातु सुधि लीजहु हो।
पुनि मनिऔ राम की नीति निशाचर नाशेहु हो ॥ सखि०
लाला जनिऔ बुद्ध की रीति अहिंसा सिखायहु हो।
मनिऔ नन्दलला केरि बात धरम नहिं छाड़ेहु हो ॥ सखि०
मनिऔ न जैनिन बात जो ईश छोड़ायहु हो।
स्वामी शंकर जनिऔ रीति वेद मत थापेहु हो ॥ सखि०
चलिऔ न ईसा मुहम्मद चालि वेद छोड़वायहु हो।
मनिऔ स्वामी दयानँद बात जो मार्ग सुझायेहु हो ॥ सखि०
हमैं भूले से राह बताई प्रेम करि मानहु हो।
हुई जाइ सौ वर्ष आयु नियम हिय धारेहु हो ॥ सखि०
ताते गावहु प्रेमके गीत असीस सुनावहु हो।
अपनों करिहहु पूरा "इष्ट" सबन अपनायेहु हो ॥ सखि०

स्त्रियों के गाने में चर्क सूत्र १२४-१२५

(७४)

दीजै खेलोना मंगाइ ललन जेहि खेलैं हो।
चित्र विचित्रित नाना रंग के, बजने खेलौना मँगाइ ॥ ललन०
हल्के चिकने और मुलायम, गरुए न दीजौ थमाइ ॥ ललन०

नोकदार पैने नहिं होवें, जो मुख में चुभि जाँइ ॥ ललन०
नाहिं भयंकर सूरति वाले, देखि न जाइ डराइ ॥ ललन०
बालक को डरवाओ न कबहूँ, हिय को बल घटि जाइ ॥ ललन०
रोते हुए उत्पात करन पर, रोकहु न भय दिखराइ ॥ ललन०
"इष्ट" हमारो यही यक सजनी खेले से बल बढ़ि जाइ ॥ ललन०

(७५)

हमारे खेलरे जी पहिले के सुखदाई ॥
पहिले खेल निशानाबाज़ी थे सिखलाते भाई ।
अब के खेल पैर को तोड़ें ना कछु है प्रभुताई ॥ हमारे
खैल बैठकी ताश गँजीफ़ा चौपड़ औ शतरंज ।
गुट्टीवारे बग्घा बग्घी राम-त्युरि औ घंघू ॥ हमारे
यह हैं खेल दिमाग़ी सारे मन को जीतनवारे ।
क़िला बनाना फ़ौज सजाना बादशाह किमि हारे ॥ हमारे
गदका फरी पटा अरु बाना खेल बाँक हैं सारे ।
यक अंगुली से गोली खेलें देखि निशाना मारे ॥ हमारे
गुल्ली दंडा औ लबे दंडा अरु खैलें कुतवाली ।
आँख बाँधि पेटजुँरिया खेलें ढूँढें निशान ख़ाली ॥ हमारे
आँख से आँख लड़ाना सीखें खेलें कबड्डी भाई ।
साँस रोक अभ्यास करत हैं खेलत हैं सब धाई ॥ हमारे
खेल पतंग देखि मन आवै है आकाश लड़ाई ।
करि अभ्यास "इष्ट" को पावत है चतुरन चतुराई ॥ हमारे

❀ ओ३म् ❀

७—अन्नप्राशन संस्कार

(७६)

सुनौ अब लाल को है अन्न प्रासन आज करवाना।
लिखी विधि[1] जौन है ऋषि ने ताहि विधि भात बनवाना॥ सुनो
महीना जब छठा आया किया संस्कार को विधि से।
निकल आई हैं कुछ दँतियाँ हुआ अधिकार[2] अन खाना॥ सुनो
खिलाना अन्न का प्रारम्भ करदो इस महीने से।
पिला कर दूध पूरे साल पीछे अन्न खिलवाना॥ सुनो
पिलातीं दूध हैं बहु नारियाँ पुनि गर्भ रहने तक।
चहैं हाथों से अपने लाल को रोगों में फँसवाना॥ सुनो
गरभ का दूध बच्चों को बहुत नुक़सान करता है।
समझकर "इष्ट" दुसरे वर्ष माँ का दूध छुड़वाना॥ सुनो

१—संस्कार विधि अन्न प्रासन संस्कार में देखो !

२—छटे महीना बच्चे के २ दाँत नीचे के निकल आते हैं बचा चार पदार्थ को इच्छा करता है और मिट्टी चाटने लगता है। बच्चे को मिट्टी से सदा अलग रक्खे और सोहागा भुना हुआ १ या २ रत्ती शहद के साथ दिन में एक या दो बार चटा देवे और मुलहटी की चिकनी चूसनी बनवादेवे जो बचा चूसा करे। दाँत निकलने पर बड़ी सावधानी रखनी चाहिये।

(७७)

जिस भाँति सों सुख से रहे बालक सोई विधि कीजिये।
सोते से नाहिं उठाइये अरु त्रास कबहूँ न दीजिये॥
अरु नाहिं ऊपर को उठावहु "इष्ट" नीचे ना करौ।
डर जायगा बालक अवशि अस खेल नहिं मन में धरौ॥

(७८)

रक्षा करो सदा तुम हित सों जो पूत जाया।
होवें न कोइ औगुन शुभ मार्ग ठीक भाया॥ रक्षा करो

छोटा बहुत हो बच्चा यदि देख-रेख ना की।
हो जाय पूत कुबड़ा अबहीं से जो बिठाया॥ रक्षा करो

इच्छानुकूल बालक माता पिता सदाहीं।
करैं मीठी मीठी बातैं उत्साह शिशु बढ़ाया॥ रक्षा करो

देखो प्रसन्नता से बालक निरोग होता!
बल बुद्धि सारी बाढ़ै, बाढ़ै हिये में दाया॥ रक्षा करो

बालक को धूप बिजली अरु वायु वेग से भी।
तरु, बेलि, सूनी जगहें बचने को है बताया॥ रक्षा करो

दुरथल खुली छतों पर उनको कभी न छोड़ो।
ऊँचे औ नीचे कुस्थल बचने को है बताया॥ रक्षा करो

तालाब, कूप, नदियाँ, अरु लू से लो बचाई।
हैं पान फूल के सम, यह "इष्ट" ने बताया॥ रक्षा करो

स्त्रियों के गाने में

(७६)

महिना छटऐं में अन्न खवावहु हो नहिं रीति नई।
अन प्रासन रीति निबाहहु हो नहिं रीति नई। महिना
पहिले चावल लो मँगवाइ औ लेहु धोवाइ न रीति नई। महिना
सुन्दर भात बनाइ मधू घृत मिलाइ न रीति नई। महिना
बुआ दीजौ माड़ चटाइ व खीर खवाइ न रीति नई। महिना
पुनि सुन्दर होम कराइ विधी बतराइ न रीति नई। महिना
तेजस्वी बालक चाहौ चटाओ घृत भात दही। महिना
जासों बढ़ै यश कीरति "इष्ट" खवावहु वस्तु नई। महिना

स्त्रियों के गाने में

(८०)

आज दिन नीको लगै सजनी ॥
मधुर मधुर सखि मंगल गावें, अच्छी विधि सों ढोल बजावें।
गोदी खेलावे जननी ॥ आज दिन नीको लगै सजनी ॥
सुन्दर कपड़ा अरु आभूषन, कुर्ता टोपी अरु हैं कंकन।
लाइ धरे भगनी ॥ आज दिन नीको लगै सजनी ॥
द्वारे मंगन भीड़ लगाई, देत न काहू को शब्द सुनाई।
सुनि ना परै अपनी ॥ आज दिन नीको लगै सजनी ॥
बारबार सिर सूँघें सखी सब, चुम्बन लेत कोउ सखि जब तब।
रोये से दूध पियावे जननी ॥ आज दिन नीको लगै० ॥
आज "इष्ट" सुख पायो सबनने, दीन्ह अशीस प्रेमसों सबने।
नेह करै भगनी ॥ आज दिन नीको लगै सजनी ॥

स्त्रियों के गाने में

(८१)

आजु खेलहि लाल झुलहिं सुखपाल हो मातु निहाल अरी।
बाँधे कंकन हाथ लगाये केसरि माथ है सब कोइ सिहात अरी।
सब आशिस देहिं औ गोदी मां लेहिं त बनिके सनेही अरी।
आये पंडित ज्ञानी मातु सन्मानी विधी सब जानी अरी।
लाला हुइहौ तुम धनवान करहु बड़ेन मान न हुइहौ अजान अरी।
लाला रहिऔ न कबहुँ कुसंग बनावो निज अंग होन व्रत भंग अरी।
मिलिहै "इष्ट" तुम्हरो जो नेम निहारो हिय बात बिचारो अरी।

(८२)

अन्न विन कछुहू नाहिं सोहात॥

अन्नहि के हित सारी दुनिया भरमत है दिन रात।
अन्नहि दान शक्ति उत्पादक अन्नहि है सुखदात॥ अन्नबि०
अन्न विना ही माँगत डोलें भूख नहीं सहि जात।
मानिन मान घटावत है यह युक्ति न कोई लखात॥ अन्नबि०
अन्नहि से यह कान सुनत हैं आँखिन से है देखात।
औरहु इन्द्रिन को वल याही है जग में विख्यात॥ अन्नबि०
अन्नहि से रज बीरज उपजत अन्नहि से संतान।
विना अन्न जीवन नहि होवै ऋषि मुनिहि बिलखात॥ अन्नबि०
ताते अन्न दान अरु विद्या जग उत्तम ठहरात।
अन्न दान से प्राण बचत हैं विद्या ज्ञान सुहात॥ अन्नबि०
अन्नहि "इष्ट" एक अवलोकहु रचहु तेहि दिन रात।
याही ते हित करत सदा सब सुत दारा अरु तात॥ अन्नबि०

❀ ओ३म् ❀

८—मुण्डन संस्कार

(८३)

हुआ संस्कार यह घर में तुम्हारे आज मुण्डन का।
इसी को चौल कहते हैं यही दिन बाल काटन का॥ हुआ०
बरस भीतर जरूरी है मनुज को इस का करवाना।
नहीं तो फिर समय आवेगा तिसरी साल मुण्डन का॥ हुआ०
हवन वेदी रचा करके किया संस्कार को विधि से।
दिया सब घर में भेजवाई बोलावा आज मुण्डन का॥ हुआ०
धराओ चार सर्वों में उरद तिल जौ व चावल को।
यही नाऊ को देदीजो पुरौता आज मुण्डन का॥ हुआ०
करौ संस्कार सब मिलके जो आये "इष्ट" बन्धूगण।
खुशी से जांय घर अपने दरश यह देखि मुण्डन का॥ हुआ०

स्त्रियों के गाने में

(८४)

मुड़नो दीजो कराइ हमारे ललना को॥ हमारे ललना को हमारे०
पंडित बोलावो कुंड खोदावो, दीजौ हवन कराइ॥ हमारे०
जौ तिल चावल और उरद के, दीजौ पियाला भराइ॥ हमारे०
उत्तर दिशा में चारौ शरावा, वेदी पै दीजौ धराइ॥ हमारे०
शमी पत्र औ कुश के सहित ही दीजौ बार कटाइ॥ हमारे०
जन्म के पहिले या तिसरे बरस में, मुड़नो दीजौ कराइ॥ हमारे०

गर्भ के बार गिरैं ना मग में, लिपटै सबन के उड़ाइ ॥ हमारे०
कुश के सहित गभुआर बार लै, दीजौ खेत गड़ाइ ॥ हमारे०
शिर में रोग कबहूँ ना हुइहै, फुन्सी व खाज नशाइ ॥ हमारे०
"इष्ट" बार कटवावहु प्रेम सों, दीन्ही बिधी बतराइ ॥ हमारे०

(८५)

नौआ कैंची दे बाप के हाथ माँ काटहि बार विधी करिके ।
कुश और शमी केरे पत्तन के संग काटहि बार विधी करिके ॥ नौआ
पहिले लीजौ बार भिगोइ सुधारि करौ कंघा करिके ।
तब काटहु दाहिन ओर के बार सम्हारि कृपा करके ॥ नौआ
पुनि बाँये औ आगे व पीछे के बारन काटि धरौ यकजा करिके ।
भुइ माँ न एकहु बार गिरें धरहु आँटा की लोई बना करिके ॥ नौआ
बुआ लोई लै हाथ माँ बाल सम्हारहु बेगि कृपा करिके ।
"इष्ट" आये हैं मित्र सबै घर में सत्कार करौ कछु दै करिकै ॥ नौआ

(८६)

छूरा लीजौ देखि सम्हारि के बार बनावहु हो ।
पानी ठंढो औ तातो मिलाइके बार भिगोवहु हो ॥ छूरा०
अब तो नाऊ बनावत बार सो मंगल गावहु हो ।
बुआ लीजौ लोइ माँ धारि न भूमि गिरावहु हो ॥ छूरा०
नाऊ ठाकुर छूरा न लागहि बार बनावहु हो ।
नाऊ मिलिहै तुम्हारोहु नेग सोच जनि लावहु हो ॥ छूरा०
तुम जल्दी से बार बनावहु न लाल रोवावहु हो ।
दीहैं सब मिलि आजु असीस "इष्ट" सुख पावहु हो ॥ छूरा०

ओ३म्

६—कर्ण-बेध संस्कार

(८७)

करण-बेध यह हुआ उत्तम कि वैदिक रीति दर्शाई।
न होवें रोग बहुतेरे दिया वैद्यक ने बतलाई॥ कर्ण०
बुलाके वैद्य या छेदक करण दोनों छिदाये हैं।
विनय मिलके करी सबने वेद के मंत्र को गाई॥ कर्ण०

१—शुश्रुत चिकित्सा स्थान अ० १९ में ७ प्रकार की वृद्धी का वर्णन है। वातज अंडवृद्धि, पित्तज अंडवृद्धि, रक्तज अंडवृद्धि, कफज अंडवृद्धि, मूत्रज अंडवृद्धि, मेदोज अंडवृद्धि, यह छे अंडवृद्धि, और सातवीं अंत्रवृद्धि का वर्णन है, इसके न होने की चिकित्सा में उप्रोक्त अध्याय २१ वें सूत्र में इस प्रकार—शंख (कनपटी) के ऊपर कान के अंत में सीवन (जोड़) की नस को बींधने से अंडवृद्धि और अंत्रवृद्धि न होने का वर्णन किया है। दाहिनी ओर वृद्धि हो तो बायाँ और बाईं ओर हो तो दाहिना इसी लिये हमारे पूर्वज दोनों कान पूर्व से ही बिंधा देते थे यह रोग घोड़े, साइकिल आदि सवारी, अधिक व्यायाम, मैथुन, वेगों को रोकने, बहुत फिरने, अतिलंघन (उपवास), गरिष्ट भोजन से हो जाते हैं॥ (चन्द्र प्रभावटी रस योग रहित सेवन करने से लाभ हो जाता है) अनुभूत।

बचैगा बहुत रोगों से औ पहिने कान में जेवर ।
महीना आठवें दशवें उजेरो पक्ष सुखदाई ।। कर्ण०
सुतों का दाहिना पहिले बाम कन्याओं का वेधन ।
हवन विधि सों कराया है विधो ऋषी ने जो बतलाई ।। कर्ण०
जुरे सब "इष्ट" हैं आकर खुशी का दिन मनाया है ।
यही आसीस दें मिलके कि होवे लाल. सुखदाई ।। कर्ण०

दाहिना कान बेधते समय के मंत्र का भाव

(८८)

हे प्रभो हम कान से सब ठीक ही सुनते रहें ।
जो हितू हैं संग तिनका हम सदा करते रहें ।। हे प्रभो०
नेत्र से भी ठीक देखें पुष्ट होवें अंग सब ।
संग हो विद्वान् का हम सौ बरस जीते रहें ।। हे प्रभो०
आपकी स्तुति करैं सब देश का कल्याण हो ।
हम सदा सद् मार्ग पर ही ठीक पग धरते रहें ।। हे प्रभो०
हे प्रभो हम वीर होकर धनुष लेकर युद्ध में ।
धर्म रक्षा के लिये ही सर्वदा लड़ते रहें ।। हे प्रभो०
कान तक खींचें प्रत्यंचा लक्षवेधन हम करैं ।
साधकर अन्तष्करण को ओ३म् हम जपते रहें ।। हे प्रभो०
"इष्ट" सबको हम लखैं नित मित्रता की दृष्टि से ।
हो पथिक कल्यान पथ के युक्ति कुछ करते रहें ।। हे प्रभो०

बाएँ कान बेधन के समय के मंत्र का भाव

(८३)

जपो तुम नाम ईश्वर का वही सुख देने वाला है।
सुनेगा टेर केवल वह, वही दुख हरने वाला है ॥ जपो०
उमर सारी गँवाई है बुढ़ापा अब निकट आया।
उचारो ओ३म् को हरदम तुम्हारी बात आला है ॥ जपो०
अविद्या के अँधेरे में न सूझा रास्ता तुमको।
दयानँद स्वामी ने आकर किया जग में उजाला है ॥ जपो०
सभी, ईश्वर को भूले पूजते थे धात औ पत्थर।
उन्हें मारग दिखाया है जो वेदों से निकाला है ॥ जपो०
तुम्हारे कर्म हों सुन्दर तुम्हीं फल "इष्ट" पाओगे।
लिखा, वेदों में जिस विधि से दिया ऋषि ने हवाला है ॥ जपो०

स्त्रियों के गाने में

(६०)

ललन घर बाजै रे बधैया ॥ ललन घर
सुनरा बोलैओ कान छेदैओ, होवै जो नस को जनैया ॥ ललन०
रोवन न पावें लाला हमारे, मुख में पेड़ा खवैया ॥ ललन०
तीर परोसी सब कोई अइहैं, लल्ला की लीहैं बलैया ॥ ललन०
पंडित अइहैं होम करहैं, सारे ऐहैं दिखैया ॥ ललन०
स्वस्ति शांती का पाठ सुनैहैं, छेदन रीति बतैया ॥ ललन०

मंगल गान होत आँगन में, बैठे हैं सकल सुनैया ॥ ललन०
"इष्ट" हमारो यही यक सजनी, होवे मान रखैया ॥ ललन०

एक स्त्री की चेतावनी

(६१)

हम सोइ गईं बहुत बेहाल जगाइ गयो आन ऋषी ॥
सोते में सब कुछ खोयो सजनी, भूलि गये हम कर्तब जननी ।
सोइ बताइ गयो आन ऋषी ॥ हम सोइ गईं०

जो कछु हमसे बिछुड़ि गये थे, देश जाति से दूरि भये थे ।
तिनहि मिलाइ गयो आन ऋषी ॥ हम सोइ गईं०

नारि अधिकार लिये थे छीनी, छाड़ि दुजाति शूद्र कहि दीनी ।
सोउ देवाइ गयो आन ऋषी ॥ हम सोइ गईं०

सब बहिनो को दीन्ही दीक्षा, अपने आप अपनी ही रक्षा ।
करना बताइ गयो आन ऋषी ॥ हम सोइ गईं०

पढ़ना छोड़ा हमें शूद्र बताया, पति को हमार जनेउ पहिनाया
सोऊ देवाइ गयो आन ऋषी ॥ हम सोइ गईं०

"इष्ट", आपनो हिय में धारो, मीठे बचन सदा उच्चारो ।
हमसे द्वेष छोड़ाइ गयो आन ऋषी ॥ हम सोइ०

❀ ओ३म् ❀

१०—उपनयन संस्कार

गुरु के प्रति ब्रह्मचारी का वाक्य

(६२)

हे नाथ मोहिं बताइये जो वेद रीति प्रमान हो।
जा विधि पढ़हिं अरु नियम जानहिं विश्व विश्रुत ज्ञान हो॥
हो ब्रह्मचारी वेद पाठी अस कृपा प्रभु कीजिये।
मोहिं निज सेवक समुझि अपनी शरण अब लीजिये॥

ब्रह्मचारी के उत्तर में गुरु का वाक्य और (येनेन्द्रायवासः) मंत्र बोलकर वस्त्र देना

(६३)

जौन विधि इन्द्रहिं बृहस्तपति सुवस्त्र देत,
शिष्य-गुरु नेम यह विधान दर्शाते हैं।
ताही भाँति हमहूँ सुदृढ़ वस्त्र देत तुम्हैं,
धारण करहु वह रीती बतलाते हैं।
जासे बढ़ै आयु वल इन्द्रिन प्रकाश बढ़ै,
बाढ़ै यश कीरति परम सुख पाते हैं।
"इष्ट" करै सेवा गुरु भक्ति युत दिन रात,
मिलै ताहि विद्या जासों औगुन नशाते हैं।

यज्ञोपवीत देते समय गुरु (यज्ञोपवीतम् परमं पवित्रं) मंत्र बोलता है, उसका भाव

(६४)

परम पवीत उपवीत यज्ञ कर्म हेत,
वद विधि कर्मन को धारन कराते हैं।
सोई ब्रह्मसूत्र चिह्न ज्ञान के प्रकाश हेत,
होनहार बटुकन बन्धन बनाते हैं।
आपु बल, तेज, धन राशि देनवारो जानि,
यज्ञोपवीत नाम हित सों सुनाते हैं।
अँगधारि सदा शुभ "इष्ट" कर्म नित्य करो,
वेद अनुकूल कर्म कीरति बढ़ाते हैं॥

स्त्रियों के गाने में

(६५)

बरुआ धारहु पवीत गरे रे गरे।
बरुआ बनिगे द्विजाती हरे रे हरे॥ बरुआ०
बरुआ जौं लगि पढ़िऔ न एकहु वेद,
न लइऔ मन खेद जो काम सरें रे सरे॥ बरुआ०
बरुआ मनिऔ न मात की बात न बाप न तात,
कहै जो विवाह करे रे करे॥ बरुआ०
पढ़ो विद्या जहाँ पितु-मातु तहाँ,
घर की चिन्ता हिये न धरे रे धरे॥ बरुआ०

करौ संध्या दुओ काल मन ओ३म् सब काल,
वाणी में "इष्ट" भरे रे भरे ॥ बरुआ०

ब्रह्मचारी के प्रति गुरु का वाक्य (मम व्रते ते हृदयं) मंत्र का भाव

(९६)

तेरे मन को मैं अपने आधीन करता।
तेरे चित्त में भाव अनमोल भरता ॥ तेरे मन को०
कि अनुकूल होवे तू मेरे सदा ही।
मेरी तरह सत्य वाणी उचरता ॥ तेरे मन को०
सुनाऊँ मैं तुझको उसे तू मनन कर।
हो एकाग्र चित बात हिय बीच धरता ॥ तेरे मन को०
हमारे तुम्हारे हृदय बीच साक्षी।
वृहस्पति गुरू देव सबका जो कर्ता ॥ तेरे मन को०
वह प्रभु "इष्ट" रक्षा करै सब जगत् की।
प्रतिज्ञा दोऊ की सफल सोइ कर्ता ॥ तेरे मन को०

बालक की प्रतिज्ञा (अग्ने व्रतयते) मन्त्रों का भाव

(९७)

हे अग्नि देव व्रताधिपति तुम पूजनीय महान् हो।
ब्रह्मचर्य व्रत धारण करहिं हम, नाथ शक्ति प्रदान हो ॥

है यह विनय मेरी प्रभो सम्पत्तिशाली होहिं हम।
बोलें न कबहूँ झूठ को पालन करहिं सच्चा धरम ।।
हे वायु ज्ञानसरूप हम पर तुम कृपा करते रहो।
अरु सूर्य्य चन्द्र व्रताधिपति नित मम विनय सुनते रहो ।।
ब्रह्मचर्य्य है जो व्रत हमारा होहि पालन नेम से।
"इष्ट" व्रत छूटै न कबहूँ हम करैं जो प्रेम से ।।

ब्रह्मचारी को उपदेश

(९८)

हे बटुक उपवीत तुमने जो लिया।
प्रेम पूर्वक है तुम्हें गुरु ने दिया ।। हे बटुक०
वैदिक विधी से यज्ञ करने के लिये।
साथ ही ब्रह्मचर्य्य व्रत को है लिया ।। हे बटुक०
कर्म करने वेद के अनुकूल की।
है निशानी सूत्र जो तुमने लिया ।। हे बटुक०
ईश प्राप्ती की यही यक राह है।
जो जनेऊ ब्रह्मसूत् तुमने लिया ।। हे बटुक०
बाँधता गुरु सकल वैदिक नेम में।
अमलता बोधक है जो धारन किया ।। हे बटुक०
देने वाला तेज बल अरु आयु को।
"इष्ट" फलदा जौन व्रत तुमने लिया ।। हे बटुक०

आठ प्रकार का मैथुन

(९९)

तजि विषयन को संग सदा ब्रह्मचारी बनो ॥
नारि कथा निज मनहिं न लावो, नारि-खेल में मति तुम जावो।
जिय माँ करौ न उमंग ॥ सदा ब्रह्मचारी बनो ॥ तजि०
दर्शन पर्सन नारि करौ ना, नारि संग एकान्त रहो ना।
जगै न जासों अनंग ॥ सदा ब्रह्मचारी बनो ॥ तजि०
स्वपनहु नारि ध्यान नहिं लावो, कबहुँ न नारि पलँग पर सोवो।
करहु न सद् व्रत भंग ॥ सदा ब्रह्मचारी बनो ॥ तजि०
ब्रह्मचर्य्य की अवधि बितावो, निज सेवा से गुरुहिं रिझावो।
होंय सकल दुख भंग ॥ सदा ब्रह्मचारी बनो ॥ तजि०
"इष्ट" तुम्हारो विद्या पढ़ना, अन्य कर्म में पग ना धरना।
त्यागौ पंथ कुसंग ॥ सदा ब्रह्मचारी बनो ॥ तजि०

ब्रह्मचारी को उपदेश

(१००)

नित सत्य को धारन करो सत्योपदेश न छोड़ना।
विद्या पढ़ाओ औ पढ़ो पर झूँठ कबहुँ न बोलना ॥
नित बुरे कामों से हटाकर इन्द्रियों को युक्ति से।
फिर लगाओ कर्म शुभ में अपने मन को युक्ति से ॥
क्योंकि अन्तष्करण तेरा न्याय पूर्वक हो सदा।
अब अविद्या की प्रवृत्ती नाहिं हो मन में कदा ॥

"इष्ट" प्राणायाम करिये शोक मोह विनाश कर।
योग के अभ्यास में नित प्रेम पूर्वक ध्यान धर॥

ब्रह्मचारी के प्रति गुरु का वाक्य

(१०१)

तेरा नाम क्या है बताओ हमैं।
औं करके प्रतिज्ञा दिखाओ हमैं॥ तेरा नाम०
फ़क़त नाम की यक बड़ाई बड़ी।
उसे पूरा करके जताओ हमैं॥ तेरा नाम०
प्रतिज्ञा करी जिसने पूरी जगत में।
वही नाम पाकर दिखाओ हमैं॥ तेरा नाम०
पढ़ो वेद विद्या परिश्रम सफल हो।
सदाचारी बनके दिखाओ हमैं॥ तेरा नाम०
मिलैं "इष्ट" फल कर्म करने से पूरा।
सोई करके पूरा दिखाओ हमैं॥ तेरा नाम०

गुरू के प्रति ब्रह्मचारी का वाक्य

(१०२)

मेरा नाम अब ब्रह्मचारी बखाने।
चलूँ चाल मैं भी जगत् याहि जाने॥ मेरा नाम०
जो शिक्षा दई आपने आज हमको।
समझकर गुरु आपको ताहि माने॥ मेरा नाम०

मैं हूँ आपका शिष्य यह नेम धारूं ।
बनूँ आप-सा ही जगत जाहि जाने ।। मेरा नाम०

सदा "इष्ट" अपना यही एक रक्खूं ।
करूं देशसेवा ऋषी के प्रमाने ।। मेरा नाम०

ब्रह्मचारी के प्रति गुरु का वाक्य

(१०३)

हे बालक तू ईश्वर का है ब्रह्मचारी ।
वही है तुम्हारा सदा से आचारी ।। हे बालक०

वही पूजने योग्य है यक जगत् में ।
बताया है आचार उसने सम्हारी ।। हे बालक०

बनूं उसके पीछे मैं आचार्य्य तेरा ।
तू है प्राण विद्या का हरदम पुजारी ।। हे बालक०

सदा सुःख पहुँचानेवाला वही है ।
औ देता है फल ईश कर्मानुसारी ।। हे बालक०

सदा उसकी आज्ञाको पालन करो तुम ।
स्वरूप उसका जानो बनो तुम सुखारी ।। हे बालक०

सकल औषधी और जल ज्ञान जानो ।
जगत् के पदारथ से हो जानकारी ।। हे बालक०

करो अग्नि विद्युत समर्पित सुरों को ।
बनो "इष्ट" तुम इस तरह ब्रह्मचारी ।। हे बालक०

(१०४)

चाल चलिओ न कोई अनारी रे।
रहिओ अपने को हरदम निहारी रे॥ चाल चलिओ
संगत खराब से ही बालक खराब होते।
जिमि काला दाग़ पड़ता बनता नहीं है धोते॥
अब तो करिये संग निहारी रे॥ चाल चलिओ
आदत खराब बनकर छुटती नहीं है सोते।
वैसेही भूले बालक जीवन बिताते रोते॥
लीजो करने से पहिले बिचारी रे॥ चाल चलिओ
अच्छे स्वभाव वाला बालक तभी बनेगा।
जब लाड़ को हटाकर शिक्षा पिताहि देगा॥
लीजौ सन्तान अपनी सुधारी रे॥ चाल चलिओ
हर एक काम बालक के देखते रहो तुम।
स्वतंत्र नाहि करना सन्तान अपने यकदम॥
नाहीं हुइहैं सकल व्यभिचारी रे॥ चाल चलिओ
जैसा बनाना चाहो वैसीहि शिक्षा दीजै।
व्यवहार सच्चे होवें उनको ही सदा कीजै॥
"इष्ट" रहिहैं सो बालक सुखारी रे॥ चाल चलिओ

(१०५)

कैसी बिगड़ी है हालत हमारी रे।
कोई चलता न आज निहारी रे॥ कैसी बिगड़ी०

जब तक हमारे देश में ब्रह्मचर्य्य प्रथा थी।
भीषम लखन जती की सुनीं जो कथायें थीं ॥
तब तक हमारा देश पराधीन नहीं था।
रोटी के लिये "इष्ट" कभी दीन नहीं था ॥
आज फिरते हैं दर दर भिखारी रे॥ कैसी बिगड़ी०
जब तक कि भाई भाई में प्रीती बनी रही।
रामो-भरत की आज कहानी बनी रही ॥
भाई का प्रेम पांडव करके दिखा गये।
तब तक न क्लेश देश में कोई नये भये ॥
अब तो कष्टों से दुनिया दुखारी रे॥ कैसी बिगड़ी०
जब तक रहा है मित्र नेह सच्चा देश में।
आया कोउ नेह करन वैश्य भेष में ॥
तब तक यह देश स्वर्ण भूमि के समान था।
अब देश-देश चल रही इस दीन की कथा ॥
अब तो धोखे की चलि गई यारी रे॥ कैसी बिगड़ी०
कलियुग में ब्रह्मचारी ऊदन हुआ अकेला।
इच्छित जवान नारी इनकार कर ढकेला ॥
अरु भाई प्रेम को भी इसने दिखा दिया है।
बहु मार खाय करके सूली को चल दिया है ॥
ऐसे क्षत्री भये गुणधारी रे॥ कैसी बिगड़ी०
जब तक यह तीनों बातें* दुनिया में थीं बनीं।
तब तक हमारे देश में आई न कोइ अनी ॥

---

* —ब्रह्मचर्य, भ्रातृ-भाव, मित्रस्नेह।

यही विचार स्वामी दयानंद ने किया।
उपदेश ब्रह्मचर्य्य भ्रातृ भाव का दिया॥
घर-घर गुरुकुल करिदै जारी रे॥ कैसी बिगड़ी०

(१०६)

छोड़ो छोड़ो नशा का पीना नशा का पीना।
जो चाहो सुःख से जीना नशा ना पीना॥
गाँजा अफ़ीम चरस अरु तारी 'यद्यमदक' कोकीन निहारी।
छोड़ौ तमाखू का पीना॥ नशा ना पीना॥ छोड़ो०॥
याही ते रोग होहिं बहुतेरे, बुद्धिवान कोउ जाइ न नेरे।
जो है जगत् में जीना॥ नशा ना पीना॥ छोड़ो०॥
पिए शराब नालि बिच डारे, बहुतक पकरि पुलिस बैठारे।
दुर्लभ हो गया जीना॥ नशा ना पीना॥ छोड़ो०॥
तन मन धन सब नाश करत हैं, लोक लाज से नाहिं डरत हैं।
धारि यही को बाना॥ नशा ना पीना॥ छोड़ो०॥
'इष्ट' नशा कोइ कबहूँ न पीजो, सबहीं सब विधिसों तजि दीजौ।
पावहु कीर्ति महाना॥ नशा ना पीना॥ छोड़ो०॥

ब्रह्मचारी को आशीर्वाद

(१०७)

हे बालक तू पंडित होय ईश्वर किरपा, सो ईश्वर किरपा करे।
मन वानो में अतिबल होवे, तनु पुरुषार्थी होय॥ ईश्वर०
सब विद्यन को पढ़िके जगत् में, नीको पंडित होय॥ ईश्वर०
विद्या पढ़ै गुरुकुल में जाकर, आवे औगुन खोय॥ ईश्वर०

देहिं आशीस सकल जन बटु को, पावे कीरति सोय ॥ ईश्वर०
"इष्ट" प्रतिज्ञा हो बालक की, विद्या पढ़ै सुख होय ॥ ईश्वर०

ईश वन्दना

(१०८)

किस भाँति पाएँ आज हम जगदीश दर्शन आपका ।
कौन सी ज्योती से हो जगदीश दर्शन आपका ॥
चाँद सूरज आपको परकाश कर सकते नहीं ।
है झलकता चाँद सूरज में प्रकाशन आपका ॥
खींच लेता मन है सारे विश्व का फोटू मगर ।
एक क्षण भी कर नहीं सकता है चिन्तन आपका ॥
आप तो इसकी पहुँच से ही परे हैं अय प्रभो ।
हो सके क्योंकर भला वाँणी से वरनन आपका ॥
जड़ जगत तक ही पहुँचकर रह गईं सब इन्द्रियाँ ।
रूप क्या अनुभव करैं यह शुद्ध चेतन आपका ॥
आपके मिलने को मेरी शक्तियाँ असमर्थ हैं ।
केवल अनुग्रह आपकी, मिलने का साधन आपका ॥
कर्म बल से हीन हूँ कुछ तप नहीं भक्ती नहीं ।
किन्तु आया हुँ शरण में लेके तन मन आपका ॥
कीजिये स्वीकार मुझको 'इष्ट' मिल जाये मेरा ।
आत्मा से होय अनुभव प्रेम पूरन आपका ॥
मेरा हृदय यह शुद्ध होकर आपका चिन्तन करे ।
जिससे हो परकाश इसमें दुख-भंजन आपका ॥

यज्ञोपवीत बनाने की विधि

(१०६)

अब लीजौ जनेऊ बनाइ, उत्तम रीती सों उत्तम रीती कही।
चर्खा काति तुम कुकुरी बनावहु, नाहीं तो लीजौ कताई ॥ उत्तम०
चारि अंगुल को चौआ कहत हैं, ताको लीजौ गिनाइ ॥ उत्तम०
छानवे चौआ तार लपेटो, तिगुनो कीजै बनाइ ॥ उत्तम०
ऐंठि मांजि फिरि तिगुना करिये, धीरे से लीजौ सुखाइ ॥ उत्तम०
तिगुना करिके ब्रह्म गाँठि दै लीजौ जनेऊ बनाइ ॥ उत्तम०
"इष्ट" पवीत बनावहु हाथ सों छोटो न बहु बढ़ि जाइ ॥ उत्तम०

१—एक तार सूत का ९६ बार चार अँगुलियों में लपेटकर उसको अँगुलियों से निकालकर किसी काग़ज़ की चोंगी पर चढ़ा लो और उसी तार के साथ दोहराते जाओ; दोहरा हो जाने पर तेहरा कर लो कोई सूत टूटकर नहीं जोड़ा जाता। पश्चात् उसको भिगो दो और हाथ से कूटकर तकुली से कात लो और एक सिरा दूसरे किसी को पकड़ाकर तेहरा कर लो और उसे भी तकुली में डालकर ऐंठ दो और तोरई के सूखे फल से या किसी से मांज दो, तो ऐंठन छुट न सकेगी सब एक तार हो जायगा। अब उसको सुखाकर एक छोटी-सी लकड़ी में लपेटकर एक सिरा हाथ में पकड़कर दोनों घुटनों में तीनफंदा डालकर निकाल लो और हाथ में पकड़ते जाओ और फंदा लगाते जाओ। पश्चात् दोनों सिरे चार अँगुल छोड़कर एक हलकी गाँठ दे दो और दोनों हाथों में डालकर खींचते रहो ताकि बराबर लड़ें हो जावें। पश्चात् दोनों सिरे की एक गाँठ लगाकर दोनों सिरों में एक में एक गाँठ दूसरे में दो गाँठ देकर दोनों को ऐंठ दो और ऊपर सिरे पर एक गाँठ दे दो बस जनेऊ बन गया। इसी को ब्रह्मग्रन्थी जनेऊ कहते हैं।

ओ३म्

११—वेदारम्भ संस्कार

ब्रह्मचारी की प्रार्थना

(११०)

हे अग्नि देव तुम ही रक्षा करो हमारी।
बल दीजिये सदा ही है आस यक तुम्हारी॥ हे अग्नि०
हे आयु देनेवाले मम आयु वृद्धि कीजै।
कल्यानदा प्रभू हो यश कीर्ति हो हमारी॥ हे अग्नि०
हम में कमी जो होवे पूरा उसे करो तुम।
मेधावी हो प्रभू तुम बुधि वृद्धि हो हमारी॥ हे अग्नि०
विद्वान् जो जगत् के उपदेश देनेवाले।
वे "इष्ट" हों हमारे सब होहिं जन सुखारी॥ हे अग्नि०

गायत्री मंत्र (गुरुमंत्र)

(१११)

गुरू का मंत्र यह जानो बताया वेद ने तुमको।
यही गायत्रि कहलाती पढ़ाई जो गुरू तुम को॥ गुरू का मंत्र०
जगत् उत्पत्ति करने में नाम 'भूः' उस प्रभू का है।
औ कर्ता नाश दुःखों का बताया है 'भुवः' तुमको॥ गुरू का मंत्र०
सभी को सुःख देता है 'स्वः' आनन्दमय भगवन।
इन्हें व्याहृति कहत सब है जताया जौन है तुमको॥ गुरू का मंत्र०

सकल ऐश्वर्य का दाता जो 'सविता' नाम है उसका ।
वरेण्यं गृहण करने को बताया है ऋषी तुम को ।। गुरू का मंत्र०
शुद्ध विज्ञान मय प्रभु है दिव्य शक्ती लखो उसमें ।
अर्थ 'देवस्य' भर्गः का बताया यह गुरू तुमको ।। गुरू का मंत्र०
कहैं 'तत' हम उसी प्रभु को हृदय के बीच में धारैं ।
अर्थ है 'धीमहि' का बताया जो गुरू तुमको ।। गुरू का मंत्र०
'धियो यो नः' हमारी बुधि लगाओ धर्म के पथ पर ।
'प्रचोदयात्' प्रेरणा करना बताया है गुरु तुमको ।। गुरू का मंत्र०
लखो यह ओ३म् की व्याख्या गायत्री मंत्र में जो है ।
उसी के ध्यान में तत्पर बताया "इष्ट" है तुमको ।। गुरू का मंत्र०

ब्रह्मचारी के लिये उपदेश

(११२)

बढ़ाओ ओज को अपने इसी से तेज आता है ।
यही है शक्ति का साधन यही ऋषियों को भाता है ।। बढ़ाओ०
बने रस रक्त मांस मेदा अस्थि मज्जा बनै वीरज ।
यह चालिस दिन में बनता है अन्न प्राणी जो खाता है ।। बढ़ाओ०
जिसे यह ज्ञान हो जाता वह रक्षा वीर्य्य की करता ।
उसी वीरज से सारे जिस्म में बल ओज आता है ।। बढ़ाओ०
है विद्या धर्म की संगी यही सुख देनेवाली है ।
जो इसको प्राप्त कर लेता वही यश कीर्ति पाता है ।। बढ़ाओ०
वही फल "इष्ट" पाता है नियम ब्रह्मचर्य्य जो पाले ।
निभावे जो कोई आश्रम वह निश्चय मुक्ति पाता है ।। बढ़ाओ०

(११३)

गुरु अपने की बात सुनो ब्रह्मचारी ॥

बारह बरस प्रति वेद पढ़ो तुम, गुरु आज्ञा चितधारो ।
संध्या आदिक कर्म करौ सब, दिन में नींद बिसारी ॥ सुनो ब्रह्म०
नारि संग को दूर भगाकर, झूठ क्रोध दो टारी ।
नृत्य गान अरु वाद्य बजाना, अंजन गंध बिसारी ॥ सुनो ब्रह्म०
शुष्क अन्न मांसादि न खावो, पियहु न मद्य दुखारी ।
शारीरिक शृंगार तजहु तुम, हाथी ऊँट सवारी ॥ सुनो ब्रह्म०
ग्राम त्यागि गुरुकुल में बसिके, पितु आज्ञा चितधारो ।
लाल मिरच अरु खट्टा तीखा, खावो न सद ब्रतधारी ॥ सुनो ब्रह्म०
युक्ताहार विहार करौ तुम, विद्याशील विचारी ।
गुरु अपने की करहु वन्दना, साँझ औ प्रात सम्हारी ॥ सुनो ब्रह्म०
लघु शंकाबिन छुअहु न इन्द्री, "इष्ट" शौच ब्रतधारी ।
निज बीरज को रोकि देह में, बनहु सकल बलधारी ॥ सुनो ब्रह्म०

वेद के अंग

दो०—शिक्षा, कल्प अरु व्याकरण, ज्योतिष छन्द निरुक्त ।
अंग वेद के जानि के, सदा बनहु अनुरक्त ॥

वेद के उपांग

वैशेषिक, मीमांसा, न्याय, योग, वेदान्त ।
सहित सांख्य अवलोकिये, ये हैं वेद उपांग ॥

वेद तथा उपवेद

सो०—ऋग, यजु, साम, अथर्व, वेद ईश्वरी ज्ञान हैं ।

आयु, धनु, गन्धर्व, शिल्पकला उपवेद हैं ॥

अर्थात् ऋग्, का आयुर्वेद, यजुः का धनुर्वेद, साम का गंधर्व वेद, अथर्व का अर्थवेद (शिल्पशास्त्र) ।

वेद के ब्राह्मण

दो०—शतपथ ब्राह्मण यजुः का, ऐतरेय ऋग् जान ।
साम सु ब्राह्मण साम का, गोपथ अथरव मान ॥

बारह वर्ष में वेद पढ़ने की विधि

(११४)

पाणिनि मुनि की निर्धारी वरण शिक्षा काहिं,
एक ही सुमास में प्रयत्न ते पढ़ावेंगे ।
अष्टाध्यायी केर पाठ शुद्ध पदच्छेद युत,
एक ही बरस माहिं छात्रन बतावेंगे ।
धातु पाठ दशहू लकारन के रूप घने,
साथ-साथ दसहू क्रियान को सधावेंगे ।
लिंग अनुशासन उणादिगण पाठ भले,
प्रत्ये सुवन्त षट् मास में सिखावेंगे ।
शंका समाधान संस्कृत माहिं भाषण जो,
अव्यय उत्सर्ग औ समास भी पढ़ावेंगे ।
आठ ही महीना माहिं अष्टाध्यायी पाठ काहिं,
करिके समाप्त पुनि आवृत्ति करावेंगे ।
ता पीछे महाभाष्य मुनिवर पतञ्जलि को,
सहित गण पाठ षट मास में सिखावेंगे ।

शिक्षा व्याकरण की सम्पूर्ण योग्यता को,
चार ही वरस इस काम में लगावेंगे।
यासक मुनि की निघंटु औ निरुक्त दोऊ,
कोष कात्यायनादि, उनको बतावेंगे।
डेढ़ साल में ही वाच्य वाचक सम्बन्ध को,
यौगिक औ योग रूढ़ि भेद को बतावेंगे।
तीन ही महीना माहिं पिंगल के नियम जानि,
काव्य रचना को तीन मास में सिखावेंगे।
एक वर्ष भर साहित्य औ सिद्धान्त ग्रन्थ,
ज्योतिष, बीज, अंक गणित को करावेंगे॥
या विधि वेदांग ग्रन्थ चार ही महीना माहिं,
पूरित अध्यापक ब्रह्मचारिन करावेंगे।
दो ही बरस माहिं दर्शन उपनिषद् पढ़ि,
सूत्र ग्रन्थ ब्राह्मण सकल उर धारेंगे।
शेष दो वर्ष माहिं पढ़िके सुएक वेद,
बारह वर्ष माहिं पंडित कहावेंगे।
करि पुरुषार्थ प्रयत्न करि आठो याम,
वेदन को पढ़िके "इष्ट" देश को सुधारेंगे॥

ब्रह्मचारी को उपदेश

(११५)

गुरू की बात को मानों सिखाया आज जो तुमको।
चलो तुम चाल वैसी ही बतावे जो गुरू तुमको॥ गुरू०

दिया उपवीत जो गुरु ने बना है तीन तारों का।
ऋषी-ऋण देव-ऋण उसमें बताया पितृ-ऋण तुमको ॥ गुरू०
करो ब्रह्मचर्य का पालन कुसंगत त्याग करदो तुम।
सदा नित-कर्म को करना बताया जो गुरू तुमको ॥ गुरू०
पढ़ो विद्या लगाकर मन कि होवो वेद विज्ञानी।
पढ़ो जब तक न करना व्याह, चहै कोई कहे तुमको ॥ गुरू०
ऋषी-ऋण देव-ऋण दोनों अदा तब होयँगे विधि सों।
यही शिक्षा दयानँद की बताई जो गुरू तुमको ॥ गुरू०
न सोवो दिन में तुम कबहूँ छोड़ दो क्रोध अनृत को।
चलो सदाचार से हरदम सिखाया जो गुरू तुमको ॥ गुरू०
औ त्यागो आठ बिधि मैथुन तजो तुम द्रव्य मदकारी।
न खाओ मांस मछली को छोड़ाया जो गुरू तुमको ॥ गुरू०
छुओ ना गुप्त इन्द्री को न खेलो बालिकाओं संग।
करो ब्रह्मचर्य को धारन जताया जो गुरू तुमको ॥ गुरू०
उठो नित काल ऊषा में लगाओ मन प्रभू में तुम।
मिलेगा "इष्ट" करने पर वताया जो गुरू तुमको ॥ गुरू०

स्त्रियों के गाने में

(११६)

अरे कौन मग जइहो वरुआ कौन सो भेष बनैऔ हो।
अरे कौने उमरिया माँ पहिनौ जनेऊ कौन सो दण्ड थँबैओ हो ॥
अठएँ माँ ब्राह्मन बरुआ बनिहैं ढाक को दण्ड थँबैओ हो।
मूंजी पहिन मृगछाला हाथ लै सूत को जनेऊ पिन्हैऔ हो ॥

काशी पट्टन बरुआ जइहैं हमारे गुरुकुल वेद पढ़ैऔ हो।
गेरहें माँ छत्री बरुआ बनिहैं पीपल दण्ड थँबैयो हो॥
सन की पहनि मूँजी काले मृगछाल ले ऐसोहि भेष बनैओ हो।
ऐसे गुरुकुल जइयो रे बरुआ युद्धकला सिखि अइयो हो॥
तुम बिन देसवा बिरानो भयो है छत्री धरम पूरो करिऔ हो।
बारह बरस वैश्य बरुआ बनिहैं गूलर दण्ड थँबैयो हो॥
ऊन की मूंजी अजा खाल संग ले ऐसोहि भेष बनैओ हो।
शिल्प कला जहँ जात सिखाई तेहिं गुरुकुल तुम जैऔ हो॥
सब बालक सब कुलन माँ पढ़िहैं अपनो अधिक पढ़ि अइऔ हो।
"इष्ट" हमारो बिचार करहु सब, सब कोइ सब पढ़ि जैऔ हो॥

(११७)

वैदिक धरम की शिक्षा भरपूर हो रही है।
उसमें लगाओ मन को शिक्षा यही सही है॥ वैदिक०

उपनयन का यही फल गुरुगुल में जाके पढ़ना।
यह रीति कुछ नई नहिं ऋषियों का मत यही है॥ वैदिक०

स्वामी ने सब जताया हम भूल जो गये थे।
उनकी विधी को मानें हित के लिये कही है॥ वैदिक०

यह दण्ड जो है धारन गुरु ने तुम्हें कराया।
रक्षा करौ सदा तुम जीवन तभी सही है॥ वैदिक०

ब्रह्मचर्य युक्त होकर वेदों को नित पढ़ो तुम।
पढ़के प्रचार कीजे गुरु सीख जो यही है॥ वैदिक०

यह दण्ड औ जनेऊ गुरु ने तुम्हें दिया जो।
त्यागो कभी न इसको जब लग ये सिर सही है ।। वैदिक०
इस दण्ड के ही त्यागे स्वाधीनता छिनी सब।
अब तो सँभारो इसको निज "इष्ट" भी यही है ।। वैदिक०

स्त्रियों के गाने में उपदेश

(११८)

करिओ सोई उपाय अधिक बल बाढ़ै ।।
मीठी बानी सत्य सहित हो, बानी मा बल बढ़ि जाय ।। अधिक०
प्राणायाम से इन्द्री शुद्ध हों, मन को मल नशि जाय ।। अधिक०
शारीरिक बल बढ़ै सदा ही, मन को रोग नशाय ।। अधिक०
राममूर्ति जग प्राणायाम से, दीन्हों है देश हिलाय ।। अधिक०
याते अरोग रहन तुम चाहो, करिए कसरत बनाय ।। अधिक०
"इष्ट" बढ़ै बल प्राणायाम से, तन का रोग नशाय ।। अधिक०

(११९)

रहियो जगत् पियारे सदा तुम ।।
नित्य कर्म तुम करिऔ सदा ही, रखिऔ मन को सम्हारे ।। सदा०
मात-पिता की सेवा करना, चलिऔ नजर निहारे ।। सदा०
विद्या पढ़ि कुछ गुन को सीखो, होहु न केहु के सहारे ।। सदा०
सबसे मिलिके चलिऔ जगत् में, रहियो वचन विचारे ।। सदा०
"इष्ट" मित्र बनि सबके रहियो, मीठे वचन उचारे ।। सदा०

❀ ओ३म् ❀

१२—समावर्तन संस्कार

यह समावर्तन संस्कार उपनयन वेदारम्भ के साथ कदापि न होना चाहिये। जब तक ब्रह्मचारी गुरुकुल में अथवा कहीं ब्रह्मचर्य के साथ पढ़ता हो अर्थात् जब तक विद्या पूरी न हो जाये यह संस्कार नहीं करना चाहिये। वास्तव में यह संस्कार विवाह के आदि में होता है। समस्त कार्य्य जो समावर्तन में होते हैं वे सब विवाह के आदि में होते हैं। विद्या पढ़ने के काल में यदि माता-पिता समावर्तन अर्थात् विवाह की तैयारी कर देते हैं, तो वह विद्यार्थी कभी अपनी शिक्षा को पूर्ण नहीं कर सकता। इसीसे ऋषियों ने पढ़ाई के नियम गृहस्थ-नियम से पृथक् रक्खे थे। ब्रह्मचर्य्यावस्था में जो वस्तुएँ त्याज्य बताई गई थीं, वे समावर्तन में उत्साह पूर्वक धारण कराई जाती हैं। अतः विद्यार्थी को उचित है कि जब तक उसकी विद्या पूरी न हो जाय और वह कुछ योग्यता प्राप्त न करले, कभी विवाह करने पर राज़ी न हो। पितादि चाहे जितना कहा करें।

स्नातक के स्नान करते समय मंत्र का भाव

छिपा है सबके अन्दर जो वही तन को तपाता है।
वही नाशक है प्राणी का वही रोगी बनाता है॥ छिपा०

जो करता भंग है उत्साह पीड़ाएँ विविध पाता।
औ दूषित करता तन को शक्ति इन्द्रो भी गँवाता है ॥ छिपा०
यह अग्नी आठ विधि की जो घुसी जल की क्रिया में है।
उसी अग्नी को त्यागनकर ग्रहन जल खुद कराता है ॥ छिपा०
नहावें "इष्ट" इस जल से विधी ऋषियों ने बतलाई।
उसा को ब्रह्मचारी यह हृदय के बीच लाता है ॥ छिपा है०

स्नान करने के समय स्नातक का वाक्य

(१२१)

औषधीयुत बारि से अब कर रहा स्नान मैं।
तेल उबटन को लगा कर कर रहा स्नान मैं ॥ औषधी०
देह के सब कष्ट जाव जो सहे थे आज लौं।
कीर्ति शोभा के लिये ही कर रहा स्नान मैं ॥ औषधी०
पालन किये हैं नेम अब तक गृहस्थ बनने के लिये।
वेद का परचार कर नित पा सकूँ सन्मान मैं ॥ औषधी०
औषधी के युक्त जल से देवतों को सुख हुआ
नेत्र आदिक इन्द्रियों को कर सकूँ बलवान मैं ॥ औषधी०
हूँ नहाता इसलिये यश कीर्ति नित बढ़ती रहे।
"इष्ट" करना जो प्रतिज्ञा उसका रक्खूँ भान मैं ॥ औषधी०

स्नातक की ईश्वर प्रार्थना

(१२२)

हे प्रभो तुम सूर्य्यवत द्युतिमान हो संसार में।
रम रहे तुम भक्त के शुभ ज्ञान-गरिमा-गार में ॥

जो प्रकाशित जगत् में तिनके प्रकाशक हो तुम्हीं ॥
ऐश्वर्य्य की निधि हो प्रभो निज भक्त-पालक हो तुम्हीं ॥
दशहूँ दिशाओं में तुम्हारी प्रार्थनाएँ कर रहे ।
जानते सब आप हैं कोई कहे या ना कहे ।
शक्ति हमको दीजिये जिससे करें उपकार हम ॥
"इष्ट" उर बिच दर्श दो पावें अतुल सत्कार हम ॥

(१२३)

यह देख समावर्तन आनन्द आ रहा है ।
बल तेज ब्रह्मचारी का जगमगा रहा है ॥ यह देख०

पाकर गुरू की शिक्षा आया यह ब्रह्मचारी ।
बहु नेम पाल करके गिरहस्थ बन रहा है ॥ यह देख०

ऋषि देवऋण स्वयम ही अपना चुकाय देगा
करि ब्याह उऋण होना पित्रों से चह रहा है ॥ यह देख०

घट आठ जल सुगन्धित स्नान के लिये हैं ।
आलस्य को हटाकर स्नान कर रहा है ॥ यह देख०

मधुपर्क खाय करके त्यागी है मेखला को ।
सुन्दर बसन पहन के पितु मान कर रहा है ॥ यह देख०

शिर बाँधि पाग नीकी उर गंधयुक्त माला ।
आँखों में आज अपने सुर्मा लगा रहा है ॥ यह देख०

मुख देख आइना में कर छत्र दंड लेकर ।
जूता पहिन [illegible] रहा है ॥ यह देख०

सब भाँति यत्न करके गुरु दक्षिणा को देकर।
गार्हस्थ के लिये वह तैयार हो रहा है॥ यह देख०
सुनि "इष्ट" मित्र सारे सत्कार करने आये।
वेदी पै बैठ करके टीका करा रहा है॥ यह देख०

शिर पर पगड़ी आदि बाँधने के समय स्त्रियों का गान

(१२४)

सिर बाँधी है सुन्दर पाग शोभा कैसी, सो शोभा कैसी बनी।
वस्त्र पहिनि उपवस्त्र पहिनि के, सिर बाँधी है सुन्दर पाग॥ शोभा०
घर का बोझा सिर पर पड़ैगा, ताते बाँधी है सुन्दर पाग॥ शोभा०
आँखिन काजल भाभी लगावे, अपनो जतावे सोहाग॥ शोभा०
नेत्रों में शक्ती बाढ़े तुम्हारे, देखो तो हो बड़ भाग॥ शोभा०
शीशा मांहिं मुख अपनो निहारो, वनिगे दुलह सौभाग॥ शोभा०
छतरी औ जूता धारन करत हैं, करिहैं गृहस्थी का याग॥ शोभा०
"इष्ट" तुम्हारो यही यक होवे, सोवे न कोऊ जाग॥ शोभा०

(१२५)

दीन दयाल दया करो हम पर॥
प्रान अपान तृप्ति करु मेरे, चक्षु शोत्र सुधारौ॥ दया करौ०
पित्र तुल्य जो पूज्य योग्य हैं, तिनकी ओर निहारौ॥ दया करौ०
मेरे नेत्रों में शक्ती अधिक हो, अपनी दृष्टि सम्हारौ॥ दया करौ०
सुःख हेत हम यतन करहिं नित, मन की बात विचारौ॥ दया करौ०
सदा "इष्ट" मम इच्छा यही है, मेरी ओर निहारौ॥ दया करौ०

❀ ओ३म् ❀

१३—विवाह संस्कार

बरात आने के समय द्वार पर स्वागत ।

स्त्रियों के गाने में

(१२६)

स्वागत स्वागत स्वागत हो, अरि स्वागत स्वागत स्वागत हो ।
दूल्हा बराती सबै सजि आये, द्वार पै हाथी झूमत हो ॥ अरी०
वर परछन हित मातु चली जब, सुन्दरि मंगल गावत हो॥ अरी०
चौमुख दियना जलाइके सासुलि, आरति प्रेम उतारति हो ॥ अरी०
हित सों सखियाँ आखत डारैं, पंडित स्वस्ति सुनावत हो ॥ अरी०
द्वौ समधी मिलि करत निछावर, इन्द्र पुरी सुख राजत हो ॥ अरी०
"इष्ट" दुऔ कुल प्रेम में पागे, जिमि संगम जल धावत हो ॥ अरी०

स्त्रियों के गाने में

(१२७)

आये द्वार पै सजन बराती हो ॥ आये द्वार पै०
वर पालकि पर सुन्दर सोहै, द्वौ दिशि चँवर ढुराये हो ॥ आये०
प्रेम सों आतशबाज़ी दागत, बहु धन फूँकि लुटाये हो ॥ आये०

मंगल कलश लिये दुइ भामिनि, तापर दियना जराये हो ॥ आये०

रुचि सों सखियाँ स्वागत गावैं, नारिन जूथ बढ़ाये हो ।। आये०
अच्छत डारि प्रेम दर्शावहिं, अति हिय मोद बढ़ाये हो ।। आये०
करि सत्कार द्वार बैठारहिं, जँह पर चौक पुराये हो ।। आये०
स्वस्ति बचन उच्चरहिं पुरोहित, आशिष बचन सुहाये हो ।। आये०
"इष्ट" मिलन को प्रेम दिखायो, नर-नारिन सुख पाये हो ।। आये०

स्त्रियों के गाने में

(१२८)

आये सजन मम द्वार हैं सजनी,
छाय रह्यो अति आनँद सजनी ।
नयन थके यह जोड़ी विलोकि के,
केहि मुख मंगल गावैं सजनी ।। आये०
नेह बढ्यो मन मोद बढ्यो अति,
प्रेम में बोलो न जात री सजनी ।। आये०
द्वार पै रुचि सों चौक पुराई,
और कलश द्वै धारि सो सजनी ।। आये०
आसन डारि बरहिं बैठाई,
पंडित स्वस्ति पढ़ैं मोरी सजनी ।। आये०
सुन्दर आरति लैकर जननी,
प्रेम सों लीन्हीं उतारि सो सजनी ।। आये०
कन्या पितु सत्कार कियो कछु,
वस्त्र द्रव्य दिय भेंट सो सजनी ।। आये०

प्रेम उमंग मिले दोउ समधी,
"इष्ट" सिद्धि हुइ जात सो सजनी ॥ आये०

वर का मंडप में आना

(१२६)

आजु शुभ मंडप दूल्हा आयो ॥
शिर पर मुकुट सो तनु पर जामा, काँधे पटुका अति छवि छायो ॥
विष्टर पाद्य अर्घ सब देकर, मुख धोवाय मधुपर्क खवायो ॥ आ०
गौ दै कन्या दान करत पितु, अपनो गोत्र, सुता नाम सुनायो ॥
वर ने ग्रहण कियो अस कह कर, मन अति मोद बढ़ायो ॥ आ०
वर कन्या दोउ वस्त्र पहिन के, सन्मुख सबके आयो ।
करि परिकरमा कीन्ह प्रतिज्ञा, शुभ मंडप यश छायो ॥ आ०
वरन कन्यो प्रोहित को हित सों, स्वस्ती पाठ करायो ।
दक्षिण दिशा यक जल को कलसा, लेकर पुरुष बिठायो ॥ आ०
उत्तर दिशा यक दंड हाथ लै, रक्षक पुरुष सुहायो ।
शाखोच्चार होत दोहू दिशि, सुनि सबके हिय भायो ॥ आ०
अग्नयाधान करि समिधा देकर, पंचाहुति करवायो ।
पुनि प्रोक्षण जल चहुँदिशि करिके, वर कन्या सुख पायो ॥ आ०
आघाराज्य औ व्याहृति आहुति, स्वष्टीकृत वर होम करायो ।
प्रजापत्य अष्टाज्याहुति दै, होम प्रधान रचायो ॥ आ०
यज्ञ रास्ट्रभृत द्वादश आहुति, वर से होम करायो ।
जया होम की तेरह आहुति, पुनि तेहि करन बतायो ॥ आ०

अष्टादश अभ्यातन आहुति, पुनि अष्टाहुति भायो।
"इष्ट" यज्ञ विधि पूरन करिके, पानिग्रहन करायो ॥ आ०

इष्टर अर्घ पाद्याचमन के समय वर की प्रतीज्ञा

(१३०)

किया सत्कार जो तुमने उसे कैसे भुलाऊँगा।
प्रतिज्ञा जो करूँगा मैं उसे सब दिन निभाऊँगा ॥ किया सत्कार०
दिया आसन जो है तुमने ग्रहन करता हूँ मैं हित से।
विरोधी होय जो मेरा उसे नीचे दबाऊँगा ॥ किया सत्कार०
प्रकाशित होनें वालों में बड़ा सविता कहाता है।
उसी विधि साथियों में श्रेष्ठ हो सबको दिखाऊँगा ॥ किया०
दिया जल प्रेम से तुमने जो है अन्नादि का कारन।
सुखद बन जाय वह मुझको उसी से पग धोवाऊँगा ॥ किया०
यही जल रोग नाशक है यही आरोग्यता वर्धक।
इसी से "इष्ट" मैं सारे विकारों को हटाऊँगा ॥ किया०
इसी का नाम है जीवन, न जीवन है बिना इसके।
यही साधन प्रतिज्ञा का इसे साक्षी बनाऊँगा ॥ किया०

(१३१)

हे प्रभो आप रक्षा हमारी करैं।
नित विनय को हमारी हृदय में धरैं ॥
है मुझे आप का आसरा सर्वदा।
बुद्धि बल आयू विद्या निरन्तर बढ़ा ॥

पुत्र पौत्रादि का एक स्वामी बनूँ ।
सर्वदा वेद धर्मानुगामी बनूँ ॥
गाय पालूँ अहिंसक बनाओ मुझे ।
"इष्ट" सन्मार्ग पर नित चलाओ मुझे ॥

स्त्रियों के गाने में

(१३२)

वर कहँ दयो मधुपर्क मेरी सजनी ॥
घी अरु शहद दही मिश्रित करि, ऐसो बनायो मधुपर्क मेरी सजनी ॥
ग्रहन कियो वर देखन लाग्यो, कैसो बनो मधुपर्क मेरी सजनी ।
यज्ञ करन की इच्छा वारेन, मधु निरोग करै मेरी सजनी ॥
दिन औ राति सदा क्षण क्षण में, कोइ उपद्रव होइ न सजनी ।
जन्तु विषैले नाशन वारे, रोग नशै मधुपर्क मेरी सजनी ॥
पचिस बरस ब्रह्मचर्य्य बितावे, तब खावे मधुपर्क मेरी सजनी ।
होय विवाह वर कन्या रुचि सों, "इष्ट" हमारो यही यक सजनी ॥

वर की ओर से वस्त्रादिक अलंकार कन्या को देते समय वर के वचन

(१३३)

हे प्रिये निर्दोष होकर साथ में मेरे रहो ।
वृद्धअवस्था तक निबाहो यह बचन मेरे गहो ॥
मैं वस्त्र दूँ जो आपको उनको सदा पहिना करो ।
हो आयु वृद्धी जौन बिधि कर्तव्य सो हिय बिच धरो ॥

निज हाथ कातौ सूत को चर्खा चलावो सर्वदा ।
प्यारी विदेशी वस्त्र को केहुँ भाँति नहिं पहिनो कदा ॥
यदि हाथ से ही बीन कर पहिनो पिन्हाओ वस्त्र तुम ।
जो न सकना बीन तो निज हाथ सीना वस्त्र तुम ॥
होवे प्रतिष्ठा धन बढ़ै निज देश का यहि भाँति सों ।
कर्तव्य पथ पर अहर्निशि हम सब चलैं यक साथ सों ॥
सौ वर्ष तक जीवित रहैं औ वेद के पथ पर चलैं ।
"इष्ट" प्राप्ती हेत निशि दिन हम न काहू को खलैं ॥

वर कन्या का एक साथ प्रतिज्ञा करते हुए परिक्रमा करना (समंजन्तु विश्वे देवा) आदि मंत्रों का भाव

(१३४)

हमारी यक विनय सब से सभा में जो उपस्थित हैं ।
बने हैं गृहस्थ हम दोनों विलोको आज स्थित हैं ॥ हमारी०
हृदय दोनों के सम होवें शान्ती जल के सदृश हो ।
प्रेम हो प्राण वायू सम दुओ के मन एकत्रित हैं ॥ हमारी०
जगत् को धारने वाला प्रभू सब वस्तु में व्यापक ।
मिला है एक कण-कण में उसी में सब समाहित हैं ॥ हमारी०
हमारी आत्मा दोनों परस्पर प्रेम को धारैं ।
चलैं हम चाल यक बिधि से निहारैं जो विवाहित हैं ॥ हमारी०
जगत् में जौन विधि उपदेष्टा श्रोताओं से हित हो ।
उसी बिधि हम दुओ मिलकर "इष्ट" अपने में स्थित हैं ॥

(१३५)

हमारी रक्षा करो भगवान् । हमारी रक्षा करो भगवान् ॥
जग उपजावत दुख को नाशत, देते हो सुःख महान ॥ हमारी०
तुम्हरी कृपा निज पुरुषारथ सों, पावो मंगल मान ॥ हमारी०
पशु आदिक से सुख बहु बाढ़ै, बाढ़ै बुधि अरु ज्ञान ॥ हमारी०
बीर पुरुष उपजावन वाली, संग प्रिया शुभ जान ॥ हमारी०
निशि वासर हो जगत् भलाई, होवे विद्या दान ॥ हमारी०
जानि "इष्ट" नित विनय करूँ मैं, होवै न कहुँ अपमान ॥ हमारी०

(१३६)

जगत् के पोषक हमारे स्वामी तुम्हारी महिमा को कौन जाने ।
कृपा तुम्हारी बनी रहे जो तो देश द्रोही भी हम को माने ॥
जो भोगते दुःख हैं जगत् में वे अपनी करनी का दोष जाने ।
चलैं तुम्हारे बताये पथ पर कभी न दुख-सुख को वह प्रमाने ॥
इसी से प्रातः औ साँझवेला बने उपासक जो प्रेम पूर्वक ।
सो "इष्ट" आनँद मिलै सदा ही चलैं न कोई जगत् तराने ॥

कन्या का वाक्य (प्रमे पति याना पन्था) मंत्र का भाव

(१३७)

विनय कर जोड़ करती हूँ हमारी बात सुन लीजो ।
कृपा कर प्रेम पूर्वक सेविका को धर्म बुधि दीजो ॥ विनय०

चले पति जौन मारग पर चलूँ मैं भी उसी पथ पर ।
न कोई विघ्न हो ऐसा प्रतिज्ञा जाय हम की जो ।। विनय०
मैं सुख पाती रहूँ हरदम बनूँ पति प्राण-प्यारी मैं ।
करूँ भक्ती सदा हित सों दयानँद ने सिखाई जो ।। विनय०
पती की सेवा करने से जगत्-पति की कृपा होवे ।
मिलेंगे "इष्ट" फल सारे हृदय में धारणा की जो ।। विनय०

पाणिग्रहण के समय वर की प्रतिज्ञा (गृह्णामि ते सौभगत्वा) आदि मंत्रों का भाव

(१३८)

पकड़ कर हाथ मैं प्यारी तुम्हैं पत्नी बनाऊँगा ।
बढ़े सौभाग्य यश कीर्ती वचन अपने निभाऊँगा ।। पकड़ कर०
बुढ़ापे तक रहो सुख से हमारे साथ में रह कर ।
मेरे अनुकूल ही चलना जो मैं मारग बताऊँगा ।। पकड़ कर०
सकल ऐश्वर्य्य का दाता जगत्-पति न्यायकारी जो ।
सदा विद्वानों के संमुख प्रतिज्ञा यह सुनाऊँगा ।। पकड़ कर०
गृहस्थी के लिये तुमको दिया पितु मातु ने जब है ।
सम्हारैं उसको दोनों हम सभी को कर दिखाऊँगा ।। पकड़ कर०
तुम्हारे हाथ को पकड़ा धरम की भार्य्या हो तुम ।
पती मैं आपका हूँगा धरम की बिधि निभाऊँगा ।। पकड़ कर०
प्रभो हम दोउ मिल करके सुधारैं घर सदा अपना ।
न अप्रिय हम कहैं कबहूँ "इष्ट" अपना निभाऊँगा ।। पकड़०

(१३९)

प्राण प्यारी तुम हमारी धर्म की संगिन बनो ।
देश रक्षा हेत हम तुम दो न हों यक हो गनो ॥ प्राण०
व्याप्त जैसे सब जगह विद्युत अखिल संसार में ।
हे प्रिये वैसे हमारे हिय की तुम रानी बनो ॥ प्राण०
मैं सदा शुभ वस्त्र आभूषन पिन्हाऊँ प्रेम से ।
तुम सदा ही खुश रहो औ सन्तती उत्तम जनो ॥ प्राण०
जिस तरह रवि अग्नि विद्युत भूमि प्राण उदान हैं ।
ईश को ऐश्वर्य्य दाता वैद्य उपदेशक गनो ॥ प्राण०
शशि वनस्पति आदि से जो देश-हित होवे सदा ।
पालती तुम भी रहो पुनि श्रेष्ठ संतति भी जनो ॥ प्राण०
फैल जावै यश जगत् में बुद्धि बलयुत हो प्रजा ।
शत्रु हो कोई न कबहूँ "इष्ट" सब की प्रिय बनो ॥ प्राण०

(१४०)

तेरे रूप को देख कर वृद्धि चाहूँ ।
सदा प्रीति करके प्रतिज्ञा निबाहूँ ॥
चहों जिस तरह आपको मैं हृदय से ।
मुनासिब है तुमको चहो तुम हृदय से ॥
न चोरी से भोगूँ कोइ वस्तु सुन्दर ।
न छल राखता हूँ कभी अपने अन्दर ॥
सदा दुरव्यसन को हटाता रहूँगा ।
चरित्र "इष्ट" अपने बनाता रहूँगा ॥

(१४१)

हे प्रिये मैं ज्ञान पूर्वक जानकर करता ग्रहन ।
तू भी मुझको जानकर ही ज्ञान पूर्वक कर ग्रहन ॥
जिस तरह मैं प्रेम करता उस तरह तुम भी करौ ।
हूँ प्रशंसित जगत् में तुम्हरी प्रशंसा उर धरौं ॥
भूमि सम तुम गर्भ धारन करन में विख्यात हो ।
सूर्य्य सम वर्षा करूँ फल संतती को तुम लहो ॥
हम मिलैं दोनों परस्पर गर्भ तुम धारन करौ ।
बहु प्रजा उपजाइ के ऋतु काल की विधि उर धरौ ॥
वृद्धपन को लाँघ कर सौ वर्ष तक जीवित रहैं ।
सब प्रकार विचार सों हम सर्वदा सुख को लहैं ॥
जो प्रतिज्ञा कर चुका उसको निभाऊँगा सदा ।
"इष्ट" आश्रित जान करके नहिं भुलाऊँगा कदा ॥

शिल पर पैर रखने के समय पति का उपदेश

(१४२)

प्रिये धर्म हित यह प्रतिज्ञा करो तुम ।
उठा पैर पत्थर पे अपना धरो तुम ॥ प्रिये०
दिखाता हमें जैसे सुस्थिर यह पत्थर ।
उसी भाँति से धर्म पालन करो तुम ॥ प्रिये०
दबाता है जिस भाँति से वस्तु को यह ।
उसी विधि दबा दीजो कुविचार को तुम ॥ प्रिये०

सदा "इष्ट" अपना निहारो हृदय से।
सकल काम भानू उदय से करो तुम ॥ प्रिये०

लाजा होम की परिक्रमा के समय पति का वाक्य

(१४३)

ऐश्वर्य्य वाली हे प्रिया अन्नादि सन्तति दे हमैं।
है मधुर वाणी तुम्हारी मोह लीन्हों है हमैं॥
करलो रक्षा यज्ञ की उपजाइ सुन्दर पूत को।
भूमिवत हों गुण तुम्हारे करहु धारण गर्भ को॥
हे प्रभो स्वीकार हमने आज ही इसको किया।
छोड़कर जिस ने पितादिक नेह मुझ से है किया॥
अब रहे यह सँग हमारे कामना को बाँध कर।
"इष्ट" शान्ती दीजिये स्तुति करौं कर जोड़ कर॥

लाजा होम के समय कन्या की प्रार्थना स्त्रियों के गाने में

(१४४)

लाजा होम रचायो सखी अब॥
ईश्वर के गुन गावें सदा हम, पूजा योग मोहिं भायो॥ सखी०
अन्तर्यामी दिव्य रूप है, वेदन माँहि बतायो॥ सखी०
विनती करूँ मैं दीनबन्धु की, पितु गृह मोहिं छोड़ायो॥ सखी०
पति गृह बिच मोहिं वास करायो, कष्ट न कोई पायो॥ सखी०
भुने धान की आहुति देकर, पति सों प्रेम निभायो॥ सखी०

मेरा पती ईश्वर कृपा सों, दीर्घ जीवन पायो ॥ सखी०
"इष्ट" कुटुम्बी सब मिल करके, है धन धान्य बढ़ायो ॥ सखी०

चावल के प्रति भूसी का वाक्य
स्त्रियों के गाने में

(१४५)

लाला भये दूबाला भये हो, हम का त्यागि तुम लाला भये हो ॥
भूसी कहै सुनु चावल राजा, हमका त्यागि तुम लाला भये हो ॥
हम तो जाइ माटी संग मिलि गईं, तुम तौ तराजू में तौले गये हो ॥
हमरे संग बहु सस्ते विकत थे, हमको त्यागि तुम महँगे भये हो ॥
संग रहे लाखन उपजाये, भूमी में हम तुम बोये गये हो ॥
सस्ते विकौ चहै मंहगे बिकैऔ, हमरे बिना निर्वंशी भये हो ॥
याही वतैबे क सब के आगे, अग्नी में लाला बोये गये हो ॥
"इष्ट" अलग की रीति यही है, बिछुड़े से तुम ही खाये गये हो ॥

परिक्रमा जिसको फेरा या भाँवरि कहते हैं
स्त्रियों का भावँरि गान

(१४६)

पहिलिय भामरि घूम्यो रे लाला, जब लिय कन्या दान ।
दुसरिय भामरि पानि ग्रहन पर, घूम्यो प्रतिज्ञावान ॥
सात मंत्र पढ़ि कीन्ह प्रतिज्ञा, सब विधि गुण के विधान ।
चारि भमरि लाजा होम में घूम्यो, वर औ वधू गुणवान ॥

गाँठी जोड़ि सात करिके प्रतिज्ञा, सातहि पग चलि दीन्ह ।
सतईं भमरि यह सप्तपदी लखो, सब विधि पूरित कीन्ह ॥
वर कन्या की जोड़ी मनोहर, लक्षण लखहु प्रवीन ।
"इष्ट" काम सब पूरन हुइहैं, आशिष सबने दीन ॥

(१४७)

आज हम देखी रीति नई ॥

चतुर चितेरी नारि सुहागिन, सोलह साल भई ।
वर पच्चिस संग व्याह भयो है, तब सुख नींद लई ॥ आज०
काशीनाथ की विधि को त्यागब, जासौं विपति ठई ।
गौरी रोहनि व्याहन को फल, है दुख रूप सई ॥ आज०
मिलत प्रमान मनुस्मृति को अब, कन्या हित चितई ।
तीन बरस ऋतु काल बितावे, लायक व्याह भई ॥ आज०
शुभ आसन वर-दुलहिन बैठत, प्रेम उमंग नई ।
निज-निज मंत्र पढ़त दोऊ जन, रुचि सों भमरि भईं ॥ आज०
'इष्ट' हृदय बिच आनँद उपजत, वैदिक रीति ठई ।
करहु विवाह याहि विधि सब जन, अति सुखरूप मई ॥ आज०

वर का वधू के केश छोरना

(१४८)

सुन्दरि केश सम्हारहु, बनि गई सोहागिनि कामिनियाँ ।
हम मंडप छोरि दीहैं केश, सुनहु री गज गामिनियाँ ॥ सुन्दरि०
अब करिके सोलहु शृंगार, बनी सुन्दरि भामिनियाँ ॥ सुन्दरि०

सेंदुर लीजौ माँग भराइ, पहिनि नाक नाथुनियाँ ॥ सुन्दरि०
देसी ओढ़नि ओढ़िओ, चर्खा चलैओ गज गामिनियाँ ॥ सुन्दरि०
पायन लीजौ महावर लगाय, पहिन नूपुर बाजनियाँ ॥ सुन्दरि०
रहियो बनिके पिया की प्यारी "इष्ट" सुनि काथनियाँ ॥ सुन्दरि०

वर के साथ कन्या की गांठी जोड़ना

(१४९)

गाँठी जोड़ी लला की लली सँग में। गाँठी जोड़ी
अब लौं लाला छुट्टा घूमैं, चोटैं खाईं बहुत अंग में ॥
अब तो लाला गृहस्थ के खूटा माँ, बँधिगे नारि अपनि संग में ॥
अब तो लाला सीधे चलिहौ, जाइ न पैहौ कुसँग मग में ॥
बन्धन वारो पशु जिमि घूमत, खूटा बँधी रसरी संग में ॥
तसेहि लाला गृहस्थी में घूमौ, बन्धन लखौ अपने अँग में ॥
ऐसे चलौ होवे कुल उजियारो, अंगुली उठावे न कोउ मग में ॥
"इष्ट" विचारि लेहु अपनो जो, सोई करहु सब मिलि जग में ॥

सप्तपदी में वर की प्रतिज्ञा

(१५०)

हे प्रिये अन्तिम प्रतिज्ञा और यह हम तुम करैं।
जोड़कर गाँठी सभा में सात पग मिल के धरैं ॥ हे प्रिये०
पहिले हम तुम एक मन हो एक व्रत धारण करैं।
जन्म भर उसको निवाहैं पुत्र बहु पैदा करैं ॥ हे प्रिये०
दूसरी करते प्रतिज्ञा इस सभा के बीच में।
कल्याण के हित हम दुओ पुरुषार्थ नित उर बिच धरैं ॥ हे०

तीसरे हम धन कमाकर सुःख दें तुझको सदा।
धन बचाकर हम दुखौ जन ठीक रीती से धरैं ।। हे प्रिये०
चौथे हमारा धर्म जातो में सदा ही प्रेम हो।
साथ ही तुम भी रहो कबहू न हम दोनो लरैं ।। हे प्रिये०
पाँचवें हम धर्म पूर्वक है प्रजा उत्पति करैं।
अरु छठे ऋतुकाल को विधि आपने मन बिच धरैं ।। हे प्रिये०
सातवें सब को सखा सम मानना यक काम है।
हम दोउ होवें एक चित नित "इष्ट" की प्राप्ती करैं ।। हे प्रिये०

(१५१)

प्यारी, मेरी बात को हिये में धरि नेह करौ,
जैसे हों विचार मेरे वैसे चित धारिये।
प्रेम भरी बाणी को उचारौ निशि द्योस तुम,
बोलिबे में प्रति क्षण बचन सम्हारिये।
दोनों मिलि घर के सम्हारे काज भली भाँति,
होय न विरोध काहू बिषय में बिचारिये।
"इष्ट" मित्र सारे जन हितू बनि जात तब,
करि उपकार दीन जनन निहारिये।

मंडप में वर की प्रार्थना (सुमङ्गलीरियं)

(१५२)

विद्वान लोगो इस बधू की ओर दृष्टी कीजिये।
रूप में लावण्य मंगलदायनी लखि लीजिये ।। विद्वान०

आप सब मांगलिक दृष्टी से सदा देखैं इसे।
इसलिये सौभाग्ययुत आशीष इसको दीजिये ।। विद्वान०

सन्तती की कामना अपने हृदय में राखकर।
ताकि फिर भी आन करके दर्श अपना दीजिये ।। विद्वान०

देश हो धन धान्य से समपन्न हित होवे सदा।
"इष्ट" हो कल्यान इसका शव्द यह कह दीजिये ।। विद्वान०

(१५३)

सैयाँ की अपनी प्यारी बनो, गुण गावो सदा।
पति के पहिले तुम नित जागो, और कुसंगति से भी भागो।
अपनी सास को देवी गनो, गुण गावो सदा ।। सैयाँ०
अच्छी किताबों में मन को लगाओ, कुत्सित भाव हिये से भगाओ।
कोइ औगुन के विच तुमना सनो, गुण गावो सदा ।। सैयाँ०
अपने "इष्ट" को जाने रहो तुम, समय वृथा नहिं खोओ कभी तुम।
यक-यक क्षण अनमोल गनो, गुण गावो सदा ।। सैयाँ०

(१५४)

शुभ मंडप बीच विराजत है जो सलोनी सुता सुखमाती रहे।
वर पायो मनोहर बीर महा कमला यश को नित गाती रहे ।।
यश कीरति बाढ़िं गई सिगरे यह जोड़ी मनोहर भाती रहे।
नित "इष्ट" मनावत ईश सबै शुभ सुन्दर जोड़ी सुहाती रहे ।।

(१५५)

शुभ मंडप में सोहैं दुलह दुलही । शुभ मंडप में
बैठे हैं सब जनाती आये हैं जो बराती ।
बहु बारबार बोलैं पंडित समय सुहाती ॥
तहँ प्रेम सहित यह धुनि सुनहीं ॥ शुभ मंडप में०
दीन्हो सबन सुपासा राखी न कोइ आसा ।
पायो न केहु कलेसा जान्यो नहीं बिदेसा ॥
तनि देखौ त सम समधी मिलहीं ॥ शुभ मंडप में०
आशीष दी सबों ने जोड़ी लखी जिन्हों ने ।
अब "इष्ट" फल मिला है मंडप अजब खिला है ॥
देखि नयन फल सब लहहीं ॥ शुभ मंडप में०
दीन्हों दहेज नीको मन नेक नाँहि फीको ।
सत्कार कर सभी को भूले न हैं किसी को ॥
दोउ नीके रहैं सब यह कहहीं ॥ शुभ मंडप में०

शिष्टाचार

कन्यापक्ष से अभिनन्दन (विनती)

(१५६)

आज अपने भाग्य की हम क्या बड़ाई कर सकें ।
सीप में सागर कहौ कैसे सरासर भर सकें ॥
याँ अमित आनन्द के चारों तरफ़ सामान हैं ।
द्वार पर समधी हमारे आज प्रिय महिमान हैं ॥

विश्व में नर जन्म का हम आज ही फल ले रहे।
वर बराती सहित समधी दरश सन्मुख दे रहे॥
कर सकें तारीफ़ क्या अहसान जो हम पर किया।
दूसरे तकलीफ़ करके है हमें दर्शन दिया॥
थक रही रसना बिचारी रावरे गुन गान में।
बिक गये बेदाम हम भरपूर इस अहसान में॥
यद्यपि हमारी बहुत सी झेली ढिठाई आपने।
गुरुजनों की भाँति ही करुणा दिखाई आपने॥
पाकर दया की दृष्टि को यह थल सुहावन हो गया।
चरण-रज से यह हमारा गेह पावन हो गया॥
मग्न हो सुख में हमारा हो रहा गद्‌गद् हिया।
सहित समता नाथ हमको आपने अपना लिया॥
कर दिया कृत-कृत्य हमको है बड़ाई आपकी।
सब कहीं ढूँढ़ी मगर उपमा न पाई आपकी॥
आप तो सचमुच हृदय की बाटिका के फूल हैं।
कर सकें सन्मान क्या हम तो चरण की धूल हैं॥
है नहीं पासंग भी वैभव सकल संसार का।
क्या चुकावें हम भला बदला प्रभो उपकार का॥
इस दया के बोझ को अब सहज ढो सकते नहीं।
हैं सभी संपत्ति, पर हम उऋण हो सकते नहीं॥
अस जान, सेवा के लिये यह सेविका दी आपको।
काटकर अपना कलेजा दे दिया है आपको॥

है सुता प्यारी हमारी जिन्दगी का सार है।
किन्तु सेवा में समर्पण प्रेम का उपहार है॥
कह गये विद्वान बुधजन दान वित्त समान है।
प्राण प्यारी वस्तु देना प्रेम की पहिचान है॥
आप हैं परिपूर्ण फिर भी भेंट स्वीकृत कीजिये।
बालिका को प्रेम पूर्वक पद कमल में लीजिये॥
कह सकें अब क्या अधिक हम को अटल बिश्वास है।
खिल रही जीवन लता परिपूर्ण सर के पास है॥
"इष्ट" दाया राखिये यह बिनय वारम्बार है।
हम सभी को आपही के प्रेम का आधार है॥

(१५७)

तुम आये हो द्वार हमारे सखा अपनाइ हमैं दई कीर्ति बड़ाई।
दुग्ध मिलवत है जल को तेहि भाँति मिलायो न जानी छोटाई॥
प्रीति की रीति निबाहिबो ठीक, कि दूध जले जल पहिले नशाई।
ताते लहौ यश दुग्ध समान हो "इष्ट" चहूँ जल की समताई॥

(१५८)

हमारी यक विनय सुनलो जगत्-पति नाम है तेरा।
कृपा जो है करी हम पर बनाया अपना है चेरा॥ हमारी०
यह जोड़ी खुश रहे हरदम सभी से मेल हो इसका।
परस्पर दोनों हों यकदिल प्रतिज्ञाकर लिये फेरा॥ हमारी०

दुओ की ज्ञान बुद्धी को बढ़ाओ प्रभु कृपा करके।
कि आश्रम सब करैं पूरे है केवल आसरा तेरा ॥ हमारी०
औ जाने देश जाती को बढ़ावें अपने वैभव को।
करैं उपकार दुनिया का प्रभू को चित्त में हेरा ॥ हमारी०
न होवे काहु सों झगड़ा "इष्ट" सबके बने रहना।
भुलायें नहिं प्रतिज्ञायें बचन यह मान ले मेरा ॥ हमारी०

बरपक्ष की ओर से शिष्टाचार

(१५६)

सुन्दर सुहावन ठाम दीन्हों वास हित सुखदान जो।
निशि द्योस सब विधि प्रेम पूर्वक है कियो सन्मान जो ॥
वर्णन करन में थकति जिह्वा होत लखि व्यवहार को।
इच्छानुकूल मिलैं सदा सब वस्तु बारहिंबार सो ॥
ज्योनार बहु विधि सों दियो सब भाँति सब पूरित भये।
अवलोकि सम सम्बन्ध को सब मित्रगन मोहित भये ॥
हम आज लज्जित होत हैं व्यवहार तुम्हरो देखि के।
वर्णन करत में थकत जिह्वा दी बड़ाई पेखि के ॥
सुन्दर सुहावन ठाम दै सत्कार बहु विधि सों कियो।
दै भोज नाना भाँति हित सों सकल चित हर्षित कियो ॥
शुभ देखि जोड़ी बर बधू की मगन चित सबको भयो।
"इष्ट" यकस्वर सब कहत बहु भाँति है आदर दियो ॥

ज्योनार, मंगल, गारी

स्त्रियों के गाने में

(१६०)

तुम तो हो अति ज्ञानी २ कीजौ सुजार दया करके ॥ तुम०
हमको विद्या पढ़ाओ २ ज्ञान की बात बता करके ॥ तुम०
ब्रह्मचर्य्य बढ़ाओ २ बाल विवाह मना करके ॥ तुम०
बुढ़वा व्याह रोकाओ २ कन्या को मोल मना करके ॥ तुम०
चाल गहना छोड़ाओ २ दान दहेज मना करके ॥ तुम०
ज्यादा खर्च बचाओ २ वेश्या का नाच हटा करके ॥ तुम०
बुरी चाल छोड़ाओ २ फूहड़ गारी मना करके ॥ तुम०
दुखिया को नाहीं सतावो २ नीची जाति बता करके ॥ तुम०
"छू" अपनो बनाओ २ समय ठीक बिता करके ॥ तुम०

(१६१)

नमस्ते नमस्ते नमस्ते सकल जन, सेवा में हम आई जी ॥
यज्ञ हवन से देव गन खुश हुइ हैं, वायू दे पहुँचाई जी ॥
पाहुन बनि आप आये भवन में, देके असीस घर जाई जी ॥
अपनी बुआजी को अच्छे समुझाइ दीजै, छोड़ि दें विदेसी पहिराईजी
नाहिन ख्याल करि मन पछितैहौ, भारत की नैया डूबि जाई जी ॥
विद्या पढ़ैओ नीकी शिक्षा दीहौ, गहने को छोड़ाई सीखाई जी ॥
रीति दहेज की तुम छोड़वैओ, बाल विवाह रोकाई जी ॥

कन्या को मोल रोकवैओ मेरे लाला, बुढ़वा विवाह हटाई जी ॥
आतशबाज़ी मति दागौ साजन, रंडी को नाच छोड़ाई जी ॥
नीकी चाल तुम चलिऔ लालन, होय न कबहूँ हँसाई जी ॥
"इष्ट" मित्र जो संग मँह आये, करि न सकौं सेवकाई जी ॥

(१६२)

तुम आये बिपति सहि साजन, हमरे दुआर जी।
तुम्हरे योग्य हम तनिकहु नाहीं, करि ना सकत सत्कार जी ॥
सेवा करन को बेटी दई तुम्हें, लीन्हौं है करि इकरार जी।
अब मिलि दोनहु नीके चलिऔ, होहु न केहू के भार जी ॥
नैहर के सम ससुरो जीनऔ, माता मनिओ सास जी।
तीर परोसी से तनिक न लड़िऔ, रखिहहु निज विश्वास जी ॥
"इष्ट" मित्र संग नेह निबहिऔ, करिऔ मेल बिचार जी।
ऐसे चलौ जग होवे बड़ाई, ठीक करहु व्यवहार जी ॥

(१६३)

जेवन बैठे सुजन सखि आँगन सखियाँ मंगल गावहिं हो।
अति गुनवान धरम रुचि समधी, बैठे सकल संग भावहिंहो ॥
अति गुन आदर दूल्हा बैठो, रुचि सों भोजन खावहिं हो।
पूरी कचौरी पकवान बनो है, लै-लै आँगन धावहिं हो ॥
लड्डू, बरफ़ी और अमिरती, रसगुल्ला रसदार बतावहिं हो।
पापर दालमौठि सब परसी, गर्म हि गरम बनावहिं हो ॥
नाना भाँतिन भाजी बनाई, पुनि पुनि सो परसावहिं हो।
दही औ बूरा भली विधि परसैं, राइता औ सोंठि जनावहिं हो ॥

लै लै वस्तु परासन वारे, लेहु-लेहु गोहरावहिं हो।
भोजन पाइ तृप्त सब हुइ गये, लै झारी अँचवावहिं हो॥
पान का बीरा चबाइ सकल जन, आशिर्वाद सुनावहिं हो।
"इष्ट" मित्र सब प्रेम करत हैं, निज निज आसन जावहिं हो॥

पौराणिक आख्यायिका 'राम गाली'

(१६४)

जनकपुरी की नारी कहति हैं, रामलला सुनौ गारी हो।
तुम्हरे बाप जेहि प्रीति करत हैं, कुलटा है वह नारी हो॥ राम०
अनगिनतिन पुरुषन संग कीन्हो, सुनहु लाल कथा सारी हो।
सुन्दर यौवन रतन सजे अँग, चंचल चित्त कुनारी हो॥ राम०
अंग में वाके सुगन्ध भरे हैं, रुचि सों केश सम्हारी हो।
देखि रूप हरिणाकुश लै गयो, अपनो जोर करि भारी हो॥ राम०
ताको मारि बाराह जी लै गये, देखि नारि सुकुमारी हो।
रहति रहति वह विह्वल हुइ गई, प्रथु फिरि अंग सम्हारी हो॥राम०
करि शृंगार भली बिधि तहँ पर, लीन्हो सब कछु झारी हो।
प्रथु परलोक भये पर तेहिने ढूढ्यो, पति अनुहारी हो॥ राम०
हिरण्य कशिप तेहि स्वामि बनायो, भोगी सम्पति सारी हो।
ताहि मारि नरसिंह जू लै गये, दई हरि चन्दहि नारी हो॥ राम०
जानि दुष्ट हरि चन्द ने त्यागी, विश्वामित्र दै डारी हो।
तपसी जानि त्यागौ विश्वामित्रहि, बलि की बनी वह नारी हो॥राम०
बलि को बाँधि छलि बावन छीनी, इन्द्रहि दीन्ही सो नारी हो।
इंद्रहि छोड़ि अर्जन पति कीन्हो, सहस भुजा लखि भारी हो॥राम०

सहसबाहु जमदग्नि को मार्यो, घूमत लै सँग नारी हो।
परसराम तेहि मारि गिरायो, नाश कर्यो कुल भारी हो ॥ राम०
इकईस बेर नहवाइ रुधिर सों, बिप्रन दीन्ह सम्हारी हो।
तुम्हरे पिता तेहि नारि बनाई, बिप्रन थूकि निकारी हो ॥ राम०
अबहूँ घात लगावत बैठे, रावण आदि बलकारी हो।
याहि लाज हम मरियत लाला, ऐसी तुम्हारी महतारी हो ॥ राम०
अब और को मुख यह निरखि न पावै, रखियो लाज हमारी हो।
अब तो भयो तुमसे नातो हमारो, राखहु "इष्ट" सम्हारीहो ॥राम०

(१६५)

शिक्षा स्वामि दयानन्द की फैलि जग बीच गई।
सबने अपनाई हो जानि यक रीति नई ॥ शिक्षा०
बहु देश सुधरि गयो हो कि विद्या वृद्धि भई।
गुरुकुल बहु खुलि गये हो वेद की रीति सही ॥ शिक्षा०
विधवन दुख मेट्यो हो बताय बिधि व्याह दई।
सब जातिन सीख्यो हो एक गुरु मंत्र वही ॥ शिक्षा०
सद् मार्ग बतायो हो बुद्धि अनुकूल भई।
निज "इष्ट" सम्हारहु हो ईश की शरण लई ॥ शिक्षा०

(१६६)

समधी पग धोवौ हो बराती आये सन्त जना।
मन मंडप आयो हो संग गुरु ज्ञान घना ॥ समधी०
सब हिलि-मिलि आये हो नियम बुधि संग घना।
धन थार परोसै हो योग्य पकवान बना ॥ समधी०

इन्द्रियगण पत्तल हो लेहिं सब मोद मना।
अनुभव के भोजन हो खात भई भूख फना॥ समधी०
शान्ती सुख जेवें हो सहित अनुराग घना।
धृति बुधि मति कीर्ती हो सहेलिन राग मना॥ समधी०
श्रद्धा सिद्धि गावें हो शान्ति ऋधि आइ धना।
सुनो सन्त शील गुण हो क्यों तुमने ज्ञान हना॥ समधी०
माया मातु तुम्हारी हो बिआहो पंच जना।
उनके संग पच-पच हो पटकि के यौवन तना॥ समधी०
आपै आपु सब चाहैं हो परस्पर युद्ध ठना।
तिनके तुम जाये हो वहां व्यभिचार घना॥ समधी०
बोया प्रथम सुधारहु हो मिलै सुत ज्ञान छना।
ऐसी विधि जेंवौ हो रहै नहिं एकौ कना॥ समधी०

(१६७)

महलाइति उजरी हो हवेली अजब बनी॥
मैलो घर कबहूँ ना राखौ यहही ऐहै काम।
हाड़ मांस मल मूत्र भरोहै केहि बिधि सुख का धाम।
हवेली अजब बनी॥ महलाइति उजरी हो०॥
इस के हैं दस दर्वाजे, दश इन्द्री गनि लेहु।
पुरुष आत्मा भीतर बैठो करि माया संगनेहु॥
संग लीने पाँचौ जनी॥ महलाइति उजरी हो०।
बनि दीवान बुद्धि तहँ बैठी मन मंत्री यक ठौर॥

मन की गति केहुँ पार न पाई लखि न सकै कोउ दौर।
करे नित हिय माँ ठनी ॥ महलाइति उजरी हो० ॥
परम पिता है देखत बैठो अपने सुत को काम।
नज़र बचाइ "इष्ट" संग भगि हौ छूटि जाइ यह धाम ॥
न जैहै संग एकौ जनी ॥ महलाइति उजरी हो० ॥

(१६८)

हमैं गुरुअन लूट्यो हो, छीनि लई बुद्धी की मनी।
मेरे ज्ञान की आँखिन हो, बाँधि दइ पट्टी घनी ॥ हमैं०
पितु प्रेम छोड़ायो हो, बनायो मोहिं पंथ धनी।
हम बहु दिशि घूमे हो ढूँढ़ि फिरे पितु जननी ॥ हमैं०
गुरु मंत्र छोड़ायो हो, सधाइ दइ गुरु जपनी।
हम भरमत घूमे हो, मिली नहिं अन्न कनी ॥ हमैं०
बिच मिलिगे दयानंद हो, हमारी सब बात सुनी।
पट्टी ज्ञान की आँखिन हो, खोलि दइ बात बनी ॥ हमैं०
तब ऋषि वर दीन्हीं हो, अँगूठी बुद्धि मनी।
"इष्ट" लखि मारग हो, मिले जाइ पितु जननी ॥ हमैं०

(१६९)

इन्द्रियगन सारी हो, कि मन सँग भूलि गई ॥
जब पायल बाजी हो, कान धुनि जानि लई।
सँग आँखिन दीन्हो हो, पगन पहुँचाय दई ॥ इन्द्रिय०
तब वाणी बोलति हो, मधुर धुनि प्रेम मई।
तहँ बाँहैं बढ़ि गई हो, अँग लिपटान चही ॥ इन्द्रिय०

आई बारी काम की हो, प्राण नहिं गंध सही।
तब बुद्धी जागी हो, जाइ मन बाँह गही ॥ इन्द्रिय०
तेहि खैंचि लै आई हो, आत्म ढिंग दौरि गई।
तब प्रान कोठरिया हो, जेल मन काहि दई ॥ इन्द्रिय०
चक्की प्राणायाम की हो, जबै मन पीसि लई।
तब स्थिर हुइ गयो हो, "इष्ट" की शरण लई ॥ इन्द्रिय०

(१७०)

तनि बात बिचारहु, अपनो धर्म करौ जी करौ ॥ तनि०
प्रातःकाल निहारहु, उठि के शौच करौ जी करौ ॥ तनि०
जग सिर्जनहारो, हिय बिच ओ३म् धरौजी धरौ ॥ तनि०
करि दातुन दाँत सम्हारहु, पुनि स्नान करौजी करो ॥ तनि०
संध्या उपासन धारहु, अग्नी होत्र करौ जी करौ ॥ तनि०
"इष्ट" अतिथि बिचारहु, तेहि सत्कार करौजी करौ ॥ तनि०
भोजन जबहिं बनावहु, वैश्वदेव करौजी करौ ॥ तनि०
पितु मातु निहारहु, जीवित सेवा करौजी करौ ॥ तनि०
पँचयज्ञ सम्हारहु, नित ही कर्म करौजी करौ ॥ तनि०

(१७१)

यक अबला कहत पुकारीजी, पति बनिगे तुम व्यभिचारीजी ॥
वेश्या को नित जेवर कपड़ा, राखत जाइ अगारीजी।
अपनी नारि को गारी सुनावत, जेवर लेत निकारीजी ॥
निज तिरिया रोटी को तरसै, तुम वेश्या घर डारीजी।
वेश्यन नाच हेत बोलवायो, बनि गये आज्ञाकारीजी ॥

जँह कहुँ नाच होय वेश्या को, बैठत जाय आगारीजी।
पुत्र हाथ रुपया दिलवावहि, दान समुझि के भारीजी ॥
ब्रह्मचर्य करि नाश सुतन को, पैर कुल्हारी मारीजी।
बल बुधि विद्या धन सब खोवें, बनि गये आप भिखारीजी ॥
अब तनि अपनो "इष्ट" विचारहु, जिय को भाव निकारीजी।

(१७२)

तुम सुनिऔ कान लगाय, गारी-गाइ सुनावहिं हो।
अपनी बहिन को नाहिं पढ़ायो, मूरख दीन्हो बनाय ॥ गारी०
बुआ तुम्हारी पहिने विदेशी, खासी मेम दिखाय। गारी०
देश प्रथा को त्यागन करिके, टेबिल बैठि के खाय ॥ गारी०
तुमहूँ खासे साहब बने हो, सिर पै टोप लगाय। गारी०
पिता तुम्हारे सीधे-साधे, तैसिय मातु लखाय ॥ गारी०
फिरि तुम ऐसे कैसे बनि गये, संशय हमहि देखाय। गारी०
विद्या पढ़िबो कीर्ति बढ़ैबो, है सब कहँ सुखदाय ॥ गारी०
फैशन विदेशी नाहिं बनावौ "इष्ट" कहैं समुझाय। गारी०

(१७३)

आर्य समाज की बात को मनिऔ लोगौ ॥
स्वामी दयानंद नियम बनाये, तिनके ऊपर चलिऔ लोगौ ॥
जीवित श्राद्ध बतायो ऋषि ने, प्रेम सहित सब करिऔ लोगौ ॥
मरे पुरुष को कछु ना पहुँचै, चाहे न्योति खवैऔ लोगौ ॥
पूजा को सत्कार बताया, पूजा जीवित करिऔ लोगौ ॥
माटी पाथर धातु की मूरति, कैसे इनहिं खवैऔ लोगौ ॥

मात-पिता गुरु पूजा कीजै, इनकी बात विचारिऔ लोगौ ॥
छूत न मानहु उजरे मनुज की, इनको निकट बिठैऔ लोगौ ॥
दुष्ट स्वभाव के जो नर-नारी, इनको संग बचैऔ लोगौ ॥
"इष्ट" करहु उपकार सकल जन, मन चाहा फल पैऔ लोगौ ॥

विवाह के पश्चात् विदाई के समय

(१७४)

विदाई कर रही सखियाँ औ कहती भूल मत जाना।
बुराई जो हुई हमसे उसे मत चित्त में लाना ॥ विदाई०
चलीं तुम छोड़ हम सबको, खेलौना खेल जो खेलीं।
हमैं दुखियारी कर छोड़ा, मुनासिब था अलग जाना ॥ विदाई०
हमारे प्रेम-बन्धन से, हृदय कैसे छोड़ा लोगी।
सभी कुछ खेल बचपन के हमारे साथ इठलाना ॥ विदाई०
सदा फूलो-फलौ जगदीश से हम यह मनाती हैं।
बनो निज स्वामि की प्यारी औ अपनी सास अपनाना ॥
हमें क्या तुम चली जाओ दिलाकर धैर्य निज माता।
दुखी माता की आँखों का नयन जल पोछती जाना ॥ विदाई०
सखी तुम छोड़कर हमको बहुत ही दूर जाती हो ॥
रहे जो याद मेरी "इष्ट" को तुम भूल मत जाना ॥ विदाई०

(१७५)

सखि गुड़ियन खेलि के मानी तबै।
जो है रीति विवाह की जानी सबै ॥

अब साँचे के खेलन जाय फँसी।
खेले झूठे दुलह दुलहीन जबै ॥
सुख पाइके भूलि न जैऔ हमैं।
लिखि पत्री पठैऔ हाल सबै ॥
हम जन्म की संगिनि हैं तुम्हारी।
लहि "इष्ट" छिपैऔ न बात अबै ॥

(१७६)

अरी बेटी तू मैंके से ससुर घर को बिदा होगी।
अकेली जायगी तूही न बाबुल सँग न माँ होगी ॥ अरी०
नई नगरी नई बखरी नई धरती नया अम्बर।
नया दाना नया पानी नई वहँ की हवा होगी ॥ अरी०
नई सासू नए पीतम जिठानी ननद देवरानी।
न नैहर की वहां कोई बहिन भावज बुआ होगी ॥ अरी०
वहां बीतैगी जो तुझ पर तुझे सब झेलनी होगी।
पढ़ा सीखा जो कुछ यहँ पर तेरे ग़म की दवा होगी ॥ अरी०
लड़ाका सास भी मिलतीं सुघर सासू भी होती हैं।
करे सेवा तो ले मेवा न माँ की मामता होगी ॥ अरी०
ससुर औ सास की सेवा सुजन सत्कार पति अपना।
करे मानेगी भुगतैगी सिवा हाँ के न ना होग ॥ अरी०
गृहस्थाचार सद्व्यवहार कुल मर्य्याद का पालन ;
सभी से मिल के रहना तुम हुनर बिन बूझ क्या होगी ॥ अरी०

बिदाई के समय वर कन्या का रथ (गाड़ी) में बैठने पर स्त्रियों का गीत

(१७७)

रथ पर सोहैं लाला हमारे, दहिनी ओर बिठाए बधू को ॥
दुइ घोड़ा जेहि रथमाँ जुते हैं, अच्छी भाँति लै जावें बधू को ॥
देखि लोग सब आशिष देवें, पति के घर सुख होवे बधू को ॥
घर की स्वामिनि पति की प्यारी, होय असीस हमारी बधू को ॥
भूषण वसन सभी तन धारे, मग मारहि औ निहारे बधू को ॥
चोर आदि बन हिंसक प्राणी, तिनसे भय नहिं होवे बधू को ॥
पहुँचो लाला अपने भवन में, लीहै मातु उतारी बधू को ॥
"इष्ट" मित्र सब देखन आये, देवें भेंट निहारी बधू को ॥
ईश्वर कृपा सौभाग्यवती हो, आशिष दे घर जावें बधू को ॥

बधू के पति-भवन में प्रवेश समय पर कर्तव्य

(१७८)

पहिले यज्ञ करावो बहू घर आई ॥
कुन्ड खुदावो आसन बिछावो, प्रोहित को लीजौ बुलाई ॥
संस्कार विधि सम विधि करिये, दाहिन बधू बिठाई ॥
पति गृह में इसे धैर्य्य मिले सदा, हो परिवार भलाई ॥
न्यायकारी परमेश्वर कृपा से, रहे घर प्रेम निभाई ॥
ऐसो सुभाव बनावे बहू यह, नैहर दुख नशि जाई ॥

इस घर को बहू जानै न दुसरो, हित सों लेइ अपनाई ॥
घर का "इष्ट" बिचारि रहे यह, होवे ग्राम बड़ाई ॥

एक चतुर बहू का पौराणिक सास को समझाना देवी पूजन में

(१७६)

बहुअरि देवी को पूजन आज चलो ॥
तुम आई हो आज नये घर को,
बहुअरि देवी को पूजन आज चलो ॥ बहुअरि०
बहु अरि सोचत काह खड़ी मग में,
कुल रीति निबाहन बेगि चलो ॥ बहुअरि०
कर जोड़ के सास से बात कही,
डर लागै हमै घर लौटि चलो ॥ बहुअरि०
यह शेर निकारे जो जीभ खड़े,
खाइ जैहैं हमैं घर लौटि चलो ॥ बहुअरि०
हँसि सासु कहे बहुअरि भोंदी भई,
यह हैं पत्थर के तुम जानि चलो ॥ बहुअरि०
यह न खाइ सकैं केहु भाँति बहू,
अब नांहि डरौ तुम वेगि चलो ॥ बहुअरि०
हमने जानी थी बुद्धिमती हो बहू,
तुम पत्थर शेर डरी हो चलो ॥ बहुअरि०
चलि माँगहु देविन "इष्ट" बहू,
दर्श कीन्हे से होत सभी को भलो ॥ बहुअरि०

(१८०)

देवी पत्थर की नहिं बात करैं ॥

माता केहि विधि माँगू देवि पत्थर की नहिं बात करैं
देखि के शेर डरी जब मैं, समुझायो है पत्थर के नहिं चोट करैं ॥
जब पत्थर शेरन खायो हमैं नहिं, तब देवी कहौ कैसे गोद भरैं ।
हम सासुजी पैर तुम्हारे परैं, और पूजा तुम्हारी हिये माँ धरैं ॥
अपनी कोखि को जायो दयो जी हमैं, इच्छा वेही हमारी पूरी करैं ॥
मोहिं दीहैं कहा यह देवी सुनौ, किमि पत्थर मूरति पैर पर ॥
जब सास बहू केरि बात सुनी, मन बोध भयो तब लौटी घरैं ॥
सास बहू केरो प्रेम भयो अति, "इष्ट" मिले फल चाह करैं ॥

बहू को वृद्धों का उपदेश

(१८१)

तुम्हारी दृष्टि प्रिय होवे करो पुरुषार्थ निशिवासर ।
न बनना पति विरोधिनि तुम करै सब कोइ हो आदर ॥ तुम्हारी०

हृदय पावन तुम्हारा हो न कोई दोष हो अन्दर ।
जनौ बालक सदा ऐसा स्वभाव गुण कर्म हो सुन्दर ॥ तुम्हारी०

सम्हारो घरके सामां को रहो घर स्वामिनी बनकर ।
अतिथि सत्कार करने में रहो तुम प्रेम की आगर ॥ तुम्हारी०

कभी पति प्रेम को मनसे भुलाना है नहीं अच्छा ।
जो चाहो "इष्ट" फल लेना पती पूजा करो सादर ॥ तुम्हारी०

गृहस्थाश्रम के कुछ उपदेश

(१८२)

एक की एक से कामना नित रहैं।
हों दुओ ब्रह्मचारी सबै सुख लहैं॥ एक की०
एक चित होके दोनों गृहस्थी बनें।
और सन्तान उत्तम जनैं सुख चहैं॥ एक की०
जो प्रतिज्ञा करैं ताहि विधिवत् निबाहें।
करैं ऐसा कर्तव्य दुख न सहैं॥ एक की०
सदा वीर्य्य रक्षा की विधि को सुधारैं।
दुऔ बनके ऋतुगामी जीवन लहैं॥ एक की०
नियम में चलैं आयु सौ वर्ष भोगैं।
धरम नाहिं छोड़ें विपत्ती सहैं॥ एक की०
जो सन्तान होवें बनै "इष्ट" सबके।
गृहस्थी में दोनोंहि मिलके रहैं॥ एक की०

स्त्रियों के गाने में

(१८३)

सखि सुधि लीजौ धरम अपने की॥
सोते-सोते समय बितायो, अब तो त्यागो सुरति सपने की॥
पति जीवित उपवास न करिये, छोड़ो आदत तन तपने की॥
नाहक फिरौ तुम तीरथ नहाती, करती हो चिन्ता धरम घटने की॥
केवल पतिव्रत धर्म सम्हारहु, सेवा करहु तुम पति अपने की॥
अपनी सासु की सेवा करहु तुम, युक्ती सोचौ कछू बचने की॥

दसवाँ भाग बचावन रीती, सीखो कसती खरच करने की ॥
अपनो "इष्ट" बनावहु सखी तुम, होय विजय मेरे ही मन की ॥

(१८४)

प्रभू की बात को मानो बनाओ संगठन अपना ।
चलो सब एक मारग पर एकसा हो चलन अपना ॥ प्रभू की०
तुम्हारे जल के पीने के और असनान करने के ।
सभी के एक हो स्थल औ सबसे हो मिलन अपना ॥ प्रभू की०
तुम्हारा खाना औ पीना एकसा एक सँग में हो ।
एक ही हो सवारी सब एकसा हो बचन अपना ॥ प्रभू की०
तुम्हारा धर्म यक ही हो एकही धर्म पुस्तक हो ।
सभी का एक अभिवादन होय सच्चा सखुन अपना ॥ प्रभू की०
परस्पर हित से तुम रहना, करौ उपकार दुनिया का ।
तुम्हारे भाव उत्तम हों न होवे कोउ पतन अपना ॥ प्रभू की०
तुम्हारा "इष्ट" एकही हो करौ पुरुषार्थ सब मिलकर ।
न होवे कोउ बाधक अब बनाओ शुभ चलन अपना ॥ प्रभू की०

स्त्रियों के गाने में

(१८५)

जो माने प्रभू की आज्ञा उसे सुख होवै ॥
जौन भाँति सुख चाहौ सदा तुम, दुखना चहौ कबहूँ केहू दम ।
ताहि भाँति तुम जानौ सबै सुख होवै ॥ जो माने प्रभू की०
अपना हृदय तुम उत्तम बनाओ, करि उपकार सबै दिखराओ ।
कीर्ति होवै जगमें तबै, सुख होवे ॥ जो माने प्रभू की०

न्याययुक्त नित करिये कारज, घूमौ जगमें बनि के आरज।
लखि विद्वानन मस्तक नवै, सुख होवै॥ जो माने प्रभू की०
विद्या दान करौ निशिवासर, दीन दुखिन को करिये आदर।
समरथ भरि सुख दीजै सबै, सुख होवै॥ जो माने प्रभू की०
अपनो "इष्ट" विचारे रहौ तुम, चित्त लगाओ काम में हरदम॥
जीवन को फल पावे तबै, सुख होवै॥ जो माने प्रभू की०

(१८६)

जीवन बिताओ सौबरस तक कर्म को करते रहो।
त्याग दो आलस्य को शुभ कर्म हिय धरते रहो॥ जीवन०
कर्म उत्तम जो करोगे दुख निकट आवे नहीं।
तुम सदा पुरुषार्थि बन के नित कर्म करते रहो॥ जीवन०
उन्नती अपनी करो अरु दूसरों की भी चहौ।
वेद के अनुकूल ही शुभ आचरन करते रहो॥ जीवन०
द्रव्य मादक त्यागकर आहार शुभ करना सदा।
"इष्ट" नित आनन्द से व्यवहार सद् करते रहो॥ जीवन०

(१८७)

गृहस्थ आश्रम में रहके यारौ, सदाहि अपना चलन सम्हारो।
रहो परस्पर जो मेल करके, तो सुःख जीवन का है निहारो॥
जहाँ कलह, नारि नर में होती, वहाँहि भंडार दुःख का हो।
मिलै न आनन्द केहु छिन में, तनिक न सुख हो जरा बिचारो॥
सदा पिता माता स्वामि देवर, अवश्य सत्कार कर दिखावे।
ला सुन्दर गहना औ वस्त्र उत्तम दे नारियों को जगत् सुधारो॥

जहाँ हो सत्कार नारियों का तहाँ रमैं देवगण सदा हीं।
औ नारि पूजा जहाँ न होवै तहाँ न फल प्राप्ति हो निहारो ॥
हैं शोक करती जहाँ पै नारी विरह की चिन्ता में जी जलातीं।
औ देती हैं शाप नित सबों को महान् दुःख सह करें किनारो ॥
स्वदेश औ घर विनाश होता जहाँ सहे दुःख ऐसी नारी।
जरा तो सोचो है "इष्ट" क्या यह सदा सहें नारि दुख बिचारो ॥

(१८८)

जो ऐश्वर्य अपना पुरुष वेगि चाहैं।
वह सत्कार कर नेह नारी निबाहैं ॥
इन्हीं से है रचना जगत् की निहारो।
इन्हें दुःख देकर कहाँ सुख विचारो ॥
यही धर्म की नाव को पार करतीं।
यही देश हित वीर बालक उपजतीं ॥
इन्हीं के भरोसे रहें तीन आश्रम।
बनाती यही गृहस्थ हैं श्रेष्ठ आश्रम ॥
कि जेहि भाँति नदियाँ मिलैं सिन्धु में जा।
गृहस्थी दुआरे सभी भागते जा ॥
लहौ "इष्ट" फल बात मेरी बिचारो।
न हो कष्ट नारीन को विधि सम्हारो ॥

(१८९)

पती से प्रेम करने पर, तुम्हारी अति भलाई है।
उन्हीं से फल चहौ हरदम इसी में ही बड़ाई है ॥ पती से०

बिना स्वामी की आज्ञा के, न जाओ तुम कहीं बाहर।
न बैठो तुम बुरी संगत, इसी में ही भलाई है ॥ पती से०
न द्वारे पर खड़ी रहना, न ताको तुम झरोखों से।
असत् बकवाद मत करना महा दूषण लखाई है ॥ पती से०
पती आज्ञा सदा मानो वचन मीठे उचारो तुम।
बनो पति-प्राण-प्यारी तुम प्रीति करके देखाई है ॥ पती से०
बनाओ, "इष्ट" तुम सबको चलन अच्छा दिखा करके।
दुओ कुल की बढ़े शोभा, रीति उत्तम लखाई है ॥ पती से०

(१६०)

करौ नित्य कर्म सुखदाई, चहो जीवन केरि भलाई ॥
ऊषाकाल में उठकर भाई, शौच स्नान करो सुखदाई।
पुनि आसन बिछवाई ॥ करौ नित्य कर्म सुखदाई०
सिद्धासन को तुरत सम्हारहु, संध्या मंत्रन को उच्चारहु।
नित प्राणायाम अधिकाई ॥ करौ नित्य कर्म सुखदाई०
अग्न होत्रहू नितही करिये, वैश्यदेवहू हिय में धरिये।
जो विधि ऋषी बताई ॥ करौ नित्य कर्म सुखदाई०
बहुरि अतिथि सत्कार निहारौ, पित्रयज्ञको हियै विचारौ।
जीवित श्राद्ध लखाई ॥ करौ नित्यकर्म सुखदाई०
या विधि पंचयज्ञ को करके, ईश्वर की महिमा उर धरके।
"इष्ट" नेम नित भाई ॥ करौ नित्य कर्म सुखदाई०

❀ ओ३म् ❀

१४—वानप्रस्थ संस्कार

(१६१)

दो०—स्वेत बाल हों शीस के, शिथिल शरीर लखाय।
सुत के सुत हुइ जाइ जब, तबहिं बनो बनि ज्ञाय॥
नारिहि करि निज पुत्र ढिग, या संग जाइ लेवाय।
ग्राम त्यागि बन में बसै, सोई बनी कहाय॥

समय आया है अब प्यारो, वानप्रस्थी बनो सब जन।
निकालो वासना सारी, करो एकाग्र अपना मन॥ समय०
उमर का तीसरा यह भाग जब आरम्भ होता है।
तभी संस्कार यह करना औ रहना जाय केहू वन॥ समय०
स्वेत हों बाल जब सिर के पुत्र के पुत्र हो जावे।
औ निर्बल हों चलैं सारी चक्षुरादिक जो इन्द्रीगन॥ समय०
परिश्रम भी न उतना हो जो होता था जवानी में।
दाँत कमजोर हो जावें शिथिल हो जाय सारा तन॥ समय०
विषय की वासना सारी न्यून हो जायँ जिस अवसर।
यह चालिस के उपर जानो उमर पचास को लो गन॥ समय०
पचास औ साठ के ऊपर बली सन्तान नहिं होती।
जो रहता इस समय गृहस्थी लुटाके अपना सारा धन॥ समय०

वह माया मोह में फँसकर पुन: बन्धन में आता है।
न मिलता "इष्ट" है उसको जो जाता काम कीचड़ सन ।। समय०

वानप्रस्थी का कर्तव्य

(१६२)

नित पठन पाठन में लगैं अरु मित्र बनि सबके रहैं।
विद्यादि दान जो देहिं निशिदिन आत्मवित ह्वै सत कहैं ।।
इन्द्रिय दमन करि शील धारैं काहु सों कछु ना चहैं।
निज काज रक्षा करहिं हित सों अरु दया को पथ गहैं ।।

चौपाई

अग्निहोत्र के साधन लेहीं। इन्द्रियजित ह्वै वास करेहीं ।।
वन के कन्दमूल फल खाहीं। इनहीं सों नित अतिथि जेवाहीं ।।
सँग जे नारि रहैं जन केरे। काम हेत नर जाहिं न नेरे ।।
भूमि शयन अरु तरुतर वासा। ममता त्यागहिं अरु जन आसा ।।

वानप्रस्थी की प्रार्थना

(१६३)

प्रभू अब होवे मम कल्यान ।।
ब्रह्मचर्य्य आश्रम में रहकर पाल्यो धर्म महान्।
विद्या पढ़ि इन्द्रीजित ह्वैके, पायो है जगमान ।। प्रभू०
धर्म सहित गृहस्थाश्रम भोग्यो, अरु दीन्हों बहुदान।
मोह लोभ के फन्दन फँसिके, सह्यो अधिक अपमान ।। प्रभू०

नियम सहित संतति उपजाई, लह्यो महा सन्मान।
सब सुख भोगि गृहस्थहिं त्यागेहु जानहिं चतुर सुजान॥ प्रभू०
तुम ही जीवनदाता हो प्रभु सुनहु विनय निज कान।
मन से "इष्ट" भावना सुन्दर जाय न केहू आन॥ प्रभू०

(१६४)

मन तू काहे गुमान करे॥
ना तू नारी नाहिं पुरुष है दोहुन से है परे।
तब इनको सँग काहे करत है लिपटत जाइ गरे॥ मन०
तोहिं नपुंसक कहिके टेरत बुध जन आज खरे।
तब तू निज समान ही काहेन ढूँढ़न यतन करे॥ मन०
या विधि शान्ति मिलै नहिं केहु छिन भरमत जगत् फिरे।
संग समान मिलत सुख सब कहँ हिय बिच नेम धरे॥ मन०
ब्रह्म संग करि शान्ती मिलिहै औगुन सकल हरे।
तुमहुँ नपुंसक ब्रह्म नपुंसक समता "इष्ट" सरे॥ मन०

(१६५)

अन्तःकरन को पवित्र करि आछी भाँति,
विषय भोग वासना की चर्चा बिसारिये।
शांतता अरु धीरता दया की चारु वीरता में,
बनि उत्साही वीर हित चित धारिये।
जगत् प्रपंचन को त्यागि निशकाम ह्वै के,
चेतनसरूप वारी सुखमा पसारिये।

तिमिरि कुवासना में ब्रह्मज्ञान दीप बारि,
"इष्ट" शुद्ध आतमा को नयनन निहारिये ॥

(१९६)

बुरे कामों में मनको लगाओ नहीं।
जाय फँसियो न विषयों में प्यारे कहीं ॥ बुरे कामों में०
समय ऐसा है कि बेकार न जाने दीजै।
काम कोई-न-कोई हर समय ही कीजै ॥
कभी मनको अकेला राखो नहीं। बुरे कामों में०
करने से एकबार के फिर बान पड़ेगी ॥
पड़ने से बान लाज तनिक भी न रहेगी।
अपनी आदत को हरगिज़ बिगाड़ो नहीं ॥ बुरे कामों में०
विश्वास तनिक आपका कोई न करेगा।
बिगड़ा सुभाव फिरके बनाये न बनेगा ॥
बुरी संगति में कबहूँ जाओ नहीं ॥ बुरे कामों में०
नित नेक काम करना सच बोलते रहो तुम।
कल्यान हो इसी में आनन्द पाओगे तुम ॥
अच्छी बातों को "इष्ट" भुलाओ नहीं ॥ बुरे कामों में०

(१९७)

कोउ मनकी गती को पावे नहीं ॥
जागत में यह दूर जात है, सोवतहू यह वैसेहि रही ॥ कोउ०
या मनको यदि रोकै न कोऊ, ह्वै उन्मत यह घूमै मही ॥ कोउ०
मनके बिगड़े पाप सकल हों, जाइ न भूल कही ॥ कोउ०

याते मनके वेग को रोको, जाइ न पावै कहीं ॥ कोउ०
"इष्ट" मिले सब काम सुधरिहैं, हुइ जावै बात कही ॥ कोउ०

(१६८)

करौ सब काम नेकी के कि होवे नाम दुनिया में ।
चलौ तुम चाल फिर ऐसी न हो बदनाम दुनिया में ॥
भलाई नित करौ सबकी भला जो अपना तुम चाहो ।
न करना जुल्म तुम हरगिज़ जो अपनी वेहतरी चाहो ॥
यही दस्तूर दुनिया का जो करता है वह पाता है ।
करो तुम कूच जब याँ से कहो क्या साथ जाता है ॥
बनाओ "इष्ट" सबही को न शत्रू हो सके कोई ।
करो उपकार दुनिया का बिताओ मत समय सोई ॥

(१६६)

मन ना थक्यो आधी रात भई ॥

इन्द्रिय शिथिल भईं सब, मन की अँखियन नींद लई ।
जीव जन्तु सब सोवन लागे, मन की रीति नई ॥ मन ना०
जागत में यह दूर जात है, सोवत स्वप्नमई ।
जगत् ज्योति बिच एक ज्योति प्रभु, ताकी शरण लई ॥ मन ना०
या मनको शुभ करहु दयानिधि, होवै शान्तिमई ।
तुम ही "इष्ट" सदा मम रक्षक, होय न बिपत नई ॥ मन ना०

(२००)

सोवन की बेरिया भई सजनी मन सोवन ना देत ॥

जा मनसों सत् कर्म करहु नित आतम के सुख हेत ।
ते मनीषि बुध पंडित ज्ञानी, यज्ञ करि मोंहि सुख देत ॥ सो०

जो सब प्राणिन भीतर सोहत, अन्तःकरण उद्योत।
ताकहँ शान्त करहु हे भगवन दै सुख दुख हरि लेत ॥ सो०
जा मनमें ऋगवेद बसत है यजु अथर्व सुख लेत।
साम वेद को गान करत हैं सो न फँसे भ्रम खेत ॥ सो०
"इष्ट" मिलन हित चहुँदिशि डोलैं फिरि पर्वत बन रेत।
काहू क्षण तेहि कल ना परत है सपनेहु राखे चेत ॥ सो०

ज्ञान की श्रेष्ठता

(२०१)

ज्ञान बिन नर नहिं होत सुजान ॥
इस भवसागर में सुज्ञान ही है सुन्दर जल-यान ॥ ज्ञान०
केतो कर्म करहु जग भीतर रहिके तुम अज्ञान।
ज्ञान सहित सब कर्म सुफल हों पावत हैं बहुमान ॥ ज्ञान०
कर्म उपासन मुक्ती साधन संग में हो यदि ज्ञान।
ज्ञान रहित बंधन में पड़के भोगत दुःख महान् ॥ ज्ञान०
ज्ञानहिं से बुधि पावन होवै जग पावे सन्मान।
ज्ञान बिना मुक्ती ना मिलिहै है उपनिषद् प्रमान ॥ ज्ञान०
ज्ञानहिं एक राज्य को साधक और प्रजा सुखदान।
ज्ञान बिना सब नष्ट होत है केतो राष्ट्र महान् ॥ ज्ञान०
कितनो जप तप तीरथ करिये कितनो दीजै दान।
ज्ञान बिना फल "इष्ट" न मिलिहै सहिहौ दुःख निदान ॥ ज्ञान०

ओ३म्

१५—संन्यास संस्कार

संन्यासाश्रम में प्रवेश का समय

(२०२)

ब्रह्मचर्य पूर्ण कर गृहस्थी जो बनै जग आइके।
कारिके समाप्त गृहस्थ विधिसों बसै बन में जाइके॥
तहँ बानप्रस्थी वन के बैठे एक प्रभु के आसरे।
पुनि लेहि सो संन्यास प्राणी "इष्ट" अपनो उरधरे॥

(२०३)

जो पुरुष क्रमशः लहैं आश्रम मोह को त्यागन करैं।
हैं श्रेष्ठ वह इस जगत में अपनी प्रतिज्ञा उर धरैं॥
वैराग्य होवे "इष्ट" जिनके जौन त्तण जेहि काल में।
ताही समय सन्यास धारैं नहिं फँसैं केहु जाल में॥

(२०४)

पूर्ण ब्रह्मचर्य और पूर्ण वैराग्य बान,
पूर्ण हो ज्ञान विज्ञान जौन नर में।
इच्छा विषय शक्ती की न लेश रहे मन के माँहि,
धरै उपकार करिवे की बान उर में।
पथा विधि आत्मा को जानि पत्त पात त्यागि,
योग का अभ्यास करिवे को होय मन में।

ऐसो जब भाव होवै तबही प्रवेश करै,
लेवे संन्यास "इष्ट" कोई सी उम्र में।

संन्यासी को चेतावनी

(२०५)

जगत् ईश उपदेश देता सबन को।
सुझा देता हित की सदा ही स्वजन को॥ जगत् ईश०
उसीके सहारे मनुज जौन रहता।
सम्हारे रहे इन्द्रियाँ और मन को॥ जगत् ईश०
वह पाता सदा सुःख आनन्दकारी।
न होवे कोई भी कभी दुःख तन को॥ जगत् ईश०
प्रभू के भरोसे प्रतिज्ञा जो करता।
करो आत्म उन्नत सुनाया सबन को॥ जगत् ईश०
ले संन्यास भरमन करो सब जगत् में।
करो ध्वंस तुम कामनाओं के बन को॥ जगत् ईश०
करै वृत्त[1] का नाश इन्द्रादि[2] जैसे।
करै सोम रस पान पालै बचन को॥ जगत् ईश०
जो बुद्धी के अनुकूल हो सोइ कीजै।
बनो ब्रह्मचारी सुधारो चलन को॥ जगत् ईश०
करो शुद्ध पावन दे उपदेश सबको।
बनाओ बली सत्य अन्तःकरन को॥ जगत् ईश०

१—बादल (मेघ)। २—सूरज।

सुधारो सदा इन्द्रि, मन, बुद्धि अपनी।
बनो प्राणायामी धरो हिय यतन को ॥ जगत् ईश०
तजो पक्षपात "इष्ट" सबके बनो तुम।
करो नाहिं लालच चहो नाहिं धन को ॥ जगत् ईश०

(२०६)

हैं सत्यधन सद्कीर्तिवाले जो यती संसार में।
प्रीति सारे देश सँगकर मन रंगैं आचार में॥
ते प्रीति पूर्वक योग का अभ्यास निशि-वासर करैं।
हिय शुद्ध भाव बनावहीं उपकार मनके विच धरैं॥
राखैं न हिय में द्वेष कछु अति प्रिय वचन सबसे कहें।
कबहूँ न चाहैं मान को अपिमान हो सोऊ सहें॥
स्वातन्त्रतायुत वचन बोलैं भय न कछु उर विच धरैं।
ब्रह्मचर्य्य की जानैं बड़ाई आत्म उन्नति नित करैं॥
संन्यास लेवैं जगत् में विद्वान् ब्राह्मण सदृश हो।
ऐसे चलैं संसार में कबहूँ न कोई अयश हो॥
नित प्रीति सबही सों करैं पर मोह मन में ना धरैं।
प्रिय "इष्ट" प्राप्ती हेत योगाभ्यास की विधि को करैं॥

मन का परिवार

(२०७)

मन तेरी दुइ हैं पटरानी॥
एक प्रवृत्ती एक निवृत्तीं दोऊ हैं गुनमानी॥ मन०

आठ पुत्र परवृत्ति उपजाये एक सुता सुखदानी।
ब्याह कर्यो तिन सबको सुन्दर निज-निज गुन अनुमानी ॥ मन०
मोह काम अरु क्रोध लोभ पुनि दम्भ गरव अभिमानी।
मद अधर्म सुत आठ लखहु यह, असत्-वासना पुत्रि सयानी ॥मन०
नारि निवृती से सुत उपजे आठ महा गुनखानी।
यक कन्या उपजी अति सुन्दर ब्रह्मा की वरदानी ॥ मन०
वस्तु विचार, विवेक औ धीरज है सन्तोष प्रमानी।
सुमति, शील वैराग्य धरम सुत भक्ति सुता हित जानी ॥ मन०
दुइ नारिन गति जौन होत है सोई मन अनुमानी।
यक छण स्थिर रहि न सकत है घूमत जिमि सैलानी ॥ मन०
पार होत नहिं भवसागर से दुइ नावन चढ़ि प्रानी।
"इष्ट" चहौ सुख यक संग करिये दुइके बुधिवर ज्ञानी ॥ मन०

(२०८)

महा मोह मिथ्या संग कीन्हों जौन छण माँहि,
भयो पैदा अहंकार पूत दुखदाई है।
ताकी नारी ममता फँसावै नर नारिन को,
छूटत न काहु बिधि यहाँ पर आई है।
काम रति प्रेम कीन्हों लालच सुवन भयो,
लोलुपता वधु तेहि नेह करि पाई है।
क्रोध और हिंसा नेह केर अविचार भयो,
"इष्ट" को भुलाइबे को भूल वधू आई है॥

(२०९)

लोभ केरी नारी तृष्णा ताको सुत पाप भयो,
चिन्ता पाप को है नारी हिये को जलाती है ।
दम्भप्रिया आसा तासु सुत पाखंड भयो,
वधू है, अविद्या सब जनन भुलाती है ।
निन्दा नारी गर्व केरी अपयश पूत जन्यो,
वधू अपकीरति अज्ञानिन बनाती है ।
इर्षा नारो मद की विरोधही सुवन भयो,
वधू है स्पर्धा 'इष्ट' बुधि को भ्रमाती है ॥

(२१०)

वासना को व्याहि दीन्हो अज्ञान के संग साँहि,
जौन सुत अदया को कहत बखानी है ।
ताको परिवार बहुतेरो जग लखि परै,
कहाँ लौं बखान करौं स्मृति भुलानी है ।
संशय और आलस विक्षेप नींद रजतम,
कपट अनर्थ ताप तीनहू प्रमानी है
थंत्र मंत्र नाना रोग नाटक प्रपंच घने
"इष्ट" के भुलाइबे को अधिक निशानो है ॥

(२११)

नृपति विवेक ने सुविद्या केर संग कियो,
ज्ञान सुत जाय आनन्द वधू पाई है ।

जबहि विचार केरो निश्चय संग प्रेम भयो,
नेम पायो पूत वधू दृढ़ता लखाई है ।
धीरज औ क्षमा ते उत्पन्न भयो आर्य्यत्व,
"इष्ट" बहू प्यारी एक मुदिता जनाई है ।
सन्तोष और तृप्ती के ही प्रीति से अनन्द भयो,
वधू भई करुणा आनन्द मन भाई है

(२१२)

सत्य और साधन मिलन ते निष्काम भयो,
जिज्ञासा बहू आय कीरति बढ़ाई है ।
नारी लज्जा शील केरी उपज्यो सुयश पूत,
कीरति वधू ताकी चतुर लखाई है ।
श्रद्धा धर्म सुता उपजाई सत वासना,
प्रकाश भयो पूत बहू साधना जनाई है ।
वैराग्य उदासीनता के संग ते अभ्यास भयो,
बधू है निराशता सों "इष्ट" लखि पाई है

(२१३)

वीर सुत आठ अभ्यास के प्रवीन भये,
विषय औ विकार किला नाशबे को बाँके हैं ।
यम, नेम, आसन औ प्राणायाम, प्रत्याहार,
धारणा औ ध्यान समाधी वीर बाँके हैं ॥
भग्नी भक्ति प्यारी को विवाहि प्रेम संग दीन्हीं,
नव सुत सुयश सुशील भये ताके हैं ।

निवृत्ती को नेह बढ्यो सुता नाती पुत्रन संग,
"इष्ट" आठ सेवक बलवान पुत्र माँ के हैं ॥

अब आगे सुनो मन महाराज का स्नेह प्रवृत्ति से ही विशेष रहता था। एक दिन अकस्मात श्रवण-कीर्तनादि पुत्रों सहित भक्ति से भेट होगई। एक नया आनन्द मन महाराज को प्राप्त हुआ, तब भक्ति ने अपनी माता निवृत्ती से भेंट कराई। मन महराज सुख की आशा में निमग्न हो गये तब प्रवृत्ती को अत्यन्त दुख हुआ, उसने अपने मोहादि पुत्रों से प्रार्थना की उन्होंने विचार किया कि यदि मलिन-वासना-रूपी रोग में मन महाराज ग्रस्त हो जावें तो फिर छूटना कठिन हो जावेगा। तदनन्तर लालच काम, असद्-वासना यह बाट देखते रहे कि जिस समय कीर्तन और वैराग्य न हों (अस्तु, जो पीछे लग जाता है करके ही छोड़ता है)। एक दिन अकेली भक्ति मन के समीप थी लालच पहुँच गया और रूप, रस, गन्धादि पंच विषयों का प्रलोभन दिया। असद्वासना ने समय पाकर अपना काम किया। सब आत्मज्ञान भूल गया। काम ने धर दबाया। सारे भोगों में अभिरुचि होगई।

ऐसी अवस्था में प्रवृत्ति के सन्तानों में काम को जीतनेवाला एक वस्तु विचार ही है। परंतु अकेला वह भी असमर्थ है जब तक साथ में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य न हो, काम को पराजित करना कठिन है। बड़े-बड़े व्यक्तियों को इस काम ने अपने जाल में फँसाया। जो वस्तु-विचार के इन वाक्यों को स्मरण रखता है, सम्भव है कि वह बच जावे।

वस्तु-विचार का वाक्य

(२१४)

अस्थि को पींजरा चाम सों लपेट दीन्हों,
चादर रंगी ऊपर भीतर मूत्र मल सानी है।
नंगी करि देखै तो तनिकहु न सुन्दर लागै,
सामुहेई प्रकट पिशाचिनी लखानी है।
जौन अंगन गुण आज हैं बखाने जात,
दीन्हों है छिपाइ भूषन बसन अजानी है।
महा अज्ञानी फँसि जात हैं ऊपर देखि,
यह तो विचारो "इष्ट" महा मलन खानी है।

किससे किसकी विजय होती है

(२१५)

मिथ्या को जीत लेत एक ही बार सत्य,
हिंसा को जीतत दया क्षण में लखाई है।
अधरम के सामने सुधर्म ही विजय पावे,
आलस को जीति अभ्यास लेत भाई है।
शौच के प्रभाव से अशुद्धता विलाइ जात,
वक्रता पर पावत विजय शीलता लखाई है।
जग में कपट सप्त ही सों जीतो जात,
"इष्ट" अहंकार ज्ञान जीतत सदाई है।

(२१६)

ज्ञान के उदय भये विषय-तम नाश होत,
राग द्वैष नशत वैराग्य मन लायेते।
असत्-संग दूरि होत जबहीं सतसंग करै,
व्याकुलता दूरि होत धीरज मन आयेते।
चित्त-विक्षेप पर अभ्यास ही विजय पावे,
साथ में ही प्रत्याहार विजय शक्ति लायेते।
व्याकुलता को धीरज ही जीति लेत क्षण मांहि,
"इष्ट" क्षुधा नाश होत प्राणायाम भायेते।

(२१७)

शूल को मुदिता नशावे मीठी बात कहि,
संशय जात एकता जगत् में बनायेते।
कामना को नाश होत ब्रह्म के विचार किये,
नाश होत चिन्ता वैराग्य मन आयेते।
रोग सब दूरि होत संयम कियेते "इष्ट",
शोक को इलाज प्रारब्ध चित लायेते।
काम और लालच विचार से ही दूरि होत,
ज्ञान युक्त कर्म निशि द्योस करि पायेते।

प्रार्थना

(२१८)

अविद्यादि क्लेशों के हो नाशकारी।
पवित्रात्मा सर्व कर्माधिकारी ॥

तुम्हीं सर्व आनन्द भंडार दाता।
निरन्तर हो तुमही जगत् के विधाता ।।

जनम औ मरण के न बन्धन में आते।
कभी नाश होते न आते न जाते ।।

हमारी विनय को हिये बीच धारो।
दया दृष्टि से "इष्ट" सेवक निहारो ।।

(२१६)

बनै जग द्विज संन्यासी खरे ।।

पुत्रेष्णा बित्रेष्णा त्यागै मन ना लोभ करे ।
लोकेष्णा को दूर भगावे हिय बिच ब्रह्म धरे ।। बनै०

जो इषणन को त्यागि सकै ना ले संन्यास हरे ।
वह निन्दित होवे जग भीतर सहि अपिमान मरे ।। बनै०

केवल वेद प्रचार कर्म हो निशदिन भ्रमन करे ।
संस्थापति बन कर मति बैठै जग उपकार करे ।। बनै०

गृह, धन त्यागि विराग भयो जब हिय उपदेश भरे
पुनि लोभी बनि धन हित घूमत झोली डाले गरे ।। बनै०

संन्यासी को गुन यह जानहु सब कुछ त्याग करे ।
ब्रह्म प्राप्ति ही "इष्ट" निहारे उर बिच नेम धरे ।। बन०

ओ३म्

१६—अंत्येष्टि संस्कार

(२२०)

हे जीव तेरी कर्म के अनुकूल सुन्दर भावना।
प्राप्त होवे "इष्ट" फल यामें तनिक संदेह ना॥
चक्षुरादिक इन्द्रियों के कर्म निज निज शक्ति में।
जाय मिलि सब भाँति सों यह जीव ईश्वर भक्ति में॥

शोक है किस भाँति का यह तन यहीं रह जायगा।
नाश हो उत्पन्न हो पुनि नाश ही फल पायगा॥
है अजन्मा जीव उसका नाश नहिं होवे कदा।
संग ही दुख सु:ख भोगै पुनि न संग रहता सदा॥

(२२१)

हे प्रभो इस जीव का जो तन यहां रह जायगा।
अग्नि में घृत आदि के संग यह सभी जल जायगा॥
जीव की रक्षा करौ तुम उसको अपना जानकर।
कर्म के अनुकूल फिर भी यह शरीर प्रदानकर॥

हे प्रभो जिस मार्ग पर हो पूर्व जन जाते रहें।
श्रेष्ठ मारग पर गमन करने में कुछ दुख ना सहें॥

मोक्ष का ही "इष्ट" मारग हमका सुखदाई स... ।
जन्म औ मर्णादि बन्धन से छोड़ाओ स... ॥

(२२२)

संग तुम्हारे धरम ही जैहैं ।

ना घर जेवर कपड़ा जैहै, सबही गड़ो रहिजैहै ॥ धरम०
जेते पशू अरु मोटर गाड़ी, संग न कोई जैहैं ॥ धरम०
प्यारी नारी रोवति रोवति, घर के द्वार लौं ऐहै ॥ धरम०
"इष्ट" कुटुम्बी जेते तुम्हारे, मरघट लौं संग जैहै ॥ धरम०
ताते समुझि यह धर्म न छोड़ौ, धर्महि तुम्हें बचैहै ॥ धरम०

(२२३)

जगत् में दो दिन के महिमान ॥

माया मोह ममता को त्यागो करौ ओ३म् का ध्यान ।
सर पर मौत खड़ी हर्षावे करलो कछु पुन्न दान ॥ जगत०
कामक्रोध छल कपट को त्यागो तजो मित्र अपमान ।
व्यर्थ न खोवो इस नर तन को कर लो कछु सामान ॥ जगत०
भाई बन्धु अरु कटुम्ब कबीला मित्र त्रिया संतान ।
साथ न देगा अन्त में कोई जिन पर बड़ा गुमान ॥ जगत०
धन दौलत अरु माल खज़ाना हाथी तुरँग विमान ।
सारे यहीं पड़े रहि जावें जब निकलैंगे प्रान ॥ जगत०
अब भी फिक्र लगी है तुमको त्यागौ नहिं अभिमान ।
"इष्ट" प्रभू के शरण में आजा यदि चाहो कल्यान ॥ जगत०

समाप्त